॥ श्री ॥

ब्रजबिहार

जिसको

श्रीराधाकृष्ण चरणारविंदानुगामी मथुरा निवासी पं० रंगीलाल शर्म्माने हरि-भक्तों व रसिकजनों के आनंदार्थ संग्रह किया.

उसीको

लाला श्यामलाल अग्रवालने

मुंबई

टाईप से विभूषित और

श्यामकाशी प्रेस मथुरा में

छपवाकर प्रसिद्ध किया

दसवीं बार

संवत् १९६८ शके १८३३.

❋ लीलाओं का सूचीपत्र ❋

सूचीपत्र समाप्तम् ॥

अथ नन्दकुमाराष्टक प्रारम्भ ॥

सुन्दरगोपालं उरवनमालं ।
नयनरसालं दुःखहरं ॥
वृन्दाबनचन्दं आनँदकन्द ।
परमानन्दं धरणिधरं ॥ ० ॥
वल्लभघनश्यामं पूरणकामं ।
अतिअभिरामं प्रीतिकरं ॥
भजनन्दकुमारं सबसुखसारं ।
तत्वविचारं ब्रह्मपरं ॥ १ ॥
वारिजवदनं निर्जितमदनं ।
आनन्दसदनं मुकुटधरं ॥
गुंजाकृतहारं विपिनबिहारं ।
परमोदारं चीरहरं ॥ ० ॥
वल्लभपटपीतं कृतउपवीतं
करनवनीतं विबुधवरं ॥
भजनन्दकुमारं सबसुखसारं ।
तत्वबिचारं ब्रह्मपरं ॥ २ ॥
शोभितसुखमूलं यमुनाकूलं ।
निपटअतूलं सुखदतरं ॥
मुखमण्डितरेणुं चारितधेनुं ।
बाजतवेणुं मधुरसुरं ॥ ० ॥
वल्लभअतिविमलं शुभपदकमलं ।

नखरुचअमलं तिमिरहरं ॥
भजनन्दकुमारं सबसुखसारं।
तत्वविचारं ब्रह्मपरं ॥ ३ ॥
सिरमुकुटसुदेशं कुंचितकेशं ।
नटवरबेषं कामवरं ॥
मायाकृतमनुजं हलधरअनुजं।
प्रतिहतिदनुजं भारहरं ॥
वल्लभबृजपालं शुभगसुचालं ।
हितअनुकालं भाववरं ॥
भजनन्दकुमारं सबसुखसारं ।
तत्वविचारं ब्रह्मपरं ॥ ४ ॥
इन्दीवरभाषं प्रगटसुरासं ।
कुसुमविकाशं वन्शीधरं ॥
हतमनमथमानं रूपनिधानं ।
कृतकलिगानं चित्तहरं ॥
बल्लभमृदुहासं कुंजनिवासं ।
बिबिधबिलासं केलिकरं ॥
भजनन्दकुमारं सबसुखसारं ।
तत्वविचारं ब्रह्मपरं ॥ ५ ॥
अतिपरमप्रवीणं पालितदीनं ॥
भक्ताधीनं कर्मकरं ॥
मोहनमतिधीरं अतिबलबीरं ।
हुतपरबीरं तरलतरं ॥

वल्लभब्रजरमनं वारिजवदनं ।
जलधरशमनं शैलधरं ॥
भजनन्दकुमारं सबसुखसारं ।
तत्वविचारं ब्रह्मपरं ॥ ६ ॥
जलधरद्युतिअंगं ललितत्रिभंगं ।
बहुकृतरंगं रसिकवरं ॥
गोकुलपरिवारं मदनाकारं ।
कुंजविहारं गूढनरं ॥
वल्लभब्रजचन्दं सुभगसुछन्दं ।
कृतआनन्दं भ्रांतिहरं ॥
भजनन्दकुमारं सबसुखसारं ।
तत्वविचारं ब्रह्मपरं ॥ ७ ॥
वन्दिययुगचरणं पावनकरणं ।
जगदुद्धरणं विमलधरं ॥
कालियशरगमनं कृतफणिनमनं ।
घातितयमनं मृदुलतरं ॥
वल्लभदुतिहरणं निर्मलचरणं ।
अशरणशरणं मुक्तितरं ॥
भजनन्दकुमारं सबसुखसारं ।
तत्वविचारं ब्रह्मपरं ॥ ८ ॥

दोहा ।

कलियुय समयुग आननाहिं जो नर कर विश्वास ॥
गायश्यामगुण गणविमल भवतर बिनाहिंप्रयास ॥

श्रीगणेशायनमः ।

* अथ ब्रजबिहार *

पण्डित रंगीलाल कृत

मंगलाचरण ।

दोहा ।

जय गिरिजा मातंग मुख, लम्बोदर गुण खान ॥
रंगीलाल की कामना, सिद्ध करिय जन जान ॥
अघ मतंगके हरनको, हरि समान हरि नाम ॥
रंगीलाल गावत सोई, ब्रजबिहार सुख धाम ॥
यसुदा सुतके भजन ते, वसुधा सुत दिनरात ॥
रंगीलाल ज्यों रविउदय, निशिको तिमिरनशात ॥

स्तुति ।

कृत चन्द्र मौलि विशाल लोचन दशन एक गजाननं ॥ कर चतुर चारु स्थूल उर शुभ पुज्य शिव चतुराननं । भव आदि लंबोदर विदित सुर मोद मंगल दायकं ॥ १ ॥ जिन सदन तज जिन जो लीनों भजन हित बनको गये । सो प्रथम पुज्य मनाय गणपति सुफल तप तिनके भये । नित अगम निगम पुराण भाषत शेष शारद गा-

यक ॥ जय गौरि नंदन भालचंदन कृपा कंद वि-
नायकं ॥ २ ॥ नर असुर सुरसह नाग किन्नर स-
कल चेतन मान हीं ॥ जन विघ्न हरणक्लेश नाशन
दीन हित सब लायकं ॥ जय गौरि नन्दन भाल-
चन्दन कृपा कन्द विनायकं ॥ कर रंगीलाल भ-
रोस राउर करि कृपा सुख दायनी ॥ श्रीनन्द नंद
युगांघ्रिरज रति देउ दृढ अन पावनी ॥ अभि-
लाष यह हरि गुण कहौं गणनाथ होउ सहायकं ॥
जय गौरि नन्दन भाल चन्दन कृपा कन्द वि-
नायकं ॥४॥

अथ रासकी रीतिं ।

ताथेई ताथेई ताताथेई ताता थेई थेई थेई ताता
थेई ताता ताताथेई तातातथेई ताथेईया थेई
थेई ततथा थेई ततथा थेई तथेई तथेई ताताता-
थेइया ॥

लालजी बचन ।

अरे ताथेई अरे ताथेई थेई थेई थेई थैया ता
थेई थेई थैया ॥

राधाजी बचन ।

दोहा ।

मैं बेटी वृषभानकी, राधा मेरो नाम ॥
तीन लोकमें गाइये, बरषानों मेरो गाम ॥

लालजी बचन।

राधा मेरी लाडली, मेरी ओर तू देख ॥
तैं तोहिं राखूं नयनमें, काजर कीसी रेख ॥

ललिता बचन।

आवो प्यारे मोहना, पलकझांपतोहिं लेउं ॥
नामैं देखं और को, ना तोहिं देखन देउं ॥

विशाखा बचन।

एरे कुटिल अहीरके, नेक पीर पहिचान ॥
तेरे दरशन कारने, छोड़ दई कुल कान ॥

लालजी बचन।

राधाजीके वदन पै, बेंदी अति छबि देत ॥
मानों फूली केतकी, भंवर बासना लेत ॥

राधाजी बचन।

मेरे प्यारे मोहना, मोमन गयो समाय ॥
तेरो मुख देखे विना, मोहिं न कछु सुहाय ॥

ललिता बचन।

मोहन तू मोमन बस्यो, हिरदे रह्योसमाय ॥
ज्यों मेंहदीके पातमें, लाली लखी न जाय ॥

विशाखा बचन।

मेरे प्यारे मोहना, वंशीनेक बजाय ॥
तेरी वंशी मन हर्‌यो, घर अंगना न सुहाय ॥

लालजी बचन ।

राधा मेरी लाडली, मेरे प्राण अधार ॥
मेरी ओर निहारिये, मुखसों अंचल टार ॥

राधाजी बचन ।

मोर मुकुटकी लटकपर, अटक रहे दृग मोर ॥
वंशी वारो मन वस्यो, जैसे चन्द्र चकोर ॥

इति नृत्यसम्पूर्णम् ।

अथ श्रीकृष्णकी बधाई

रेखता ।

निगम जिहिं ब्रह्म कहि गावै सोई ब्रजराजके आयो । सलोंनो मेघ सम ढोटा अनोखो नंद सुत जायो । शेष सनकादि शिव ब्रह्मा निरंतर ध्यान हरि ध्यायो ॥ लियो सोइ अंक ब्रजरानी अमित आनंद उर छायो । खडो सिंह पौर नंद बाबा सबै ब्रज गोप गृह लायो । महीसुर पूज गण गौरी बहुरि कुल कर्म करवायो । दियो द्विज देव अनुशासन यथा विध लाल अन्हवायो। धरणि ब्रज हरि विलासनको भवन वैकुण्ठ तजि आयो ॥

राग पर्ज ।

ब्रजमें बाजत आज बधाई । नंद रानी सुन्दर सुत जायो सब काहू सुनि पाई । गाम गाम की सब बिधु वदनी नख सिख ते बनि आई । हरख

हरष हिय देत बधावा याचक करत बड़ाई। भेरी शंख दुंदुभी बाजत राग रागनी गाई॥ रंगीलाल मन मुदित अमरगण गगन सुमन झर लाई॥

राग विहाग।

नंद घर वेगि चलो अब वीर। यशुमति लाल अनोखो जायो घन सम श्याम शरीर। करि शृंगार सकल ब्रज वनिता अंग अंग भूषण चीर। आई मुदित सदन ब्रज पतिके कर लीने दधि क्षीर॥ दे दे ताल ग्वाल गण नाचत गान करत गंभीर। धर द्विज रूप देव गण आये सिंह पौर-पर भीर। तारन मरकत चौक जलज मणि हेम कलशभर नीर। रंगीलाल सब हरष अशीसें ब्रज नर नारि अहीर॥

अथ वृषभान उत्सव लीला

दोहा।

निज बिहार हित रमापति, दूजो तिय तनधार॥
प्रगट भये वृषभानगृह, सो दामिन उनहार॥

पद।

सखीरी आज मुदित वृषभान। तड़ित प्रभा सम तनया जाई कीरत भाग निधान॥ महि सुर वृंद २ चलि आये बुध गण ज्ञान सु-

ज्ञान । कदली पूग कलश चामी कर तोरण तरन वितान । नारि समूह सुमंगल गावत कौकिल कंठ समान । बहु दधि कीचमची वीथिनमें करहिं ग्वालनी गान । कवि मागध सूतादि आय सब कुल यश करत बखान । रंगीलाल शुभ नाम राधिका वरणत वेद पुरान ॥

अथ बाललीला

दोहा ।

प्रात समय सब ब्रज बधू, श्याम दरशके हेत ॥
पट भूषण शृंगारकर, आवत नंद निकेत ॥

राग खट ।

शामरो सलोनों प्यारो परम दुलारो वारो हुलसि झुलावै नंद रानी सोइ पालना । शेष हू न पावें भेद नेति नेति गावें वेद ताहि लै खिलावें हुलसावें ब्रज ग्वालना । करन कडूला राजें नूपुर पगन बाजें मुकता बुलाक साजें श्रवण मोती हालना । हरिको विलास गायो गोपिन सुहाग पायो माखन दिखायके बुलावें लेउ लालना ॥

राग बिहाग ।

यशोदा पूरण भाग निधान ॥ देख देख सुत चरित मनोहर आनन्द उर न समान । कबहू वान

कृपाण गहत हरि कबहू वृषभ बिषान । कबहू हरि मुख देत आंगुरी परसत कबहु कृपान। अति आतुर जननी उठि धावत बरबस पकरतपान। हरि बिलास द्विज बोल पठावत सुतहित देतसुदान ॥

अथ महादेव लीला

समाजी बचन।

दोहा।

शिव मन परम आनन्दहै, है नन्दी असबार ॥
कृष्ण दरश हेत ब्रज, आये नन्द दुआर ॥
बीथिनमें बिचरत फिरत, है मन परम अनंद ॥
जाय तहां ठाढे भये, जहँ प्रगटे नँद नन्द ॥

यशोदा बचन।

राग जोगिया।

जोगिया भोर भये ब्रज आवै ॥ लीनें बैल गेलमें डोलै शैल निवास बतावै। जटली गंग भुजंग लिपट सिर बालक वृन्द डरावै। केहरि छाल माल मुंडनउर भाल मयंक सुहावै । नैन तीन तन भस्म लगाये नीलकंठ छवि पावै । कर डमरू त्रिशूल विराजे सींगी नाद बजावै । पूछत फिरत नन्दको मन्दिर मोहन गुणगण गावै । हरि विलास हर हरि दर्शन हित अपनों नाम छिपावै ॥

महादेवजी बचन दोहा ।

करत आस अति दूरते, आयो या ब्रज धाम ॥
कृष्ण दरशकी लालसा, यह मम पूरण काम ॥
मुखडा अपने लालका, दीजे मोहि दिखाय ॥
रंगीलाल मम कामना, आज सुफलहू जाय ॥

राग भैरव ।

मैं जोगी जस गायारे बाबा मैं जोगी जस गाया । तेरे सुतके दरशन कारण मैं काशी से आया । परब्रह्म पूरण पुरुषोतम सकल लोक यश गाया । अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिर आया । धनि तव भाग यशोदारानी जिन ऐसा सुत पाया । गुनन बडे छोटे मत भूलो अलखरूप धरआया । जो भावेसो लीजे रावरकरो आपनी दाया । देउ असीस मेरे बालकको अवि चल बाढै काया । नामैं लैहों पाट पटंबर नामैं कंचन माया । मुख देखों तब बालकका यह मेरो गुरू बताया । कर जोरे विनवे नंदरानी सुनि यो-गिनके राया । मुख देखन नादेहों रावर बालक जात डराया । काला पीला गोर रूप है वाघंबर ओढाया । कहूं डायनकी दृष्टि लगे कहुं बालक जात दिठाया । तीन लोकका साहव मेरा तेरे

भवन छिपाया ॥ कृष्णलालको लाई यशोदा कर आंचल मुख छाया ॥ कर पसार चरणन रज लीनी सींगीनाद बजाया ॥ अलख अलख कर पाय छुये हैं हँस बालक मुसकाया ॥ पांच वार परिकम्र्मा करके अति आनन्द बढ़ाया ॥ हरिकी लीला हरि मन अटकौ चित नहिं चलत चलाया ॥ अखिल भुवनके नायक कहिये नन्द भवन प्रगटाया ॥ इन्द्र चन्द्र सूरज सनकादिक सारद पार न पाया ॥ श्रवणलागि जब मन्त्र सुनाया हँस बालक किलकाया ॥ कौनदेशके योगी हो तुम कौन नाम धर वाया ॥ कहां बास यह कहै यशोदा सुनि योगिनके राया ॥ तुमही ब्रह्मा तुमही विष्णु तुमही ईश कहाया ॥ तुम विश्वम्भर तुम जग पालक तुमही करत सहाया ॥ सूरश्याम कहैं सुनोयशोदा शङ्कर नाम बताया ॥

सखी बचन ॥

राग भैरव ।

नन्दद्वार एक जोगी आयो। सींगीनाद बजायो ॥ शीश जटा शशिबदन सुहायो अरुण नयन छवि छायो ॥ देखतरीझि कृष्ण सामरो रहत नहीं हुलरायो ॥ लियो उठाय गोद नन्द रानी द्वारे ज़ाय

दिखायो ॥ अलख अलख कर लियो गोदमें चरण चूम उर लायो ॥ श्रवण लाग कछु मन्त्र सुनायो हंस बालक मुसकायो ॥ चिरजीवो सुत महर तिहारो हौं योगी सुख पायो ॥ सूरदास रम चलो रावरो शङ्कर नाम बतायो ॥

राग भैरव ॥

चलिये योगी नन्द भवनमें यशुमति तोहिं बुलावै ॥ लटकत लटकत शङ्कर आये मनमें मोद बढावै ॥ नन्द भवनमें आयो योगी राई नोंन कर लीनों ॥ वार फेरि लालाके ऊपर हाथ शीशपर दीनों ॥ व्यथा भई सब दूर बदनकी किलक उठे नंद लाला ॥ खुशी भई नन्दजूकी रानी दीनी मो-तिन माला ॥ रहिये योगी नन्दभवनमें ब्रजमें बासा कीजे ॥ जब जब मेरो लाला रोवै तब तब दर्शन दीजे ॥ तुम तो योगी परम मनोहर तुमको वेद बखानें ॥ बूढ़ो बाबा नाम हमारो सूर श्याम मोय जानें ॥

दोहा ।

यह लीला घनश्यामकी, पढ़ै सुनें चित लाय ॥
रंगीलाल भव सिन्धुते, तुरत पार ह्वै जाय ॥

अथ यमलार्जुनलीला ॥

दोहा।

शेष सुरेश विरंचि शिव, डरपत जाके त्रास ॥
ताको बांध्यौ नँद वधु, सुनों तासु इतिहास ॥
एक समय नँदकी बधू, प्रातकाल उठिधाय ॥
दही विलोवत मगन मन, आनंद उर न समाय ॥

रागकाफी

यशुमति करत दधि मथान ॥ अंक में निज लाल लीने पय करावत पान ॥ सूनु तज उठ गइ यशोदा दूध उफनत जान ॥ मांट इत हरि भंग कीनों लगे माखन खान ॥ नन्द नारि सकोप धाई लख्यो कौतुक कान ॥ दाम ऊखल उदर बांध्यो मान गोरस हान ॥ जासु डर सुर लोग कांपत सुरा सुर बलवान ॥ रंगीलाल दयाल सोई भक्त वस भगवान ॥

दोहा।

इतै श्याम सोवत उठे, अंखियां अरुण विशाल ॥
रोवत सुत यशुदा निरख, उर लाई नन्द लाल ॥
पयप्यावत दधि मथतमें, करकर अतिहि विनोद ॥
नन्दरानी मनमें मगन, लियें लाल को गोद ॥
पयको उफनत देख के, नन्दरानी घबराय ॥

त्याग गोदते श्यामको, चली उतारन धाय ॥
तब नन्दलाल सकोप ह्वै, मांट दीयो ढरकाय ॥
माखन मांट बहाय के, गये बाहर को धाय ॥
तब नन्द रानी आय कर, देख्यो सुतको हाल ॥
क्रोध विवश पकरन चली, करके लोचन लाल ॥

यसोदा वचन ।

राग बिलावल ।

ऐसी रिसमें जो धर पाऊं ॥ कैसे हाल करूं धरि हरिके तुमको प्रगट दिखाऊं ॥ सांटी लिये हाथ नन्दरानी थरथरात सब गात ॥ मारे बिना आज जो छाडों लागे मेरे तात ॥ इहिं अन्तर ग्वालिन इक औरें पकर बांह हरि लावत ॥ भली महर सूधो सुतजायो चोली हार बनावत ॥ रिसमें रिस अतिही उपजाई जानि जननि अभिलाख ॥ सूर श्याम भुज गहै यशोदा अब बांधो कहि भाख ॥

दोहा ॥

नेती लै नंदकी वधू, बांधत कर गोपाल ॥
होय गांठ पूरी नहीं, रच्यो कृष्णने ख्याल ॥

समाजी वचन ॥

राग धनाश्री ।

यशुमति रिस कर रज्जु अकरषे ॥ सुतहि देख क्रोध मातासे मनही मन अति हरषे ॥ उफनत

क्षीर जननि कर दुचती यह विधि भुजा छुड़ाई ॥ भाजन फोर दही सब डारो माखन मुख लिपटाई ॥ लै आई जेवरि अब बांधो मरम जान न बंधावे ॥ आंगुर द्वै घटि होत सबन सों पुनि पुनि और मंगावे ॥ नारद शाप भये यमलार्जुन इनको अब जो उधारों ॥ सूरदास प्रभु कहत भक्तहित जनम जनम तन धारों ॥

यसोदा वचन ।

राग बिलावल ।

बांधो आज कवन तोहि छोरे ॥ बहुत लंगरई कीनी मोसों भुज गहि रजु ऊखलसों जोरे ॥ जननी अति रिस जान बंधाये चितै बदन लोचन जल ढोरे ॥ यह सुनि ब्रज युवतीं सब धाईं कहत कान्ह अब क्यों नहिं चोरै ॥ ऊखलसों गहिबांध यशोदा मारनको सांटी कर दोरे ॥ सांटी देख सखी पछ-तानी विकल भई मुख मोरे ॥ सुनों महर ऐसी न बूझिये सुत बांधत माखन दधि थोरे ॥ सूरश्याम को बहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरे ॥

दोहा ॥

हरि बन्धन सुनि गोपिका, हृदयउठीं अकुलाय ।
आय यशोमतिके निकट, कहनलगीं समझाय ॥

सखी वचन ॥

राग पर्ज ॥

अब निठुराई तजो व्रजरानी ॥ ऐसो लाल बांधवे लायक द्युति आनन कुह्मलानी ॥ भाग बड़े विधि दयो एक सुत पूजत शम्भु भवानी ॥ ताको उदर दामते बांध्यो करुणा किते हिरानी ॥ नित नव नीत खात हरि हमरो कबहुं न हम अल-सानी ॥ कोटन माट निछावर कीजे सुत हित समझ सयानी ॥ हरि विलास सुनि नेक न मानी गोप वधुनकी बानी ॥

द्वितीय सखीवचन ।

पद ।

यशोदा तेरो मुख हरि जोवै ॥ कमल नयन हरि हिचकिन रोवै बन्धन छोर जसोवे ॥ जो तेरो सुत खरो अचपलो अपनी कोखको जायो ॥ कहा जो घरको ढोटा है चोरके माखन खायो ॥ तुरत दोहिनी दही जमायो जामन लगन न पायो ॥ ता घर देव पितर काहेको जा घर ऐसो जायो ॥ सूरदास प्रभु भक्त हेतते देह धरतही आयो ॥ दुखित जान दोऊ सुत कुबेरके ता हित आप बंधायो ॥

तीसरी सखीबचन ।

राग विहागरो

कुँवर जल भर भर लोचन लेत ॥ वारिज वदन विलोक यशोदा कत रिस करत अचेत ॥ छांड उदर ते दुसह दावरी डार हाथ ते बेत ॥ कहिधों तोहिं कैसे कर आवत सुत पर तामस एत ॥ दृग आंसू मुख माखनके कण निरख बदन छबि देत ॥ मानहुं श्रवण सुधा निध मोती उड गण अवलि समेत ॥ सरवस तन मन धन न्योछावर शूरश्यामके हेत ॥ को जानें केहि पुन्य प्रगट भयो या ब्रज नन्द निकेत ॥

चौथी सखी वचन ॥

राग धनाश्री ।

कहौ तो माखन लाऊं घरते ॥ जा कारण तू हरिहि न छोड़त लकुट न डारत करते ॥ सुनहु महरि ऐसी न बूझिये सकुच गयो हरि डर ते ॥ ऊखल लाय भुजा हरि बांधी मोहनी मूरत वरते ॥ शूर श्याम लोचन जल बरषत जनु मुक्ता हिमकरते ॥ मनहु कमल दधि सुत समयो तकि फूलत नाहीं सरते ॥

यशोदा वचन ॥

कहन लगीं बढ़ बढ़ यह बात । ढोटा मेरो, तु-

मन बंधायो तनकहि माखन खात ॥ अब मोहि माखन देन आई हो झूंठी बात बनात ॥ उरहन कह कह सांझ सकारे रिस उपजाई गात ॥ रिसही में मोकों गहि दीनों अब क्यों तुम पछितात ॥ सूरदास सब जाउ आप घर मोहि न बात सुहात ॥

सखी वचन ।

राग धनाश्री ॥

ऐसी रिस कीन्हो नंदरानी ॥ भली बुद्धि तेरे जिय उपजी बड़ी बैस अब भई सयानी ॥ ढोटा एक भयो है कैसे कौन कौन कर वर विधि वानी ॥ करम करम कर अबलों उवरे ताको मार पितर दे पानी ॥ को निरदई रहै तेरे घर को तेरे संग बैठे आनी ॥ सुनहु सूर कहि कहि पचिहारीं युवती चलीं सबै बिरुझानी ॥

समाजी वचन ।

दोहा ॥

कह्यो ग्वाल एक जायके, तब हल धरते आय ॥
प्रातहि ते तेरो अनुज, बांध्यो तुमरी माय ॥

दोहा ॥

सुनत ग्वाल के वचन को, बलदाऊ अकुलाय ॥
ताही छिन आवत भये, जहँ बांधि रहे कन्हाय ॥

रागसारंग ।

यह सुनके हलधर तहँ आये ॥ देख श्याम ऊखल सों बांधे तबहि दोऊ लोचन भर आये ॥ मैं बरजो कै बार कन्हैया भली करी द्वौ हाथ बंधाये ॥ अजहू छांडोगे लंगराई द्वौ कर जोर जननि पै आये ॥ श्यामहि छोड मोहि तुम बांधो निकसत सगुण भले नहिं पाये ॥ मेरो प्राण जीवन धन कान्हा तिनके भुज मोहि बँधे दिखाये ॥ मातासों काहा करों ढिठाई शेषरूप कहि नाम सुनाये ॥ सूरदास तब कहत यशोदा द्वौ भैया तुम एक है आये ॥

दाऊजीबचन ।

रागसारंग ।

काहे को इतनों हरि त्रास्यो ॥ सुनरी मैया मेरो भैया कितनों माखन नास्यो ॥ जा कारण तुम दोउ कर बांधे तनमें मारी सांटी ॥ सूने घर बाबा नंद नाहीं ऐसे कहि कर डाटी ॥ और कोऊ जो छेडै श्यामहिं ताको करों निपात्त ॥ सूरदास कछु कहि न सकत हों आखिर हो तुम मात ॥

जसोदाबचन ।

रागसारंग

काहा करों हरि बहुत खिजाई ॥ सह न सकी

रिसही रिसभर गई बहुतें ढीठ कन्हाई ॥ मेरो कह्यो नेक नहिं मानत करत आपनी टेक ॥ भोर होत उरहन लै आवत ब्रजकी बधू अनेक ॥ फिरत जहां तहाँ धूम मचावत घर नाहिं रहत क्षणेक ॥ सूरश्याम त्रिभुवनको करता जसुमति कहत जनेक ॥

समाजीवचन ।

दोहा ।

यमलार्जुनकी सुरत कर, हरि मन कियो बिचार ॥
रंगीलाल इनको करूं, अबही श्राप निवार ॥
नँद रानी कछु काज हित, गई सखिन्हलै गेह ॥
तवबृक्षन में जाय कर, हरि अटकाई देह ॥
ताही क्षन दोऊ विरछ,धरणि गिरे गह राय ॥
निजनिजअस्तुतिकरदोऊ, गये भवन हर्षाय ॥

राग रामकली ।

तरु दोऊ धरणि गिरे भहराय ॥ जड सहित अरायके आघात शब्द सुनाय ॥ भयेचकित लोग ब्रजके सकुच रहे डराय ॥ निकर यसुमति द्वार देखे जहां बँधेसु कन्हाय ॥ वृक्ष दोऊ गिरे देखे महरि करत पुकार ॥ अबहि श्यामहि छांडि आई देखे तरु की डार ॥ मैं अभागिन बांध राखे नंद

प्राण अधार ॥ शोर सुनि नंद द्वार आये बिकल गोपी ग्वाल ॥ देख तरु अति मन डराने हैं बड़े बिस्तार॥गिरे कैसे बडो अचरज नेक नांहिं बयार॥ दोउ तरु बिच श्याम बैठे रहै ऊखल लाग ॥ भुजा छोरि उठाय लीन्हे महर के हैं भाग ॥ निरख युवती अंग हरिके चोट जनि कहुं लागि ॥ कबहु मारत कबहुं बांधत महर बडी अभाग ॥ नयन जल भर ढार यशुमति सुतहि कंठलगाय ॥

राग कालिंगडा ।

निज जन बस घनश्याम कन्हाई ॥ उदर दाम ऊखल तें बाँधे करत बिनोद मोल लरिकाई ॥ नल कूबर मणिग्रीव धनद सुत नारद शाप पाय दोऊ भाई ॥ ते ब्रज राज द्वारपर उपजे युगल योनि अर्जुन तन पाई ॥ तिनके मध्य अडाय ऊखलहि खैंचत द्रुम हरि दियो गिराई ॥ पूरब सम शरीर दोऊ पायो हरि बिलास शुभ बिनय सुनाई ॥

दोहा ।

नल कूवर करके विनय, गये आपने गेह ॥
मुनिवर शाप मिटायके, पाई सुन्दर देह ॥

गोपबचन ।

बाबा नंदराय प्रति

राग धनाश्री ।

अचरज एक सुनौं ब्रज राज ॥ बिसमित अधिक अधीर भये मन भाषत गोप समाज ॥ बिन भूकम्प प्रभंजनहू बिन बिन कारण बिनगाज ॥ पुराचीन तरु सिंह पौरपर पतित भये सो आज ॥ गोपन बचन सुनत नंद धाये मान्यौ बडो अकाज ॥ तुरत उठाय श्याम उरलीनौं ऊखल बंधन त्याज ॥ भूसुर बोलि दान बहु दीन्हे भूषण अंबर साज ॥ रंगीलाल यसुदा पछिताती अति आनी उरलाज ॥

दोहा ।

नन्द राय द्विज बोलकैं, दिये अनेकन दान ॥
घरघरमें सब मगन अति, अति अनंद मनमान ॥
यह लीला ब्रज चन्द्र की, पढै सुनैं चित लाय ॥
रंगीलाल भव सिंधु तैं, तुरत पार ह्वै जाय ॥

इतिश्री यमलार्जुन लीला समाप्त ॥

अथ माखन चोरी लीला लिख्यते

दोहा ॥

उमा सहित अवधूत के, चरणन शीशनवाय ॥
रंगीलाल वर्णन करत, कृष्णचरित हरषाय ॥

श्री कृष्ण वचन ।

राग गौरी ॥

मैयारी मोहि माखन भावै ॥ जो मेवा पकवान कहत तू मोहि नहीं रुचिआवै ॥ व्रज युवती इक पाछे ठाढी सुनत श्याम की बात ॥ मनमें कहत कबहुं अपने घर देखों माखन खात ॥ बैठे जाय मथनियां के ढिंग तब मैं रहों छिपानी ॥ सूर-दास प्रभु अंतर यामी ग्वालिन मनकी जानी ॥

समाजी बचन ।

दोहा ।

ग्वालिन मनकी रुचिलखी, केशव कृष्णमुरार ।
माखन चोरी करन को, मनमें कियो बिचार ॥

श्रीकृष्ण बचन ।

राग रामकली ।

करत हरि ग्वालन संग बिचार ॥ चोरि माखन खाउ सब मिल करो बाल बिहार ॥ यह सुनत सब सखा हरषे भली कही कन्हाय ॥ हँस परस्पर देत तारी सोंह करनंद राय ॥ कहा तुम यह बुद्धि उपाई श्याम चतुर सुजान ॥ सूर प्रभु मिल ग्वा-ल बालक करत हैं अनुमान ॥

वार्ता ॥

अरे मनसुखा तनसुखा हो, आज चलो तो

चोरी करके सखीनके घरको माखन खाय आमें, यह बचन श्रीकृष्णको सुनिके सखा बोले ॥ हे कन्हाई यह बुद्धि तैनें भली उपाई? यह कहि सखा बहुत हँसे और ताली बजावने लगे ॥

समाजी बचन ।

राग बिलावल ।

सखनसहित गये माखन चोरी ॥ देख्यो श्याम गवाक्ष पंथ ह्व गोपी एक मथत दधि भोरी ॥ भरी मथानी धरो मांटते माखनसों उतरात ॥ आपन गईं कमोरी मांगन हरि पाई यह घात ॥ पैठे सखन सहित घर सूने माखन दधि सब खाये ॥ खाली छोड मटुकिया दधिकी हँस सब बाहर आये ॥ आयगई करलिये कमोरी घरते निकरे ग्वाल ॥ माखन कर मुख दधि लिपटायो देखरहे नन्दलाल ॥ कहँ आये ब्रजबालक सँग लै माखन मुख लिपटायो ॥ देखे खेलत ते उठ भाजे सखी यही घर आय छिपाने ॥ भुज गहि लियो श्याम इक ग्वालिन निकसे ब्रजकी खोर ॥ सूरदास ठगि रही ग्वालनी मन हरि लियो अजोर ॥

राग कान्हरो ।

चली ब्रज घरघरमें यह बात ॥ नन्द सुत संग सखा लीन्हे चोरि माखन खात ॥ कोउ कहत मेरे भवन भीतर अभी पैठे धाय ॥ कोउ कहत मोहि देख ठाड़ी उतहि गये पराय ॥ कोउ कहत किहिं भांति हरिको देखों अपने धाम ॥ हरिहि माखन देहुं आछो खांय जितनो श्याम ॥ कोउ कहै मैं बांध राखों कोन सके निवार ॥ सूर प्रभुके मिलन कारन करत बुद्धि बिचार ॥ जोर कर बिधिसों मनावत पुरषनंद कुमार ॥

दोहा ।

घरघरमें चरचा चली, सिगरे ब्रजके मांहिं ॥
नंद सुवन संग ग्वालले,चोरिचोरिदधिखाहिं ॥

सखीबचन ।

जोआवे मेरे भवन, तो गहि लूंगी हात ॥
सब मालुम पडजायगी,कैसो माखन खात॥

दूसरीसखी बचन ।

जो मेरे घर आय है, नटवर नन्द कुमार ॥
दाऊकी सों पकरके, भर लूंगी अँक वार ॥

तीसरीसखी बचन ।

जो मेरे घरमें घुसै, रंगीलाल वह चोर ॥
तो कबहू नहिं छोडिहों, कितनेहु करो निहोर ॥

चौथीसखी बचन ।

जो कहुं मेरे बस परै, बाबाकी सों खाउँ ॥
पकर हाथ वा चपलको, यसुदापै लै जाउँ ॥

समाजीबचन ।

याबिधि मिल सब ब्रजबधू,करत प्रेम गुणगान ॥
इतने में मोहन चपल, घुस्यो ऐक घर आन ॥

पद ।

देखो जाय श्याम घर भीतर ॥ अबही नि-
कस कहत भई सोई फिर आई हों मैं तुमरे डर ॥
सखा साथके भाज गये सब गहे श्यामको धाय ॥
औरन जान जान मैं दीन्हे तुम कहँ जाउ प-
राय ॥ बहुत अचगरी करत फिरत हो मैं पाये
कर घात ॥ बांह पकर लै चली महरि पै करत र-
हत उतपात ॥ तबहि श्याम एक बुद्धि उपाई
वाके सुतको हात ॥ आप छुडाय वाहि पकरायो
कर चतुराई जात ॥ देखो महरि आपने सुतकों
कबहु नांहिं पतियात ॥ बैठे श्याम भवन अपने में
देख देख मुसुकात ॥ बांह पकर तू लाईकाकों अ-
तिहि बेसरम ग्वार ॥ सूर श्याम मेरे आगे खेलत
योवन मद मतवार ॥

सखी बचन।

रेखता।

सुनिये यसोदा रानी, छोडैं यह ब्रज तिहारो ॥ कहीं जायके बसैंगी, अतहि करैं किनारो ॥ नित कहां तलक सहिये, नुकसान तेरे सुतको ॥ घर जायके हमारो, माखन चुरावै सारो ॥ तेरेही-पास बालक यह बनके आय बैठे ॥ जब जाय घर सखिनके सुन्दर तरुण निहारो ॥ छींकेपें हो क-मोरी, लठियातें फोर डारै ॥ दधिकी मथनियां तोडके माखन सबी बिगारो ॥ नित करै हानि हमरी रंगी न याहि बरजो ॥ ऐसो चपल यह ढीठ है यसुदाजी सुत तिहारो ॥

यसोदा बचन।

वार्त्ता।

अरी सखी तुम बडी बेसरम हो नेक घूंघट खोलके तो देख यह कौनको सुतहै ॥ तब सखी घूंघट खोलके देखै तो अपनेही पुत्रको हाथहै॥ औरश्रीलालजी महाराज श्रीयसोदाजी के पास बैठे हैं ॥ यह चारित्र देखके सखी बडी लज्जित भई इतने में दूसरीनें आयके कही ॥

सखीबचन ।

राग रामकली

अपनों गाँव लेउ नंदरानी ॥ बडे बापकी बेटी तातें पूतहि भले पढ़ावत बानी ॥ सखा संग लै पैठत घर में आप खायसो सहिये ॥ मैं जब चली श्यामही पकरन तब की बात कहा कहिये ॥ भाजि गये दुर देखत कितहू मैं घर पौढी आई हरि मेरी बेनी गुहिपाछेसों बांधी पाटी लाई ॥

श्रीकृष्णबचन ।

सुनि मैया याके गुण मोसूं इन मोहि लियो बुलाई ॥ दधि में परी सहतकी चेंटी मोपै सबै कढ़ाई ॥ टहल करावति अपने घरकी यह पति सँग मिल सोई ॥ सूर बचन सुनि हँसी यसोदा सखी रही मुख जोई ॥

सखीबचन परस्पर ।

राग बिलावल

महरि तुम मानों मेरी बात ॥ ढूंढ़ ढँढोर गोरस सब घरको हर्यो तुमारे तात ॥ कैसे कहि लीयो छीके तें ग्वाल कांधदे लात ॥ घर नाहिं पीवत दूध धौरीको कैसे तुमरो खात ॥ अस मंजस बोलत है आई ढीठ ग्वालनी प्रात ॥ ऐसो नहीं

अचगरो मेरो कहा बनावत बात ॥ कहा कहूं कहते सकुचतहूँ कहा दिखाऊं गात ॥ हैं गुण बडे सूरके प्रभुके ह्याँ बालक है जात ॥

सखीबचन ।

रेखता ।

सुन्दर सलोने श्यामके गुण कहा कहोंरी माई ॥ मारे सरमके मोसों तोसों कह्यौ न जाई ॥ हँस हेर हाहा खाके नैननकी सैन मारे ॥ कर तिरछी तिरछी चितवन मुसक्याय मेरे माई ॥ मैं जाउं जलकों पनघट मारगमें मोहिं घेरे ॥ हँस हँसके मेरे माऊं मसके नरम कलाई ॥ आकर अचानचक में घूंघट हमारो खोलै ॥ जो जो करै सुत तेरे सो कहा कहोंरी माई ॥ कभि जाय घरमें मेरे ग्वालन को कर बहानों ॥ सूनों जो घरकों देखैं माखनको ले चुराई ॥ तुमतो कहो ये बालक यह है गुणोंका पूरा॥ याके चरण कमल पै द्विज रंगी बलि बलि जाई ॥

यसोदाबचन ।

राग बिलावल

कब यह करन गयो माखन चोरी ॥ जानतहों जो कटाक्ष तिहारे चपलनयन मेरो तनक सौरी ॥

दैदै दगा बुलाय सदन में भुजभर भेटत उरजक-
ठोरी॥उर नख चिन्ह दिखावत डोलत श्यामच-
तुर भये तुम भई भोरी ॥ उरहानाके मिस आवति
हो चितै रहोजिमि चन्द्र चकोरी ॥ सूर सनेह ग्वा-
लि मन अटक्यौ अंतर प्रीति जाय नहिं तोरी ॥

वार्ता ।

अरी सखी हो मेरे आगे तुम क्यों झूंठ बोलौ
हो । यहां ते चली जाओ ? नहीं तो गोधन की सौं
लाखन गारी सुनाऊंगी ॥ ये सुनिके सब सखी
अपने अपने घरकों चली गईं ॥

दोहा ।

यह लीला घनश्याम की, बाल बिनोद अपार ॥
पढ़ै पढ़ावै नेह कर, सो उतरै भव पार ॥

इति ।

अथ पनघटलीला लिख्य० ।

समाजी बचन ।

दोहा ।

अपने अपने गेह सों, बिवस नेह नन्द लाल ॥
सीस मटुकिया धर चलीं, पनघटकों ब्रजबाल ॥
पनघट मिस ब्रज गोपिका, श्याम दरशके हेत ॥
नित उठिजात शृंगारकर, जिहिं बन प्रभू निकेत ॥

राग अलैया।

नवल किशोरी तन गोरी नव नागरी ॥ भरन चलीं जमुना जल गागरी ॥ नील पट अंग राजे। कोटि रति काम लाजे ॥ गजसी गवन मुख बिधुसी उजागरी ॥ दृग रतनारे सकल श्रृंगार धारे। कोमल कमल गात गुणगण आगरी ॥ अलकें कपोल छूटीं। मनों छवि रास लूटीं। संगमें सहेली सब सुभग सुभागरी ॥ हरिको बिलास शोभा। देख देख मन लोभा। रविजा किनारे ठाढीं भर अनुरागरी ॥

ललिता बचन।

परस्पर बार्ता।

अरीबिशाखा सखी, कहा कहै ललिता सखी, अरी बीर चलो तो यमुनाजल भर लावें, अरी बीर हमतो नाहिं चलैं, वहांतो नन्दको लाला बडो ऊधम करै है? अरी भटू मैं तो काल जल भरवे गई ही सो वानें आय कर बडो ऊधम सो कियो? तातें हमतो नाहिं चलैं ॥ अरी सखी ऐसी वानें तोसों कहा कुचाल करी ॥ कहतो सही ॥

सखीबचन।

मोहि देख अचानक छेक डगर हरि लिपट चिपट गयोरी ॥ आवत ही जमुना जल भरके ॥

औचक आय गयो छल करके ॥ घट पटक्यो भई पंक धरणि मम चरण रपट गयोरी ॥ पट उघार सब अंग निहारो ॥ बरबसपकरो हाथ हमारो ॥ सगरी हरि हरिलाज भाज रवि तनया तट गयोरी ॥ यसुदा पूत अनौखो जायो ॥ चलत पंथ मोहि कंठ लगायो ॥ हरिबिलास दिन रैन खटक उर नागरनट गयोरी ॥

ललिता बचन

बार्ता।

आज तो सखी श्रीनन्दलाल मधुबन में गाय चरायवे कूं गये हैं ? यातें चलो जल्दी जल भर लावें, तब बिशाखा सखी बोली, अच्छो सखी चलो चन्द्रवलिकोभी ले चलो, अरी चन्द्रावलि सखी, अरी कहा कहो सखी, अरी बीर चलो जल भर लावें ॥

चन्द्रावलिबचन॥

रागएमन ।

वा बन श्याम चरावत गैयां ॥ यमुना नीर भरन जिन जावो मगमें कान्ह करत लंगरैयां ॥ गागर शीस धरें हम सजनी आय अचानक पकरी बैयां ॥ कौन उपाय करैं हम आली बैठो

रहत कदमकी छैयां ॥ बहुत भांति बिनती हम कीनी त्यागी मोहिं परी जब पैयां ॥ हरि बिलास नंद सुवन अनोखो नित उठ रारि करत ब्रज मैयां॥

बार्ता ॥

अरी सखी अभी तो वह लंपट आयो न होयगो । चलो जलदी जल भर लामें ॥ अच्छो सखी चलो ? प्रियाजीकूं भी लै चलैं, अजी प्रियाजी महाराज, अरी कहा कहै सखी, अजी आप चलो तो यमुना जल भर लावें ॥ अरी सखी वहांतो श्रीनंद कुमार बैठे हैं कालिहैं मैं जल भरवे गई ही सो वानें बडो ऊधम कियो ॥

श्रीप्रियाजीबचन ।

रागहँसवट

गईरी मैंतो पनघट कालि गई ॥ श्याम वरण धौं नंदको छोरा गागरि पटकि दई ॥ सब सखियन के बीच गैलमें बहियां पकर लई ॥ हरिबिलास अब को ब्रजबासि है यह अनरीति नई ॥

राग ठोडी

मग मिल्यो नंदको ढोटोरी ॥ मेरी वहियां मरोरी झक झोरी माला तोरी जल भरी गगरिया फोरी निपट कपट कर झपट निकट है डपटयौ लिपट

गयोरी ॥ उलट पटकि घट पनघट बटतल कुच भटु पकरी मोरी ॥ लकुट हाथ हग मुकुट बिकट सिर कटि पट पीत पिछोरी ॥ यमुना तट हरि घूंघट झांक्यो अट पट कह्यौ करोरी ॥ चटक मटक छबि लटक दिखाके घट घट खटकि रह्योरी ॥ हरिबिलास ब्रज भट नटनागर अब हट खटत बहोरी ॥

सखी बचन ।

बार्ता

अजी श्रीप्रियाजीमहाराज आज तो हम तुम सब इकट्ठी ह्वै कैं चलै, जो वह लंपट आयहू जायगो तो आज मारे गुलचानके सूधो करदेंगी ॥

प्रियाजी बचन।

अच्छो सखी चलो-

समाजी बचन ।

दोहा ।

घट भरबे सब ब्रज बधू चलीं यमुन अस्नान ॥
झूमत मद अनुरागपी, गावत मद भरि तान ॥

राग अलैया ।

मोहनके अति नयन नुकीले ॥ निकसे जात पार हियराके निरखत निपट रसीले ॥ ना जानों

बेदन अलियन की तीन लोक ते न्यारी ॥ ज्यौंर छिद्त मिठात हिये में सुख लागत सुकुमारी ॥ जबसों यमुना कूल बिलोक्यो सब निशि नींद न आवे ॥ ललित किशोरी आज मिलै जहां ना कुल कान बिचारों ॥ आग लगो यह लाज निगोडी दृ-गभर श्याम निहारों ॥

श्री प्रियाजी वचन ।

राग भैरवी ।

अलक जालके फंद परोना ॥ जो चाहो कुशला-त हिये की मृदु मुसिक्यान अरों न अरोना ॥ तुम नलिनी मनमोहन मधुकर भूले बाकी गैल परोना ललित किशोरी औघट चलिये भौंरा घाट भरोन भरोना ॥

सखाजी वचन ।

दोहा

छुम छननन छन घुंघुरू, धुनि पूरित चहुं ओर
सुनत श्रवण धायो चपल, नागर नंद किशोर ॥
मगही भेटी मटक कें, नट नागर ब्रज राज ॥
जात इतै कितकों चली, भरें रूपको साज ॥

लालजी वचन ।

कहौ इतै कितको चली, नवल जोबना बाल ॥
झूमिझूमि झुकि मदभरी, गज मतंगकी चाल ॥

❀ सखी बचन ❀

जात कहूं हम नन्दके, तूको बूझन हार ॥
ऐसी वैसी बात कर, क्यों सतरात गँवार ॥

दोहा।

मनों तिहारे मोलकी, हमरो रूप सिहात ॥
आय अचानकभोरही, करनलग्योउतपात

लाला जी वचन।

तुमकामिनि हम रसिकजन, कोकनिपुलमिलहाल।
बदन कंजपैं भँवरस, डोलत का ब्रज बाल ॥

सखी बचन।

सकुचत ना दृग नेकहू, करत ठठोली लाल ॥
गो चारन बन अटन मैं, पंडित हो गोपाल ॥

❀ लालजीबचन ❀

राग अलैया ॥

पंडितहैं गुण मंडितहैं हम धेनु चरावन हार न जानों ॥ बूझत नीके झूम झूम भल भूल भटक तुम पार न पानों ॥ नगर छत्र ब्रजराज सुवन जग बिदितसु ग्वार गँवार बखानों ॥ ललित किशोरी जाउ लपट घर छींकतही कित कीनो पयानों ॥

राग काफी ॥

कहोजी गोरी कित चलीहो आज ॥ कुंभ म-
ंगमेत तान तान कच हमरी डगरमें कौन काज

हंम हैं यती तुम पतिब्रता तिय खोल घुंघुट टुक तजहु लाज ॥ ललित किशोरी लय मुख जानों काकी बेटी संगलै समाज ॥

श्रीलाडलीबचन ॥

रागकाफी

न्यारे रहो किन हमसों श्याम ॥ लपक झपक तुम अंग छुओ नां हम जात कहूं तोय कौन काम ॥ क्यों घुंघुट पट खोल उघारे लंपट हम कुलवंती बाम ॥ तूनट खट जो ललित किशोरी रट रख मेरो राधा नाम ।

सखी बचन ।

अजी प्रियाजी महाराज, या लँपट के मुख मति लगो, चलो जल्दी जल भरके घरकूँ चलैं ॥

लालजीबचन ।

❀ राग काफी ❀

मति मारो नयनोंकी कटारी ॥ झीने पट रंग्रनसों जावक चरनन केतिक प्यारी ॥ भृकुटी तान कमान किशोरी घूँघट ओट निहारी ॥ बूझत बात रोस इतनो क्यों, उतमत जाउ भलारी ॥

समाजी बचन दोहा ।

थिरक छैलचल गैलमें, छेक लई ब्रजनारि ।
इतउतकर फैलाय मुख, निरखत नवसुकुमारि॥

सखी बचन।

रागकाफी

पानी भरनको जाँय नंदके छांड हमारी गैल॥ लपक झपक म्हारी छतियां छुवत है भयो अनोखो छैल॥ चपल चलत अचरा झटकत नट टूट गयो उरहार॥ बिखर गई मुक्ताहल अपनी तू मुस क्यात निहार॥ बार बार गहि बैयां मरोरत निकसन देत न बाल॥ ललित किशोरी नये भये ठग परयो हमारे ख्याल॥

प्रियाजी बचन।

सोरठा।

बनी बावरी बीर, नई ललित फुल बार में।
चलिये वाही तीर, जल भरबे नव भामिनी॥

वार्ता॥

तब श्री लालजी मारग रोकके ठाढ़े ह्वै गये और गागरिनमें कांकर मारन लगे॥

राग भैरवी॥

हमरी डगरिया छाँडो मोहन जाना हमकोदूररे॥ झकझोरत कंचुकि तुम फारी गागरि कीनी चूररे॥ नंद यशोमति सरल सीलता छाय रही ब्रजपूररे॥ ताके सूनु नारि मग छेड़त निडर कुटिल मन क्रूररे चटकीली चूनर हम धारैं तापर डारत धूररे॥ हरि

बिलास अब जानि परी हरि भये अबलन पर सूरे ॥

दोहा।

सुनत सखिन के बचन को नागर नंद किशोर।
गागरि पटकी शीशते बहियां गहत झकोर ॥

राग भैरवी ॥

श्याम हटो जिन राह मरोरो धेनु चरावो जाय के। कारी करनी करत श्याम तुम कारो तन अब पायके ॥ जो हम जाय कहैं गुण तेरे कंस महीप सुनायके। नंद समेत पलत फिरो ब्रज देखो बल ठकुराय के ॥ मान कही घर जाउ लला अब निज कुल देव मनायके। हरि बिलास मग हांस न कीजे कहत अभय समझायके ॥

प्रियाजी बचन वार्ता।

अरी सखी या ढीठतें क्यों अटको हो चलो याकी यशोदा मैया ते कहि आवें ॥

समाजी वचन दोहा।

दैन उराहिनों गोपिका, गईं यशोमति गेह ॥
बदन मलीन सकोपि पुनि, मन घनश्यामसनेह॥

सखी बचन।

राग कालिंगडा।

सुनों यशोमति सिर पर गगरी ॥ हम यमुना

जल भरन जातही बीच मिल्यो सुत तेरो मं-
गरी ॥ बैंयां मोरी पकरी झक झोरी करन फूल
मोतिन लर तोरी ॥ फिर कपोल पर हाथ च-
लायो यह गति आज करी व्रज डगरी ॥ चीर
नवीन सकल उन फारे लकुट हाथ ले मगमें ठाढ़े
दशा हमारि देख ब्रज वनिता भाज गईं निज निज
गृह सबरी ॥ गागर छीन महीतल पटकी सुनो
कथा अब नागर नटकी एक जतन हम सबनिबि-
चारो तुम कहो तजें ये नगरी ॥ बसो सदाब्रज तुम
नंदरानी छोडो हम यमुनाको पानी हरिबिलास
चिरजीयो सांवरो जा कारण तुमसों हम झगरी ॥

पद ।

देखो नंदको लंगरवा मोरे कांकर मारोरे ॥
नैन पैन कर सैन चलावै चलत डगर घुंघटवा
टारोरे ॥ प्रीति रीति पर नीति जनावै छल बल कर
गर हरवा डारोरे ॥ हरिबिलास हरि फिराफिर हेरत
लिपट चिपट आंचरवा फारोरे ॥

राग देश ।

श्यामनें मोरी बैयां मरोरी ॥ ऐसो चपल
भयो या वृजमें नित उठ रारि करत बरजोरी ॥
मैं पनघट जल भरन जातही झपट लिपट सिर
गागर फोरी ॥ बालकवृंद लिये सँग डोलत पंथ

चलैं किम गोप किशोरी ॥ कठिन उपाधि कहां लगि सहिये निशिदिन करत बहोर बहोरी ॥ हरि बिलास घनश्याम सबल अति हम अबला कोमल तन भोरी ॥

राग टोडी।

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई ॥ हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई ॥ घूँघट पट खोल खोल सामरो कन्हाई। यशुमति तैं भली बात लालको सिखाई ॥ अगर बगर झगरो करत रारितो मचाई ॥ हों तो वीर यमुना तीर नीर भरन जाई। गिरधरके चरण ऊपर मीरा बलि जाई ॥

यसोदा वचन।

अरी सखीऔ वीर तुम अपने घर जाओ और वाहि घर आवन देउ देखो आज वाको कैसो ऊधम निकारूंगी ॥

दोहा

यह सुनिके बृज सुन्दरी, सकल गईं निज गेह ॥
तन मनमें प्रफुलित सकल, मन घनश्याम सनेह।

इति ॥

अथ मगरोकन लीला लिख्यते।

दोहा।

प्रात समय बृज नागरी, कर नख शिख सिंगार ॥

गोरस बेचनको चलीं, गज गामिन सुकुमारि ॥ मग में ठाढ़ो सामरो, रोक सबनकी गैल ॥ रूप सिंधु अरबिन्द दृग, रसिक शिरोमणि छैल ॥

राग जिलासूल तिताला ॥

तोहि उरझनकी बान परी है सांझ गिनत नहिं भोर ॥ देर लगत मोहि सास रिसावै तुमैं छैल नित रारि सुहावै इनकूं चाल कछु हाथ न आवै गागरि दई फोर । तुम चंचल अति ढीठ बिहारी कैसे को- ख रहे महतारी यह मोकों अचरज है भारी घर र तेरो शोर । नारायण अब क्यों इतरावै भई सो भ- ई ना बात बढावो ताहीको तुम आंख दिखावो जो होय तेरी बंदौर ॥

दादरा

गैल जिन रोको जोबन मद माते । इन बातन शोभा नहीं पावो लाज भरी गारी गाते ॥ तुम जा- नत हमते यह डरपत तासों अति इतराते ॥ नारा- यण हमसों ना बोलो मानके जातके नाते ॥

राग कालिंगडा ।

मारग दीजे मोहन प्यारे । इन बातन शोभा नहिं पावो तुमहो नन्द दुलारे ॥ बहुत हंसी जिन करो सामरे सुनि हैं कंत हमारे । तुमरो कोऊ कछु
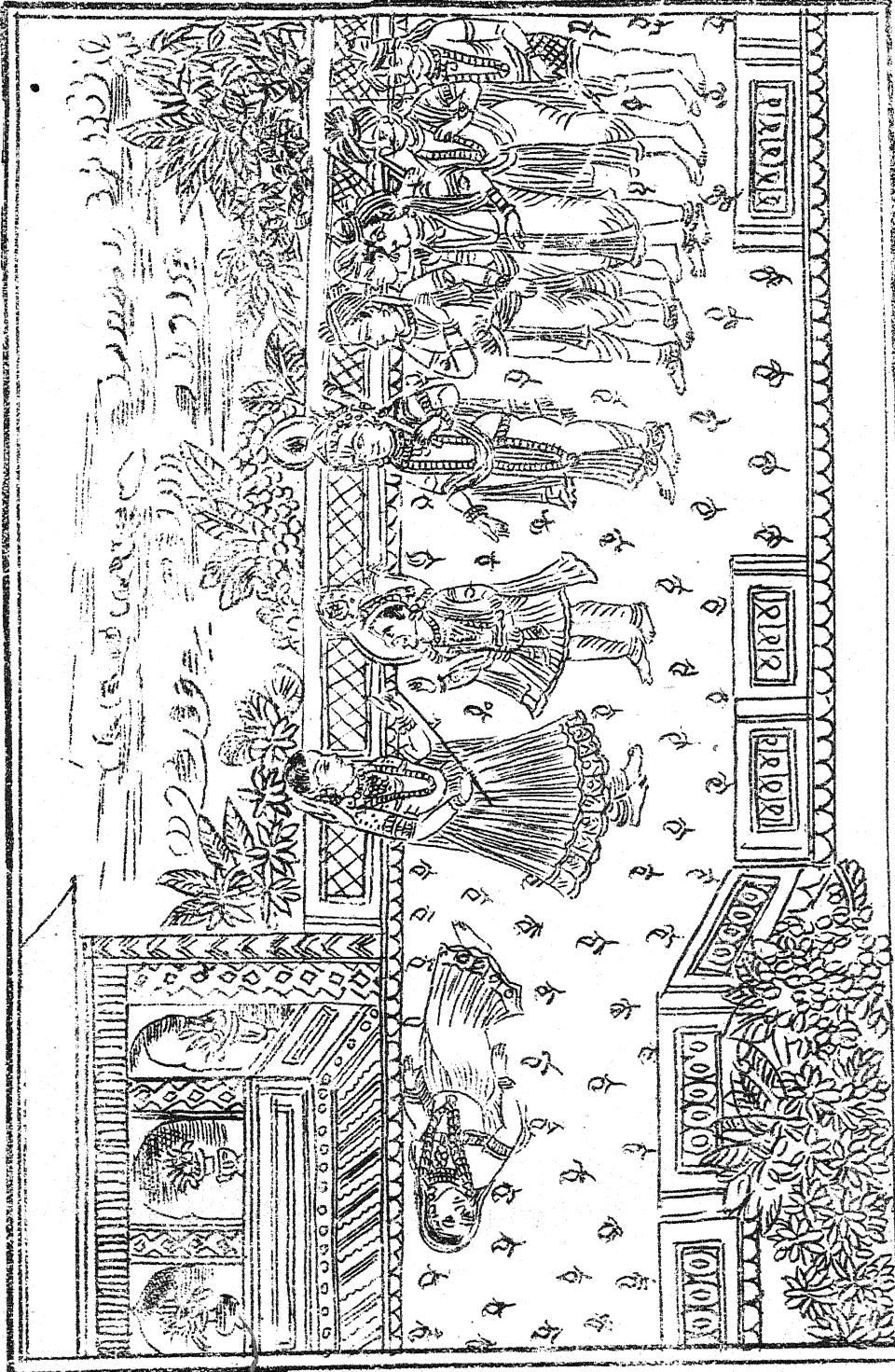
न करैगो हमैं मूंदैंगे तारे ॥ देखे सुने नहीं हम कबहू तुम सम झगरन हारे ॥ नारायण क्यों रारि वढावो द्वै बापनके बारे ॥

राग कालिंगडा।

मारग छांडो हमारो कान ॥ आन अचानक मारग घेरो ठाढे भये भृकुटी तान ॥ बार बार छेडत हो हमको नेंक न मानत कान ॥ हमन सही अब तक बहु तेरी इकलौतीको जान ॥ रंगी-लाल घर जाउ ललन अब खैर आपनी मान ॥

लालजी बचन।

❀ राग दादरा ❀

ग्वालिन दान देत इठ लावै ॥ नित प्रतिही तू या मारग है क्यों दधि बेचन आवै ॥ हमें कहत तू दो बापनको अपने क्यों न गिनावै ॥ नारा-णय दे कोटिक ताने कर नहीं छुटने पावै ॥

❀ राग कालिंगडा।

लाल तुम काहेको इतरावो ॥ मोर पंख उरझे पगियामैं यापै बडे कहावो ॥ जब ते प्रगट भये तबही ते घर घर धूम मचावो ॥ माखन छाछ चुराय हमारो मिल ग्वालन संग पावो ॥ फटी पुरानी कामर ओढो बन बन धेनु चरावो ॥ ना-रायण तुम कौन भरोसे एते गाल बजावो ॥

॥ लालजी बचन ॥

ग्वालिन दैजा हमारो दान ॥ याही मारग आवत नित प्रति नैन कमनियां तान ॥ हाव भाव चंचल अति चितवन जोबन जोर गुमान ॥ दान दिये बिन जान न देहों यह मन लीनी ठान ॥ रंगीलाल सुनि बचन श्यामके ग्वालिन मन मुसकान॥

सखी बचन ।

राग कालिंगडा ।

श्यामघन क्यों इतने इतरात ॥ काल परों तुम घर घर डोलत मांगत दधि अरु भात ॥ आज बने ब्रजमें दानी तुम नेंक सरम नहीं आत ॥ रंगीलाल तुम भले लजाये चोरी कर पितुमात ॥

लालजी बचन ।

ठुमरी जिला खम्माच

आज तू नवेली दधि बेचवेकूं आईरी ॥ योवन उमंग ते झूमत चलत गज मत्तहू की गति तें लजाईरी ॥ नैननके बान भौंहैं तानके कमान कहौ कौन पै यह करी है चढ़ाईरी ॥ रूपकी निकाई सुघराई नारायण कहां लगि करूं मैं बडाईरी ॥

सखी बचन ।

राग कालिंगडा

अपनी गैल चले जाउ ब्रजबासी ॥ मारग में

सब लोग देखत हैं देखेंगे लोग करैंगे मेरी हांसी ॥ तुम ब्रजबासी अपनी गरज के नैना मिलाय डार गर फांसी ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तू मेरो ठाकुर मैं तेरी दासी ॥

लालजी बचन।

राग जिला

ठाढ़ी ठाढ़ी रहो रूपकी निधान ॥ बरजोरी जावो कित दौरी बिना दीये दधि दान ॥ काहू भांति उपमा तब छबि की कर नहिं सकत बखान ॥ घूंघट में मुख दमकत ऐसे ज्यों बादर में भान ॥ हम निज कर मांगत रिसात तुम भली नहीं यह बान ॥ नारायण तुम आजहि आई नई भई पहिचान ॥

सखी बचन।

राग कालिंगडा ॥

छांडो मेरी गैल नांतर गारी मैं सुनाऊंगी ॥ औरन के भूले कहुं मोसो जिन अटकौ अबही यशुमति पर पकर ले जाऊंगी ॥ पहिले ही सों अपनी बड़ाई कहा करों मैं देखिये तो कैसो तुमें नाचमें नचाऊंगी ॥ जो मैं तोय सूधो न बनाऊं नारायण तो मैं निज बापकी न आज सों कहाऊंगी

❀ राग मलार ।

क्योंरे छैल मटकी मेरी पटकी ॥ करके ढिठाई मग दधि बिखराई सब चूरी मुरकाई सुकुमार बैयां झटकी ॥ अबहि यशोदा ढिंग पकर लै जाऊं तोहिं एक न सुनूंगी तेरी बात नट खटकी ॥ बदलौ लैलैऊंगी न डरूंगी नारायण तोसों अब मेरी आय कौन बात अटकी ।

❀ दोहा ❀

चलौ सखी सब मिल चलैं, कहैं हकीकत जाय ।
कौतुक सब या ढीठके, यसुदहि देहिं दिखाय ॥

❀ इति ❀

अथ उराहनो लीला लिख्यते ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

कर उराहनों मिस सखी, श्याम दरशकी आस ।
जुर मिल सब ब्रज नागरी, गईं यशोमति पास ।

❀ सखीवचन वार्ता ❀

अरी बीर यसोदा तेरो लाला मगमें हमसों नित्य उतपात करतहै, और जब हम यमुना जल भरबे जातहैं तब हमकों बडो दुख देतहै ॥

यसोदा वचन ।

अरी बीर तुमको कहा दुख देयहै कहौ तो सही ।

सखी वचन ।

❀ रेखता ❀

सुनिले यसोदारानी तू लालकी बडाई ॥ सब लोक लाज याने यमुनामें धो बहाई ॥ भोरही मैं गईथी जल भरवे काज बहना ॥ पीछेसों आय अचानक उन मूंदे मेरे नैना ॥ डरपीमें हायको है तब बोले टेढे बैना ॥ होंतो रही अकेली वा संग ग्वाल सेना ॥ तब सबने हाहा करके तारी मेरी बजाई ॥ सुनिले० ॥ १ ॥ हँस हँसके छैल मोसों करिवेलगे ठठोली ॥ यह छवि तिहारे सुतकी तब कासों जावे तोली ॥ निरखें कभू बदनको कबहू छुवै वो चोली ॥ मैंतो सकुचकी मारी वासों कछू न बोली ॥ पुनि बैयां मेरी झटकी गागर धरणि गिराई ॥ सुनिलै० ॥ २ ॥ अंगियां के बंद तोरे चूनर झडाक फारी ॥ दुलरीके निरखवेकों गल बैयांमोरे डारी ॥ यह सब कुचाल देखें मग ठाढ नर और नारी ॥ ताहूपै नाम मेरो लैके सुनावै गारी ॥ गुरजनमें या बिध मेरी वानें हंसी कराई ॥ सुनिले० ॥ ३ ॥ ज्यों ज्यों कहूं मैं हटरे त्यों त्योंही दूनों अटके ॥ मुसिक्यावै दृग मिलावै भृकुटी चलावै मटके ॥ कर करके सैना बैनी तन-

परसे चीर झटके ॥ अब और का कहूं मैं गलहार हैकैं लटके ॥ एकसाथ वानें ऐसी पकरी निलज्ज-ताई ॥ सुनिले० ॥ ४ ॥ कबहू कहै बतारी तू क्यों अकेली आई ॥ कै घरमें तेरे पतिकी तासों भई लडाई ॥ तू चल भवन हमारे कर हमसो मित्र-ताई ॥ विधनानें तेरी मेरी जोडी भली बनाई ॥ नारायण वाकी बातें सुनिकै मैं अति लजाई ॥ सुनिले यसोदा रानी तू लालकी बडाई ॥ ५ ॥

यसोदा वचन ।

वार्ता ।

तब श्री यसोदाजी नें कही अरी सखी मेरो लाला ऐसे गुणकहा जानें, तुम मेरे कान्हा कूं झूंठो दोष क्यों लगावत हो ॥

सखी बचन ।

वार्ता ।

हे नंदरानी हम तुह्मारे लालकूं झूंठो दोष नहीं लगावें हैं, जैसे जैसे कौतुक तुह्मारो लाला करै है सो आप सुनों ॥

राग एमन अलैया ।

बन बन श्याम चरावत गैया ॥ यमुना नीर भरन हम जावें मगमें श्याम करत लंगरैया ॥

गागर शीश धरें हम सजनी आय अचानक पकरी बैयां ॥ कौन उपाय करैं हम हेली बैठो रहत कदमकी छैयां ॥ बहुत भांति बिनती हम कीनी त्यागी मोहि परी जब पैयां ॥ रंगीलाल घनश्याम अनोखो नित उठि रारि करत ब्रजमैयां ॥

राग देश।

श्यामनें मोरी बहियां मरोरी ॥ ऐसो चपल भयो या ब्रजमें नित उठि रारि करै बरजोरी ॥ बालक वृंद लिये संग डोलत पंथ चलें किम गोप किशोरी ॥ कठिन उपाधि कहां लगि सहिये निशदिन द्वार रहत खडोरी ॥ हरिविलास घनश्याम सबल अति हम अबला कोमल तनगोरी ॥

यसोदा वचन।

कृष्णसों वार्ता।

श्रीयसोदाजी बोली अरे लाला तू इन सखीन सों मग में काहे कूं अटको करै है ॥

श्रीकृष्ण बचन।

वार्ता

अरी मैया ये सखी मोकों बनमें अकेलो देख कर पकर लेत हैं- और अपने गले सों लगाय कें मेरो मुख चुंबन करने लगै हैं- तब मैं इनपैंते बडो कठिनता ते भाजत हों ? जब ये मोसों कहतहैं कि

अेर प्यारे कैतो हमारे पास आ । नहीं तो तेरी मै यासों कहिकें तोय पिटवावेंगी सो अरी मैया ये सखी झूठो दोष लगायके मोकूं पिटवायबेआई हैं ॥

यसोदा बचन ।

वार्ता

अरी सखी मैं तुह्मारे गुण पहिलेही जानतरही कि, ये बडी चंचल हैं और मेरे भोरे भोरे लालाकों झूठो दोष लगायबेको आई हैं, जाओ अपने घरकूं खबरदार आज पीछे मेरे लाला ते अटकीं तो लाखन गारी दऊंगी ॥

सखी बचन ।

राग योगिया--आसावरी ॥

हमारो न्याव करो नंदरानी ॥ या ब्रजमें प्रगटो उतपाती तेरो छैल गुमानी ॥ बिना बात हमसों नित अटके ढीठ बडो है भारी ॥ अचरा झटक पटकि सिर गागर पुनि ठाढो दे गारी ॥ तुम याको घरमें नहीं बरजो कुलकी रीत बिगारी ॥ नारायण कछु जान परत है एक सलाह तुमारी ॥

यसोदा बचन ।

राग टोडी--जोनपुरी ।

ग्वालिन झूंठो उरहिनो लाई । कब तेरे घर गयो सामरो कब गोरस ढरकाई । या मिस मेरे

मनमोहनको तू अब देखन आई ॥ नारायण तेरे मनकी मैं जान लई चतुराई ॥

❁ दोहा ❁

ये बातें सुनि सुन्दरी, गईं सकल निज धाम ॥
सबके मनमें बस रह्यो, सुन्दर मूरति श्याम ॥

❁ इति ❁

अथ मनिहारी लीला ।

समाजी वचन–पद ।

एक समय नंद लाडिले, कीनीं मन अभिलास ॥
मनिहारिनको रूप धर, चलिये प्यारी पास ॥
नवल सखीको भेष धर, नखशिख रूप बनाय ॥
निरखतछबिघनश्यामकी, मनमथमनाहिलजाय ॥
घूमघुमारो घांघरो, सारी झालर दार ॥
मुलकट अँगिया कुच कसी, गलमें सोहै हार ॥
गुली बंद अरु पचलरी, सत लडि और हमेल ॥
कर कंकण गजरे बने, भुज बाजूबंद मेल ॥
पायनमें नूपुर सरस, पायलकी झनकार ॥
दृगमें अंजन रेख अति, बेंदी ललित लिलार ॥
कर सिंगार तब नागरी, चुरियां लईं अमोल ॥
चली जात मगमें भटू, मीठे बोलत बोल ॥

समाजी बचन-पद।

कोई चुरियां लेउ कोऊ चुरियां ॥ भांति भांतिकी चुरियां लेकर योगकलाई सारी॥ हरी सुनहरी रंग रुपहरी छंद बंदकी न्यारी ॥ चटक चूहा दंती है चूरो कडेबंद अति भारी॥ चूरी जैपुरी और जैतूनी दाखी अतिही सुधारी॥ धानी सुघड बखानी सबकी ललित करौंदी प्यारी ॥ लहठी ललित मरहठी चुरियां कीमत जिनकी भारी॥ जाल दार गोखरू दार जे पोतन सरस सह्मारी॥ इनतें अधिक और जो चाहौ तैसी दऊं दिखारी॥ मणिमय जटित तडित आभासी रतन जडाऊ कारी॥ द्वार द्वार मनिहारी डोलै बोलत बचन सह्मारी॥सूरदास मनिहारि देखकें मोही ब्रजकी नारी॥

ब्रजनारी बचन--राग गौरी।

अरी मिठबोलनी नवल मनिहारी॥ चूरी लख मुखसों कहै घूंघटमें मुसक्यान॥ मनु शशिबदरी औटतेंरी, फिर ज्यों दरशत भान ॥ बैयां सुघर नरम सोहैं अति शोभा अधिक दई॥ श्याम घटा के ऊपर मानों. दामिनि दमक रही ॥ सुन्दर हार हिये पर सोहै, चंपकली छवि न्यारी॥ सखी पर बेंदीकी छबि, मानों चन्द्र उजारी ॥ सोहत सरस पचलडी ग्रीवा. मोतिन मांग सँवारी॥

मानो श्यामघटा के ऊपर बगुलन पांति सिधारी ॥
ढार सुढार बांहकी डोलन खए बरा अति राजै ॥
कटि पर लटकि रहीहै चोटी, मानो नागिन
कारी ॥ मिठबोलनी नवल मनिहारी ॥

मनिहारी बचन--राग गौरी।

चूरी बडे जो मोलकी नगर न गाहक कोय ॥
मो फेरी खाली परी, मैं सब घर आई टटोल ॥
कोई चुरियां लेउरी० ॥ चुरी नीलमणि पहिरवे नाँहि
न लायक और ॥ भागवान कोइ लै चले. मोय
दीखत एकहि ठौर ॥ कोई चुरियां लेउरी चुरियां ॥
जा नगरी रिझवार नहीं, सौदागर क्यों जाय ॥
वस्तु घनेरी गांठमें बिन गाहक पछिताय ॥

ब्रजनारी बचन--पद

रंग सामरी गुण भरी, धनि मनिहारी कुल
ओप ॥ मुदित होंय तोय देखकें, या पुर गोपी
गोप ॥ मिठ बोलनी० ॥ काहू पै न ठगावही, तेरी
बुद्धि विशाल ॥ लाभ अधिक, कर जायगी भट्ठु
बेच बडे घर माल ॥ मिठ बोलनी ० ॥

मनिहारी बचन--पद

मेरे मालहि लेय सो, मुंह मांगो मोय देय ॥ ऐसोहै
घर कोनको ताको नाम प्रगट किन लेय ॥ मिठ०

ब्रजनारी बचन-पद ।

बेचन हारी कांचकी कहा अधिक इतराय ॥ पौर भूप वृषभानकी, जहां लाखन बस्तु बिकाय ॥ मिठ बोलनी० ॥ पुर बजार देखे नहीं, है जु नवेली नारि ॥ व्यौपारिन अबही बनी, कछु बात न कहत बिचारि ॥ मिठ बोलनी० ॥ तोय भूप घर लै चलूं तू मति होय उदास ॥ लेय लडैती राधिका जो सौदा तेरे पास ॥ मिठ बोलनी ॥

मनियारी वचन ।

यह सुनिके संग है लई, मगन भई अँग अंग ॥ भलो जो मेरो होयगो, लैचल अपने संग ॥ कोई चुरियां लेउ० ॥

ब्रजनारी बचन ।

भान पौरपै लैगई, बात कही समझाय ॥ गुनन प्रगट कर सामरी, तोय लैहों बेग बुलाय ॥ मि० ॥

मनिहारी बचन ।

हों जो मनिहारी दूरकी, आई राजदुलार ॥ बेचूं चूरी चूरला, कोऊ बोल लेउ रिझवार ॥ कोई चुरियां लेउरी० ॥

ललिता बचन ।

चुरी चूडला लेउ कोउ, जोबड भागिन नारि ॥ पहिरे भाग सुहागनी री है कोई रिझवार ॥

ललिता बचन--वार्ता।

अजी श्रीप्रियाजी महाराज आज आपके द्वारपै एक नई मनिहारिनि आई है, जो आपकी आज्ञा होय तो बुलाय लाऊं॥

प्रियाजी बचन।

अच्छो सखी वाको हमारे पास बुलायलावो॥

सखीवचन--राग गौरी।

अरी तन सामरी नवल मनिहारी॥ अरी सखी भीतर चलो प्यारी रही बुलाय॥ भली लगे सो कीजिये भटु जो तेरी बुद्धि समाय॥ चली जों झूमत झुकत सी चोटी लटकत पीठ॥ बचन अमीसे मुख कहै जब मिली ढीटसों ढीट॥ तन सामरी नवल मनिहारी॥

प्रियाजी बचन।

बहुत हँसी नव नागरी, देख्यो रूप अनूप॥ क बेचत है चूडला सखि कै बेचत है रूप॥ तन सामरी नवल मनिहारी॥

मनिहारी बचन।

मोहि खिलौना जिन करो राजकुमारि बलि जाऊं॥ तन थाक्यो वासर गयो मोहि फिरत फिरत सब गाउं॥ कोई चुरियां० ॥

प्रियाजी बचन ।

मुख दीखत है डहडहो लगत चीकनो गात ॥
थाकीकों न बतावही कछु ऊपर कीसी बात ॥
तन सामरी० ॥

मनिहारी बचन ।

होंतो सूधेजीयकी घट बड समझत नाँहिं ॥
तुम्हें कहा दरस्यो कछू मेरे कपट हियेके माँहि ॥
रंग पहिराऊं चूरला चोखो बनज कमाउं ॥ चोखी
प्रीति जो आदरों नहीं कपटी जन पतियाउं ॥
कोई चुरियां लेउ० ॥ मेरे जिय यह टेकहै कहै
देत हों सांच ॥ हों भूखी सनमानकी नाहिं सहों
झूंठकी आंच ॥ कोई० ॥

प्रियाजी बचन ।

आउ आउरी निकट तू देखों बदन निहार ॥
एक बातही में चिरी तू गुसा हिये ते डार ॥ सीतल
हो व्योपारनी तेरो ऐसो काम ॥ तमक नई या
बैसकी तज, तोय फिरनो सब गाम ॥ तन सा-
मरी नवल मनिहारि ॥

मनिहारी बचन ।

मैं आई तक राज घर करन प्रथम पहिचान ॥
मानि लीये बिनही करी ये हांसी हितकी हानि ॥
कोई चुरियां० ॥

प्रियाजी बचन।

कासों तैंने हित कियो अब लग परी न दृष्टि॥
बात कहत उरझे भटू तोहि रची कौन बिधिसृष्टि॥
मणि चौकी बैठी कुमरि कहै बचन समुझाय॥ चूरी
देउ बताय कैं री जैसी मोहिसुहाय॥तन सामरी०॥

मनिहारी बचन।

काढि चुरी अति सोहनी कारी पीरी लाल॥ जो
इच्छाहो आपकी सखि पहिराऊं ततकाल॥ कोई०

समाजी बचन।

चुरी अनोखी देखके प्यारी मन मुसकाय॥
बैठी मनिहारी सामही री दीनी भुजा बढाय॥
जबही करसों करगह्यो कियो मदन अति जोर॥
तन गति वे पथ जानकें री लियो निरख मुख
मोर॥ कोई० ॥

मनिहारी बचन।

तुमलायक चूरी कुमरि भूल जो आई गेह॥
निरखि निरख प्यारी बदन भूल गई सुध देह॥

प्रियाजी वचन–वार्ता।

अरी सखी तेरो बदन क्यों कांपत है, और तेरे
रोमांच क्यों ठाडे है आये हैं॥

समाजी बचन–दोहा।

दरस्यो प्रेम हिये जबहि, देहि उतर अब कौन॥
रूप अमल के चढत ही, महो लालजी मौन॥

वार्ता ।

तब श्रीप्रियाजीके रूपकी छटाकूं देखकें श्री-
लालजी विह्वल होयकें गिरत भये ॥

ललिता बचन ।

ललिता कह यह प्रेम है, कै येहि परस्यो रोग ॥
यतन करोरी देखकें कौन दयो संयोग ॥

चित्रा बचन ।

परम गुनीलो नंद सुत, मैं देखो टकटोर ॥ अहो
प्रिया प्रीतम बिना री ऐसो प्रेम न होय ॥

समाजी बचन ।

सींचे नीर गुलाब जल, प्रिया चिबुक कर लाय ॥
प्रेम गहरके काटिके पुनि पुनि लेत बलाय ॥

समाजी बचन ।

धरे धार बैठी कुमरि- आस पास सुकुमार ॥
लाल जमाही रोंड अँग- दीनी पलक उघार ॥

राग ललित ।

लालको मुखडा देख हँसी ॥ दाबि दाबि मुख
चीर सेहली अँखियां रूप फँसी ॥ सैना बैनी क-
रत परस्पर झांकि झांकि श्रवणलसी ॥ ललित कि-
शोरी वाकी बलि वलि लखि पंक्ति ससी ॥

प्रियाजी बचन-वार्ता ।

अहो श्रीलालजी महाराज आपनें बडो छल
कियो आपतो छल विद्यामें बडेही निपुण हो ॥

❀ दोहा ❀

यश दीनों सबही सखिन, वनिता रूप बनाय ॥
कौन बडाई दीजिये यश वर्द्धन गोकुल राय ॥
यह लीला घनश्यामकी, कहैं सुनैं चितलाय ॥
विघन टरैं आनंद बढैं, श्याम रूप है जाय ॥
मनिहारी लीला भई, पूरन चतुर सुजान ॥
प्रेम सहित जो गावहीं, निज उर आनंद मान ॥
रंगीलाल द्विज गौडनें, संग्रह करी बनाय ॥
पढै सुनैं चित लायके, आनंद उर न समाय ॥

❀ इति ❀

अथ गोरग्वाल लीला लिख्यते

समाजी बचन-ठुमरी ॥

चंदासो बदन जामें चंदनको बिंदा दीये चंदा तन चितवत चंदा छबि छाई प्यारी ॥ चंदनकी कंचुकी चंदनकी बंदनी चंदनको बंगला चंदन तन धाई प्यारी ॥ चंदनकी सारी सोहै चंदनको हार हिये चंदनको लँहँगा सोहै चंदा मुख भाई प्यारी ॥ कहा कहूं कछु कहत न आवै तिहारो मुख देख चंदा गयो है लजाई प्यारी ।

समाजी वचन-रागबिहाग ।

यह कहिके प्रिया धाम गई ॥ चौंक परे हरि जब यह अब यह कहा भई ॥ दोष न होय कछू

सखि मेरो उपमा चन्द्र दई ॥ रिसन भरी नख सिख लौं प्यारी जोबन गर्व भई ॥ लावो वेग मनाय सखीरी यामिनि जात वई ॥ पुरुषोतम प्रभुकी छवि निरखत लावो बेगि सई ॥

लालजी वचन-राग गौंड मलार ॥

वृषभान कुमारि जब देखौं ॥ तब जनम सुफल कर लेखौं ॥ मैं राधा राधा गाऊं । राधा हित वेष बनाऊं ॥ मैं राधारमण कहाऊं । काहे दूजो नाम धराऊं ॥ जहां राधा चर्चा कीजै ॥ तहां प्रथम जान मोहि लीजै ॥ जहां राधा राधा गावैं ॥ तहां सुनिवेको हम आवैं ॥ श्रीराधा मेरी संपत ॥ श्रीराधा मेरी दंपत ॥ श्रीराधा मेरी शोभा ॥ श्री-राधाको चित लोभा ॥ मैं राधाके संग नीको ॥ राधा बिन लागत फीको ॥

पुनिलालजी वचन--रागखेमटा ।

देखी कहूं गलिनमें मो प्राण जीवनी ॥ एहो सुजान प्यारी, मम चूक क्या बिचारी ॥ क्यों दूर गई लतन में, देहु दरश अनंदिनी ॥ जब चलत चाल छबिसों, तब हलत हार उरसों, ठुमठुम चरण धरणि पै, तूहै गति गयंदनी ॥ तेरी छटा चरणकी, निंदित रवि किरनकी, हाहा कुमरि किशोरी, तूहै

सुख समूहनी ॥ यह सुनत बचन मेरो, पाषाण द्र-
वाते हेरो, हित रूप लाल चेरो, एहो दुख निकंदनी

राग देश ।

बाधा दै राधा कित गई ॥ वृन्दाविपिन अ-
छत प्यारी बिन सब विपरीती भई ॥ मेरे मंद
भाग सों काहू पोच प्रकृति सिखई ॥ व्यास स्वा-
मिनी बेग मिलो तो बाढै प्रीति नई ॥

राग पीलू ।

मेरी सुधि आन लेउ प्यारी राधा ॥ तनहू ल-
डैती मनहू लडैती हरत सकल दुख बाधा ॥ कुंज
महल में सदाही बसतहो सुख सम्पति लिये साधा
बिठ्ठल बिपिन बिनोद बिहारी सर्वस प्राण अगाधा

राग सोरठ ।

राधा प्यारी देखी है चित चोर ॥ लागी काहू
ठौर मैने देखी है चितकी चोर ॥ चन्द्र बदन मृग
लोचन राधे जैसे चन्द्र चकोर ॥ नई प्रीति सों
सब रस बान्यौ जोबन भरत हिलोर ॥ पायन में
नूपुर धुनि बाजें गज गति चलत मरोर ॥ याछबि
निरखि मगन भये मोहन गावत दास किशोर ॥

राग बिहाग ।

कहुं देखीरे इत जात रूप गरबीली प्यारी
राधा ॥ चंपक बरण गात मन रंजन खंजन चख

कुरंग मद गंजन अमल कमल मुख ज्योति बि-
लोकत होत शरद शशि आधा ॥ अहो सुभग
मृग सावक नयनी कहुँ देखी प्यारी पिकबैनी
सुखमा सिंधु अगाधा ॥ अहो मराल मानसर
बासक, अहो मलिंद मकरंद उपासक, देहु बताय
मोहि मया कर होत अपत अपराधा ॥ अहो क-
दंब अहो अंब निंब बट, सोहतदुख सुखद छांहयमुना
तट,हरत पापकी बाधा ॥ संतत देत गोप गोधन
सुख, कबहु न सकत सह मेरो दुख, उपकारी बपु
वेद बखाने अबही मौन क्यों साधा ॥ आरत ब-
चन पुकारत लालन, मन जो फस्यो विरह की हा-
लन मदन जालसों बाधा ॥ अतिशय बिकल देख
बनवारी, प्रगट भई बृषभान दुलारी ॥ सूरदास
प्रभुकों लगाय उर पुरवत रसकी साधा ॥

❀ दोहा ❀

कर बिचार कीरत लली, ग्वाल रूप निज धार ॥
छलन चली घनश्याम की, मनमें मोद अपार ॥

राग काफी ।

कर बिचार बृषभान दुलारी ॥ ग्वालरूपधर
छलन लालकों नन्द गामको ओर सिधारी ॥ जहां
हरि अपनी गाय चरावें तहां आप चलि आई ॥
देख रूप मोह मुरलीधर भूल गये चतुराई ॥ ओर

मित्र काहां बास तिहारो नाम काहाहै तेरो ॥ मैंतो तोहि कभू नहिं देख्यो करत सदा ब्रज फेरो ॥ गोरे ग्वाल भानपुरके हम गोधन वृन्द चरावें ॥ रसिक बिहारी गाय हमारी आई भजि कहांपावें ॥

गोरेग्वाल बचन--रागदेश।

गुन सुन वृषभानकुमारिके ॥ जाके लाल तुम रहो आधीनवहतो गृहते सटक बन रहत अटक नहीं मानत हटक इत उतही फिरै ॥ ऐसीफिरै इतरात नहीं काहूको सुहात मन माने जित जात नहीं नेंक डरै ॥ बेटी बडेकी कहावे दधि बेचवे को जावे ताहि लाजहू न आवे सब नाम धरें ॥ एक मेरी सुनि लीजे ऐसी नारि ना पतीजे ब्याह कहूं जासों कीजे तेरो चित्त हरै ॥ जाकी मुखउजियारी देख री झोगे बिहारी पियो बारबार पानी जब प्रीत करै ॥

लालजी बचन--रागदेश।

सखा तुम बोलोन बात बिचारी ॥ कोंनसी ऐसी बाल जगतमें जैसीहैं वृषभान दुलारी ॥ भानु नगरके बसन हार तुम प्यारी की अनुहारी ॥ रवि-शशि कोट मदनहूकी छवि दीजै तुम पर वारी ॥ कहौ कौन सों ब्याह करौंमैं रची कवन विध नारी ॥ करत बास मेरे हिरदेमें कीरत कुमारि दु-लारी ॥ प्रेम बिबस कछु सुरत रहीनां तनकी दशा

बिसारी ॥ लिये लगाय वेगि उर प्यारी तब हंस रसिक बिहारी ॥

लालजी बचन-रागदेश ।

सखीरी मैंहूं नंदकिशोर ॥ मैं दधि दान लेत वृन्दावन रोकतहूं बरजोर ॥ यह जो माननी मान कर बैठत बिनती करूं कर जोर ॥ पुरुषोत्तम प्रभु मैंहूं रसिकवर यह मेरो चित चोर ॥

दोहा ।

आपसमें दोऊ हरष, भुज भर कंठ लगाय ॥
ग्वाल रूप तजि राधिका, मिलि तुरत हरषाय ॥
यह लीला रस प्रेमकी, प्रेम परीक्षा मान ॥
सुनें संत चित लायकें, पावें मुक्ति निदान ॥

❀ इति ❀

अथ मुदरिया लीला लिख्यते ।

माथे पै मुकट श्रुति कुंडल बिशाल लाल अलक कुटिल सो आलिन मद गंजनी ॥ काछिनी कलित कटि किंकणी विचित्र चित्र पीतपट अंगसों बिराजे द्युत बैजनी ॥ दीन्हे गल बाहीं प्रिया प्रीतम बिहार करें अति अनुराग भरी आईं नईं द्वैजजी ॥ कहैं जै दयाल प्रभु मेरो मन मोहिलियो मन्द मन्द बाजत गोविन्द पाय पेंजनी ॥

लालजी बचन--राग कान्हरा।

कहां करते मुंदरिया डारी ॥ मैं बलि जाउं बताय किशोरी तें कबते न निहारी ॥ आवत हैं भुज अंसन दीने एहो छैल बिहारी ॥ जो देखी तो मोते कहिये प्रमुदित होत कहारी ॥ चोरी चपल लगावत मोकों न्याव करो तुम प्यारी ॥ वृन्दाबन हित रूप दरश परी लाल फेंट जब झारी ॥

राग प्रभाती।

गहनों तो चुरायो तैनें कैसे यादो रायको। हाथकी अंगूठी लीनी तोडा लियो पायको। माथेको सिरपेच लीनों रतन जडावको ॥ गाम तो बरषानों कहिये श्रीसुख धामको ॥ लालजी को सासरो श्रीराधेजीकी मायको ॥ लैलैकें तो भाग आई फेरि नहीं पायगो ॥ सूर श्याम मदनमोहन फेरि गढवायगो ॥

राग आसावरी।

मोहिनीरूप बनायो हरिनें बानों ॥ बांहवरा बाजूबंद सोहै छला छाप गुस्तानों ॥ मुख भरपान सीक भर सुरमा लै दर्पन कान्हा मुसकानों ॥ माय यशोदा यों उठि बोली तू क्यों बनों जनानों ॥ मोय छलि गई वृषभान किशोरी वा छलिबेको बरषाने मोय जानों ॥ बरषाने की कुंज गलिन में

कान्हा फिरै दिमानों ॥ भान रायकी पौरि बूझ कै वाही गुजरिया सों कान्हा जाय बतरानों ॥

प्रियाजी बचन राग दादरा ।

तुम या गाम कहां रहो प्यारी ॥ हम कबहू देखी न सुनीहै यह शोभा छबि रूप उज्यारी ॥ नख सिखलों श्रृंगार मनोहर अधर रची पानों-की लाली ॥ नारायण कहो प्रगट खोलके बात न राखी बीच बिचाली ॥

मोहिनी वचन सवैया ।

मन मोहन लाल बडो छलिया सखि बारूके भीत उठावत है ॥ कर तोरत है नभकी तरियां चट चन्द्रमें फंद लगावत है ॥ जहां पवन न जाय सके मुरलीधुनि की तहां दूती पठावत है ॥ कहूं चोर कहूं दाधे दानी बनें कहुं शाह लली बनआवत है ॥

प्रियाजी बचन-काबित्त ।

कौन रूप कौन रंग कौन शोभा कौन अंग कौन काज महाराज त्रिया भेष कियेहो ॥ नाकहूमें नथ हाथ चूरिन भरन भरे कानन में करनफूल वेंदी भाल दिये हो॥चन्द्रहार उर बिराजे चम्पकली कंठसाजे मुकटको उतार ओढ चूनरी को लियो-है ॥ नारायण स्वामी देख चीन्ह गई प्यारी भेख खिल २ हँसत हँसत राधे अचरा मुख दीयो है ॥

इति ।

अथ मालिनलीला लिख्यते ॥

समाजा बचन-दोहा ॥

एक समय नंद लाडले, कीनो मन अभिलाष ॥
मालिन रूप बनायके, चालिये प्यारी पास ॥
रूप अनूप बनायके, डलिया अधिक सजाय ॥
बरषानेमें आयके, बोले अति हरषाय ॥

मालिन बचन-पद ।

कोई फुलवा लेउरी फुलवा ॥ नील बरन पीरे पचरंगी रंग रंगके हरवा ॥ चुनि चुनि कली रमेलि चमेली चटको दौना मरुवा ॥ ललित किशोरी बिमल बिमल भई परेऊ पियरवा गरवा ॥

समाजीबचन-रेखता ।

सुन्दर सलौने श्यामने मनमें मते उपाये ॥ धर करके रूप मालिन वृषभान पौरि आये ॥ लहंगा कसवको पहिरे ओढे सुरंग सारी ॥ कुच कंचुकी को देखके मन जातेहै लुभाये ॥ महावर मजीठ महंदी रुचि दस्तसों लगाई ॥ तरुवनकी लाली देखके सब लाल मन लजाये ॥ गल हार और हमेल गुली बंद क्या सजा ॥ गल मोतियों की मालमें हीरे अजब लगाये ॥ पायनमें पहिरे नूपुर पायल अजब सम्हारे ॥ बिछुओंकी धुनिको

सुनिके बाजे सभी लजाये ॥ दस्तों में दाखी चूडी कंकन जडे भये ॥ सिर फूलकी डलिया सजी क्या खूब नूरछाये ॥ जबसे ये रूप रंगी नैनोंसे भरके देखा ॥ सब छोड जाल जगका चरणोंमेंध्यानलाये ॥

सखीबचन बार्ता ।

अजी श्रीप्रियाजी महाराज ॥ आज आपके नगरमें एक बडी अनोखी मालिन आई है ॥

❀ पद ❀

अरी एक मालिन पौरी आई ॥ नानाविधिके फूल बतावै तुमरे कारण लाई ॥ रंग सामरो वा मालिन को नीलमणिन की झाँई ॥ हीरा लाल जवाहिर पहिरे बडे गोपकी जाई ॥ तुमरी रुची होय तो प्यारी अबही लाउं लिवाई ॥ अरी० ॥

प्रियाजीबचन-बार्ता ।

अच्छो सखी, वा मालिनकूँ बुलायला ।

सखीबचन-पद ॥

मालिन प्यारी तोय बुलावै ॥ डलिया अधिक सजीहै तेरी सरस फूल मुख गावे ॥ तेरो रूप अनूप देखके मनमथ मनहिं लजावै ॥ चलो हमारे संग सखीरी जो तुमरे मनभावै ॥ होय प्रसन्न शिरोमणि राधे मन वांच्छित फल पावै ॥

मालिन बचन-वार्ता ॥

अच्छो चलो सखी प्यारीजीके पास चलैं ॥

❀ प्रियाजीबचन ❀

❀ पद ❀

मालिन मधु भरे नैन रसीले ॥ कहो कौनहै तात तिहारो कौन तुह्मारी माई ॥ कहासुन्दरी नाम तिहारो कौन गामते आई । मालिन मधु भरे नैन०॥

मालिनबचन।

अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई ॥ श्यामसखी है नाम हमारो धुर गोकुल ते आई ॥ मालिन मधु भरे नैन रसीले ॥

प्रियाजी बचन।

तुमरो रूप देख मन उमग्यो सुनि मालिनकी जाई ॥ हम लेंगे सब वस्तु तुह्मारी कहा कहा सौदा लाई ॥ मालिन० ॥

चम्पाकली चमेली मालती फूलनहार बनाई ॥ सेवती गुलाब सुमन के झुमका तुमरे कारण लाई ॥ मालिन० ॥

प्रियाजी बचन ॥

कित मथुरा कित गोकुल नगरी कित बरषाने आई ॥ कौन बतायो नाम हमारो किनयह ठौर बताई ॥ मालिन० ॥

मालिन बचन ।

तीन भुवन में सुजस प्रटगहै अरु तुमरी ठकुराई ॥ राधानाम रूपकी रासी सो कारति की जाई ॥ मालिन० ॥

प्रियाजी बचन !

चंचल चतुर सुघड तू मालिन हम जानी चतुराई ॥ फूलन हार बन्यो अति सुन्दर और कहा तूलाई ॥ मालिन० ॥

मालिन बचन ॥

सुन्दर तेल फुलेल उवटनों अतर सुगंध मिलाई ॥ जोरुचि होय सो ले मेरी प्यारी बेर भई मो आई ॥ मालिन० ॥

प्रियाजी बचन ।

बेर बेर तू जिन कर मालिन देहौं माल अघाई ॥ हीरालाल रतन मणि माणिक भूषन बसन बनाई ॥ मालिन० ॥

मालिन बचन ।

बडे घरन की मालिनहूं मैं धनकी रुचि मोय नाहीं ॥ हम सौदागर प्रेम रतनके औरन कछू सुहाई ॥ मालिन० ॥

प्रियाजी बचन !!

फूल फूल की बेचन हारी कहा अधिक इतरा-

ई ॥ लेउ लेउ फूल कहत गलियन में हमते करत बडाई ॥ मालिन० ॥

मालिन बचन ।

सुकृत जन्म के फलते भामिनि हमरे फूल सुहाई ॥ पचि पचि हार गये सुरनर मुनि ऐसे फूलन पाई ॥ मालिन० ॥

प्रियाजी बचन ।

इन फूलन को खोज थकित भये सुर नर मुनि पति राई ॥ एसो फूल कहो मृग नयनी कौन बागते लाई ॥ मालिन० ॥

मालिन बचन ।

त्रिभुवन पति जगदीश दयानिधि नंद सुवन यदु राई ॥ वा मोहन के बागते प्यारी नवल फूल चुनि लाई ॥ मालिन० ॥

प्रियाजी बचन ।

सुनतहि नाम मदनमोहन को वेस बदन मुसक्याई ॥ आज की रैनि रहो मेरे घर भोर भये उठि जाई ॥ मालिन० ॥

समाजी बचन ।

सांची प्रीति देख प्यारी की मंदमंद मुसक्याई ॥ ये छबि देख मगनभये सुर नर सूर सरन बलि जाई ॥ मालिन० ॥

दादरा ।

मेरीफुल बगियामें तुम चलो प्यारी ॥ गेंदा गुलाब गुल डोरीकी क्यारी केशरकी फूली ब हारी ॥ चम्पा चमेली गुलाब केवडा फूल रही फूल वारी ॥ सवही सिंगार करो फूलनके ललित किशोरी पर बलिहारी ॥

मालिन बचन--राग कालिंगडा ।

राधा तेरे अंगमें फूलन की बहार है ॥ फूलन के बाजू बंद फूलन के गजरे फूलन के सोहैं गल हार है ॥ दोना मरुआ राय चमेली सब फूलन में वहार है ॥ सूर श्याम कहत मन मोहन सब गोपिन में गुपाल है ॥

पद ।

मालिन आज लाई हार बनाय के ॥ एरी मालिन सुघड बहुत है तूतो आज लाई हारबनायके ॥ सबही सिंगार कीयो फूलनको तोम तोम और कहा कहूं तेरो बृतांत आज लाई हार बनाय के ॥

पद ।

प्यारी मैंतो तुम्हारी मालिनियां ॥ मेरी फुल बगिया में आवो कि नाहीं बहुत दिननसों आस लगी है सींच सींच भई भामिनियां ॥ सुफल करी पद पद अंकुशदे आली किशोरी भामिनि-

यां ॥ सांची प्रीति देख प्यारी की रैन की सैन ठहराई ॥ ये छबि देख मगन भये सुरमुनि सूर श्याम बलि जाई ॥

रेखता ।

मन हरि लियो है मेरो वा नंदके दुलारे ॥ मुस क्याय के अदासो नैनके कर इशारे ॥ एक दृष्टि ही में वाने जाने कहा कियो है ॥ नहीं चैन रैन दिन है वाके बिना निहारे ॥ चीरेके पेचवाके सिर मुकट झुकि रह्यो है ॥ कटि किंकणी रतन की नूपुर बजत है प्यारे ॥ बेसर बुलाक सोहै गल मोतियों की माला ॥ कंकण जडाऊ करमें नख चन्द्र सों उजारे ॥ छबि आरसी में सुन्दर चमके कपोल दोऊ ॥ बरछी समान लोचन नई सान पै सम्हारे ॥ फूलों के हाथ गजरे मुख पान की ललाई ॥ कानोंमें मोतीवाले कुंडल हू झलकें न्यारे ॥ लख श्याम की निकाई सुध बुध सकल गँवाई ॥ बौरी बनाय मोकों कित गये बंशी वारे ॥ जंतर अनेक मंतर गंडा तबीज टौना ॥ स्याने तबीब पंडित कर कोटि जतन हारे ॥ नारायण इन दृगनने जबसे ये रूप देखा ॥ तब से भये हैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥

इति।

अथ अनुराग लीला लिख्यते

समाजी बचन–दोहा ।

एक समय नव नागरी, घट भरिबे के काज ॥
गई जमुनतट मुदित मन, जहां बसत ब्रजराज ॥
निरख रूप घनश्याम को, भई मगन मन बाल ॥
मंद हसत मुसक्याय के, चित चोर्यो नंदलाल ॥
फिरत बावरीसी सखी, बिबस नेह नंदनन्द ॥
तन मनकी कछु सुधि नहीं, परी बिरह के फंद ॥
खान पान भोजन बसन नारायण सब त्याग ॥
रँगी रंग नन्दलाल के कर बहु बिधि अनुराग ॥

सखी बचन–राग सोरठ ।

तोहि डगर चलत कहा भयोरी बीर ॥ कहुं पगकी पायल कहुं सिरको चीर ॥ भई बावरी न सुध कछु बुध शरीर ॥ तेरे मतवारे सम झूमत नैन ॥ मुख भाखत है अति बिरह के बैन ॥ मानों घायल काहूनें करी दृगन तीर ॥ मोसों नारायण जिन राखो दुराव ॥ जातु कहै सो मैं करूं उपाव ॥ जासों रोगहु घटै हटै सकल पीर ॥

वार्ता ।

अरी सखी आज तू उदास क्यों है और एकली बेकली बात क्यों करत है ॥

सखी बचन राग रामकली ।

आलीरी तू क्यों रही मुरझाय ॥ जमुना गई-नीर भरनेको आई रोग लगाय ॥ कैसो कारो चं-दउजारो टौना डारगयौरी ॥ करो उपाय सखी अबमेरो ब्रज निध बैद नयोरी ॥

प्रियाजीबचन-राग भैरवी ।

मोर मुकट बंसी बारेनें मन मेरोहर लीनों ॥ हों जो गई जल भरवे सजनी बीच मिल्यो रस भीनों ॥ मोकों लख मुसक्याय सामरो चितवन में कछु कीनों ॥ बिबस भई जल भरन बिसर गयो घडा धरनि धर दीनों ॥ लोकलाज कुल-कान बिसरगई तन मन अर्पण कीनों ॥ कृपा स-खी भई रूप दिवानी अधर सुधारसदीनों ॥ श्री-गोपाल धार उर अपने जनम सुफल कर लीनों ॥

राग सोरठा ।

मैंनें देखीरी आज मोहन की हँसन ॥ अधरन पर अद्भुत अरुणाई मुतियन की लर पंक्ति दस-न ॥ वा शोभाके दृग रहे प्यासे ॥ पानी लगे भर भरके पसन ॥ नारायण तबसों मोहि सजनी सुध नरही निज असन बसन ॥

सवैया ।

हों सखी आज बडे तरके भरिवे घट जमनाकों

पग धारो॥त्यों कबको धों खडोरी हतो पद्माकर मोहित मोहिनी बारो ॥ सांकरी खोर में कांकरी की कर छोट चल्यो हरि ओट निहारो॥ ताक्षण ते इन आंखन ते नकढ्यो वह माखन चाखन हारो ॥

सखीबचन वार्ता ।

अरी सखी ऐसी अधीर क्यों होतहै अभी काहू बैद स्याने कूं बुलायके तेरौ जतन करावेंगी सखी तोय वा कारेकी नजर लगी है ॥

प्रियाजी बचन-रामकली ।

मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जानें कोय ॥
शूली ऊपर सेज पियाकी का बिधि मिलना होय॥
घायल की गति घायल जानत जा तन लागी होय॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर बैद समलिया होय ॥

कवित्त ।

काहे कों बैद बुलावत हो मोहि रोग लगाय न नारी गहोरे ॥ वह मधुआ मधुरी मुसक्यान निहारे बिना कहो कैसे जियोंरे ॥ चंदन लाय कपूर मिलाय गुलाब छिपाय दुराय धरोंरे ॥ और इलाज कछू न बनें ब्रज राज मिलें सो उपाय करोंरे॥

सखी बचन--वार्ता

अरी सखी या गाँवमें ऐसो बैद रहैहै जो तुरत अच्छीकर जायगो? जो तू कहै तो बुलाय लाऊं ॥

प्रियाजी बचन--राग देश ।

नारी हू न जानें बैदा निपट अनारीरे ॥ बूंटी सब सूंटी परी औषधि न कारीरे ॥ जाउ बैद घर अपने पीर मेर भारीरे ॥ जमुना किनारे ठाडी ओढि कसूमी सारीरे ॥ नंद जू को ढोटा मोय नयन भर मारीरे ॥ श्रीगोकुल को बैद समलिया वाय बुलाय दिखाओ मेरी नारीरे ॥ पुरुषोतम प्रभु बैद हमारे वाही छबीले सों लागी मोरी यारीरे ॥

सखी बचन--वार्ता ।

अच्छो सखी हम लालजीकूं ही तुमारे पासलामें हैं

सखी बचन-बिहाग ।

हमारे संग नेंक चलो नंद लाल ॥ जबसे दृष्टि परे तुम मोहन बिकल रहत ब्रजबाल ॥ तलफत निशि वासर वाहि बीत्यो पडी बिरह के जाल ॥ मंद हसन मुसक्यान तुम्हारी रही वाके उरसाल ॥ रंगी लाल सुनि बचन सखी के बिहंस चले नंद लाल ॥

समाजी बचन--राग बिलावल ।

सांची प्रीति जानि हरि आये ॥ पूरण नेह प्रगट दरसाये ॥ लई उठाय अंक भर प्यारी ॥ श्रम श्रम श्रम कीनों तनभारी ॥ मुख २ जोरि आलिंगन कीनों ॥ बार बार भुज भर उर लीनों ॥ वृन्दाबन धन कुंज लता तर श्यामा श्याम नवल नवला

वर ॥ सूर श्याम सुख दियो कन्हाई ॥ मानों गई महा निधपाई ॥

प्रियाजी बचन राग बिहाग ।

नाथ मोहि जान चरणकी दासी ॥ बिनदरशन कलपरत न मोहन सदा दरसकीप्यासी ॥ लोक लाजकुल कानबिसारी लोग करत ममहांसी ॥ सबकछु सह्यो लाल तुमकारण पडी प्रेमकी फांसी रंगीलालको दर्शन दीजै नंदनंदन ब्रजवासी ॥

राग बिहाग ।

नैंनतेरमुख देखन कों तरसें ॥ बिन दरसन अकुलातरौंनिदिन छुमछुम दोऊ बरसें ॥ देखत मुख नँद नंद तुम्हारो रोम रोम मम हरषे ॥ रंगीलाल मेरो नेह लग्यो है या मूरतनट बरषे ॥

दोहा ।

प्यारी तू मम प्राण सम, राखों हिरदे माँहिं ॥
पलक एक बिसरूं नहीं, तो बिन कछु न सुहाहिं ॥
यहलीला अनुरागकी, राधा कृष्ण बिहार ॥
रंगी जो श्रवणन करै, सो उतरे भव पार ॥

इति ।

अथ बिसातिन लीला लिख्यते ॥

❀ दोहा ❀

एक समय नन्द लालने, मनमें किया हुलास ॥
नवल बिसातिन रूपधर, चलिये प्यारी पास ॥

राग परज।

कोई लैहो चुन्नी मोती यों कहत बिसातन आई ॥
जबहिगई वृषभान पौर पै ऊंची टेरलगाई ॥ श्याम
पीत और ललित नगीना या घर लायक लाई ॥
द्वार उझकि फिर बाहर आवै आंगन जात सकाई॥
तन ढांके पुनि घूंघट मारै लाज अधिक दरसाई ॥

बिसातिनबचन।

कौनभवन वृषभान ललीको मोसों कहो सहेली ॥
सकुचौं जात राज मन्दरमें आईयहां अकेली ॥

सखीबचन।

कौन गाँवते आई हो तुम सुन्दर सखी सुकुमारी
कौनकाम वृषभानभुवनमें मोसन कहोजु प्यारी ॥

बिसातिनबचन।

मथुरा पुरते आई हूं मैं जात बिसातिन मेरी ॥
जो कोऊ लेय मोल मुक्ता मणि है मो पास
घनेरी ॥ हीरा लाल माल मोतिनकी लहसनियां
और पन्ना ॥ पौहकरराज नीलमणि माणिक
मेरे भरे टिपरना ॥

समाजी बचन ॥

सो सुनि गई भीतरें बनिता राधे बात जनाई ॥ मथुरा पुरते एक बिसातिन अति सुन्दर बनि आई ॥ खुलत साँवरेपानी सजनी देखत ही बनि आवै ॥ ताको रूप अनूप देखके मनमथ मनहिं लजावै ॥ लाल घाघरो सुरंग चूनरी ओढ़ जरद उपरना ॥ हीरा लाल जवाहिर मोती लीनें भेर टिपरना ॥

प्रियाजी बचन ॥

ललिता सों वृषभान दुलारी कीनों जबै मसौदा ॥
लेउ अटा पर बोल बिसातिन कीजे याते सौदा ॥

ललिता बचन ॥

ललिता गई द्वार पै जबही बोली बचन संभारी ॥
तुम्हें बुलाई राधा रानी चलो बिसातिन प्यारी ॥

समाजीबचन ।

ललिता के सुन बचन मनोहर सुख पायौ- मन मांही ॥ भीतर महल अटा के ऊपर चले- श्याम संग जांहीं ॥ चढ़त अटाके ऊपर मोहन मनहा मन मुसक्यात ॥ पहुंचे ढिंग वृषभान सु- ताके चटक भये सब गात ॥ मनिहारीको रूपदे- खके प्यारी अति सुखपायो ॥ धरके हाथ दुलीचा ऊपर बिहँस निकट बैठायो ॥ कुशल पूछ वृषभा-

न लाडली बीडा लै कर दीनों ॥ प्रेम सहित आनन्द मानके बिहस बिसातिन लीनो ॥

प्रियाजी बचन॥

राधा कही बिसातन सों तू कौन:गाँवते आई ॥ कहा नाम है तेरो सजनी धनि बिधितोहि बनाई ॥ सबही भांति ऊजरी सजनी का मुखकरों बडाई ॥ तोहि बसाऊं अपने भवन में जो मन होय सचाई॥ कैसे चुन्नी मोती तोपै कीमतदेउ बताई ॥ है लघु बैस कौनपै सीखी परखन की चतुराई ॥

बिसातिन बचन ॥

खोलि पिटारी प्यारी आगे प्रगटी प्रभा अपारी ॥ मानों एक ठौर धर राखे इन्द्र बधू नभतारी ॥ येदेखो मोती अति सुंदर रतनाकर से आये॥ उज्जल माल मोलके आगर तुमाहित हम न मंगाये ॥ ये हीराहैं पदमपुरीके उजले ललित हरीरे ॥ मोती चूरा बनस्पती के लाजवर्द और पीरे ॥ पोहकर राज लसानियां पन्ना नीलम और पिरोजा ये आये हैं हिंगलाज से सबसे बडे सिरोजा ॥ ये देखो दुलरी और तिलरी बिंदिया काशी केरी॥ अति सुंदर दामिन से दमकें शोभा देत घनेरी ॥ करन फूल बेसर और पत्तेलटकन अधिक सुहाये॥ दूर दूर ते मैंने प्यारी तेरे काज मँगाये ॥ भांति

भांतिकी डिबिया छल्ला आरसि मणिन जड़ीहैं ॥
श्रीराधेके आगे धरके बोलो भेट करीहैं ॥

प्रियाजी बचन ।

कहा नाम है तेरो सजनी कहा नाम महतारी ॥
कौन गाम सुसरार तिहारी मोसों कह ब्रजनारी ॥

बिसातिन-बचन ।

मेरो नाम सामरी सजनी पिता सूरसुत कहि-
ये ॥ माताको है नाम देवकी मथुरा पुरमें रहिये ॥
कुंदनपुर सुसरार हमारी नृप भीषम के देशा ॥
कहिहों सत्य सत्य मैं तुमसों मानो मती अंदे-
शा ॥ उत्तम क्षत्री की प्यारी सुन यह व्यौपार ह-
मारे ॥ लीजे मोल तुम्हें जो भावै आई दैनतुमारे ॥
देश देशके रतन लाडिली देश देशकी चीजें ॥
देश देशके माणिक मोती लाई सो तुम लीजें ॥

प्रियाजी बचन ।

तब वृषभान सुता हंसबोली सुनियो सखी सयानी
ये जो लाई वस्तु पियारी सोमेरे मन मानी ॥

बिसातिन बचन ।

यह हैगी कंचुकि मनोहर कंचन सूत सम्हारी ॥
पहिराऊं अपने कर कमलन पहिरौ राधा प्यारी ॥
ये हैं पिंग राजके कंगना हीरा जटित बनाये ॥
पहिर देखिये राधा प्यारी कैसे लगत सुहाये ॥ ये

दुलरीहै रतन जटित सखी पहिर इन्हें तुम देखो ॥
गोरे गात लगत अतिसुन्दर सबसे अधिक विसे-
खो ॥ ये देखो तुम ललित मूंदरी लागे हीरे सोने
पहिरे ते एसी तुम लगिहो मानों आई गौने ॥
ये बाजूबंद अवध पुरी के ब्रह्मा वर्त की डोरी ॥
कुरुक्षेत्र की झिबिया जिनमें सो लीजै तुम गोरी ॥
ये देखो मथुराके घुंघर सोने अधिक बनेहैं ॥ पहिर
देखिये प्राण पियारी छुम छुम बजत घने हैं ॥

समाजीबचन।

सबरो माल बिसातिनियाने प्यारीको दिखलायों
देख देख वृषभानललीके मनहीमन अति भायो ॥

प्यारी बचन।

सुनिबोली मुसक्याय राधिका सुनों सामरीमोसों।
कहिये मोल माल अपने को मैं पूछत हों तोसों॥
जोंन जोंन गहिने जित जितने जुदे जुदे कर राखौ।
मोकों देउ सुनाय सामरी लपटझूंठ जिन भाखौ ॥

बिसातिन बचन।

जो जितने को नगद खरीदो सो सब तुम्हें
बतैहों ॥ सत्य सत्य मैं कहों लाड़िली तुमसेनफा
नलैहों ॥ लख लख टका मौल है इनको सत्य कहों
मन खोली ॥ ये तीनों हैं बडे मोल के चुट बंदबेसर
चोली ॥ यह पहिरो तुम कुमारि राधिका मैं निज

कर पहिराऊं ॥ दामन की कछु अटक नहीं है दीजे जब फिर आऊं ॥ सखी अनोखी वस्तु मिलैगी सो तुमको लै ऐहों ॥ सौगंद करत आपकी कहि हों और न काहू देहों ॥ तुम सम प्यारी और न कोऊ ये निश्चय कर जानों ॥ सबके दाम आयकर लैहों मेरो मन अति मानों ।

समाजी बचन ॥

यों कहिके वृषभान सुता को अपने ढिंग बैठाई ॥ बेनी गूंथ फूल की सुन्दर हंस बेसर पहिराई ॥ चोली कस पहिरी छतियन पर मनमें अति सुख मानी ॥ आप देखिये राधा प्यारी ढीली के सर सानी ॥ अपने कर कंगन पहिराऊं होत बहुत सुखहेरी अति खुल परत देख राधेतू उपमा कहा कहोंरी ॥ अरस परस राधे सो करके फेरि जवाहर खोली ॥ लीजे माल बिसाल राधिका चीजें बहुत अमोली ॥ एक एक नग लाख टका को अरखपरख तुम लीजे ॥ जब आऊंगी गाम तुह्मारे तबै दाम मोहि दीजे ॥ लैहों दामलाडली अपने तुमरे द्वार जब ऐहों ॥ मोको लाभ चौगुनों हैहै तुम संग कहाठगैहों ॥ कहत सामरी सुनिये राधा जो अनुशासन पाऊं ॥ तो मैं जाऊँ भवन आपनो काल यहां फिर आऊं ॥

प्रियाजी बचन ॥

बिहंस कह्यो वृषभान किशोरी सुनि सखि बात हमारी ॥ कौतुक एक दिखावें तुमको आज यहां रहि जारी ॥ नंद गाम जसुधाको नंदन नन्द सुवन इकहैरी। तिनकोदरसनकरत सामरी मनमें तू सुख पैहैरी ॥ कोटि कोटि मनसिजकी शोभा देख देखके लाजे ॥ और कहाँ लों कहिये सजनी मूरति अधिक बिराजे ॥ पहिरे कर कंचनके चूरा मुरली करमें सोहै ॥ बेणु बजावत नाचत गावत सबही को मन मोहै ॥ तीन लोक दस चार भुवनमें ऐसी छबि नाहिं आली ॥ जैसी छबि है नंद नंदन की जो कहिये बनमाली ॥

बिसातिन बचन ॥

भलीबात तुम कही पियारी मेरे नयन सिराने ॥
काल दिवारीको दिन आवत मोहि बेगघर जाने ॥
पानदीजिये मोहि बिदाको मैं अपने घर जाऊं ॥
तुमरी सील सुघडई प्यारी मथुरापुर पहुंचाऊं ॥

ललिता बचन ॥

पान देत ललिता पहिचाने बिरजाए सैनबुझाई ॥
यहतो मोहि कछू लागतहै लंगर ढीट कन्हाई ॥

समाजी बचन।

बिरजा गई तबै मोहन ढिग ऐसी बात बिचा-

री ॥ घुंघरू के मिस पाँय पकरके मुखसों बचन उचारी ॥ अरसपरस घुंघरुनको करके ऊंचोपांव उठायो ॥ देखत पदम कहन अस लागी सुंन्दर भेष बनायो ॥ बिरजा सखी सबनते चंचल फिरत मदनमद माती ॥ पकरे हाथ बिसातिनि यांके जाय टटोली छाती ॥ हाथ लगावतही चोली ते खिरे धर्म जंजीरा ॥ दांत अँगुरिया दाबिप्रिया कहै धन्य धन्य बल बीरा ॥

प्रियाजी बचन ॥

मेरे काज लाज सब त्यागी भेष जनानों कीनों। आय यहां बरषाने मोहन मोय बडो पन दीनों ॥ जाको जपत शेष और शंकर सुर नर सभी ब-डेरे ॥ सो तुम होत फिरतहो मोहित ब्रज वनि-तनके चेरे ॥ आनंदके कंदन जग वंदन तुमहो रूपकी राशी ॥ ऐसो रूप न धरिये मोहन मैं चरणनकी दासी ॥ ब्रजकी नारि चबाव करेंगी जो कहु ये सुन पावें ॥ घर घर खबर करें मन मो-हन ऊधम बहुत मचावें ॥ ताते जाउ भवन अपने कोसुनिये मदनगोपाला ॥ हमें तुमें अब भेटहोयगी नवल कुंज नंदलाला (यों कहत बिसातिन आई)

समाजी बचन ।

अरस परस राधा मोहन कर नैन सों नैन मि-

लाये ॥ नंदनंदन आनंद मानके नंद गाममें आये ।

दोहा ।

लीला रसिक बिनोदनी, राधा कृष्ण बिहार ॥
पढ़ै सुनैं चित लायके, हो भव सागर पार ॥

इति ।

अथ मान लीला लिख्यते ॥

समाजी बचन-दोहा ।

सांझ समय बन बासते, आवत सुन्दर श्याम ॥
चन्द्रावलि छबि निरखके, मुदित भई मनबाम ॥
हाथ जोर पटका पकड, कहन लगीयों बाम ॥
आज भवन मेरे बसो, कीजे पूरन काम ॥

लालजी बचन--वर्ता ।

अच्छो चल सखी आज तेरे भवनमें निवासकरैंगे

चन्द्रावलि बचन-पद ।

चलौ तौ बतादूं बिहारीजी हमारे आंगन में फूली केशर क्यारी ॥ राय चमेली दोंना मरुआ रंग रंगीली फुलवारी॥ यह मति जानो झूंठ कहतहै मोंहन सोंह तिहारी ॥ रसिक प्रीतमते लगन लगी है प्रीति पुरातन प्यारी ॥

समाजी बचन--राम कली ।

आज सखी मोहन रंग राती ॥ बिलसी रैनि

लाय निज छाती ॥ मौंतिन सकल सिंगार ब-नायो, गातसनेह सनेह लगायो, दरपण लेकर मोहि दिखायो, बतियां करहु जो मोहि सुहाती ॥ पट भूषण जो मम तनसो है, सो हरि एक एक सब जोहै, पुनि उरलाय देख मोहि मोहे, करत बि-हार बीति गई राती ॥ मोद निकेत कह्यो नहिं जाई, रजनी भर सुख दीन्ह कन्हाई, हरिविलास लखि नभ अरुणाई, उठे श्याम अंखियां अलसाती

पियाजी बचन सखी प्रति–राग पर्ज ।

आया न रैन पियारा मोहन ॥ अंजन दृग सिर खौर सम्हारी, कर महंदी पग पायल धारी, देह सनेह गेह सुर पुर सम जो अज नेह विसारी ॥ मोहन ॥ अपर अलंकृत सब तन धारे, नख सि-खलो सब अंग सह्मारे, वृथा सिंगार गयो सब सजनी नाहीं नयन निहारे ॥ मोहन ॥ सुमन सु-गंध सेज मुरझानी, तारे गिन गिन रैनि बिहानी, क्षण मंदिर क्षण द्वार सखीरी प्रेम जाल गल डारी ॥ मोहन ॥ मग जोवत यामिनि सब बीती, उन बिननैन लियो मोय जीती, हरिविलास अब हृदय बस्यो है प्रीतम नंद दुलारा ॥ मोहन ॥

समाजी बचन–दोहा ।

ताही क्षण ललिता सखी, कौतुक सबै निहार ॥

प्यारीके निज भवनकूं, चली सो सिर उरधार ॥

प्रियाजी बचन-वार्ता ।

अरी ललिता सखी अरी बीर तुमनें आज श्रीलालजी महाराज हू देखे हैं ॥

ललिता बचन-वार्ता

अजी श्रीप्रियाजी महाराज मैं अभी देखके आई हूं, श्रीलालजी महाराज तो आज चन्द्रावलिके घर बिराजे हैं ॥ प्रियाजी बचन-दोहा ।

यह सुनि प्यारी रिस भई, भृकुटी लई चढाय ॥
ललिता सों कहिवे लगी, लाओ बेग बुलाय ॥

ललिता बचन-वार्ता।

अरी चन्द्रावलि सखी अरी बीर तेरे घर श्रीलालजी महाराज तो नहीं आये हैं ।

चन्द्रावलि बचन-वार्ता ।

अरी बीर मेरे ऐसे कहां भाग हैं जो मेरे घरमें श्रीलालजी महाराज पधारेंगे ॥

ललिता बचन- राग कालिंगडा ।

तेरे भवन यह कोंन बिराजे ॥ बोलत बचन मनोहर तो सों रुनक झुनक नूपुर धुनि बाजे ॥ मोर मुकट की झाँई लगत है जाहि देखत मनासिज हू लाजे ॥ नारायणको कपट करत तू इन्है बुलावत है किहिं काजे ॥

वार्ता ।

अरी सखी तू क्यों झूँठ बोलतहै, देख तेरे घरमें मोर मुकट कीसी झाँई मालूम परत है ॥

चन्द्रावलि बचन-वार्ता।

अरी सखी मेरे घरमें लालजी नाहीं हैं मोर बैठो है ॥

ललिता बचन ।

अरी ठगनी ये मोर तो नाहै ये तो श्रीलालजीहैं

दोहा ।

घर छिपायनँदनन्दकों, तिन्हें बतावत मोर ॥
माल परायौ मारकै, साह बनै है चोर ॥

सखीबचन - वार्ता ।

अजी श्रीलालजी महाराज आपकूँ श्रीप्रिया जी नें याद कीने है सो आप हमारे संग चलो ॥

लालजी बचन-वार्ता ।

अच्छो सखी चल पर ये बात श्री प्रियाजी सों मति कहियो ॥

सखी बचन--वार्ता ।

हे श्री लालजी महाराज मैं कहा कहूंगी वहां काहूने पहिलेही सब समाचार पहुंचाय दिये हैं और आपके ऊपर श्रीप्यारीजी मान करके बैठी हैं सो आप मेरे संग चलो जो कछु मोपै बनेगीसो तुम्हारी सिपारस करूंगी ॥

वार्ता।

श्री लालजी महाराज तो ललिता सखी के सँग चले और वहां श्री प्रियाजीने सखीन सों कही

दोहा।

सखियन सों प्यारी कही, खडी रहो तुम द्वार ॥
मंदिर में आवै नहीं, कपटी नंद कुमार ॥

दादरा।

सखी नंद लाला आवन नहीं पावें ॥ भीतर चरण धरण जिन दीजो चाह जिते ललचावें ॥ आपबसै निशि अनत जाय कहुं हमें यहां तरसावें ॥ निलज निठुर निर्दयी निरमोही निडरन नैकलजावें ॥ ऐसेन को विश्वाश कहारी कपटकी बात बनावें ॥ नारायण एक मेरे भवन छिन अंत चाहै जहां जावें ॥

समाजी बचन-दोहा।

सखी संग जब सामरो, आयो मंदिर द्वार ॥
सखी न भीतर जानदे, बरजत बारं बार ॥

लालजी बचन-दादरा।

हमें जिन रोकै नवलब्रज गोरी। मो मनमें यहसांच न आवत रूसी है वृषभान किशोरी ॥ वह तौ एकसे दोऊन जानत सूधी है मनकी भोरी ॥ वाकै तौ छल छिद्रनेक नाहिं तूही है कलंकखोरी ॥ बीचहितै क्यों बात बनावै रिससों भौंह मरोरी ॥ ना-

रायण बिधकों कहा सूझी तोसी रची घर फोरी ॥

दोहा ।

हे सखी भीतर जानदै, मतरोकै तू द्वार ॥
ज्यों ज्यों बीतत समय मो, हिय दुख होत अपार॥

सखीबचन दोहा ।

कर कर टेढी भोंह क्यों, तुमइतने सरसात ॥
हाथ न आवै जो कछू, करौ अटपटी बात ॥

पद ।

करौ क्यों अटपट प्यारे बात । चलै यहां अब नेकहू नहीं तुम्हारी घात ॥ नाहिन हमरौ दोषकछु जोहम पै रिसियात। भीतर घुसन न दीजियो कही प्रिया यहबात ॥

राग कालिंगडा ।

द्वार पै क्यों ठाडे ब्रजराज ॥ जहां सों आये वहीं जावो तुमरो यहां नहीं कछु काज ॥ लाख भांत सौं बिनती करो तुम एक न मानों आज ॥ नारायण बलिहार तिहारी नेक न आवत लाज ॥

लालजी बचन-पद ।

लाजसों मेरो काज कहारी ॥ बिन प्यारी मोहिकल न परत है इक इक पल बीतत भारी॥ ऐसीकहा चूकभई मोपै तुमसजनी सब देखनहारी ॥ नारायणमोहि बेगबताओ क्यों रूठी वृषभान दुलारी ॥

दोहा ।

बिसमित मनमें लाडलो, कौंन भयो अपराध ।
जासों प्रिया बिनोदनी, बैठी साध समाधि ॥
क्योंजी क्यों कछु नागरी, तुम जानी यह बात ॥
कहा जानें कहा बात पै, रूसी कै इतरात ॥

सखी बचन--दोहा ।

हमतो कछु जानी नहीं, कौंन बात पर मान ।
सबही हिलमिल खेलतीं, अबही कर असनान ॥

लालजी बचन--दोहा ।

तुमरे कछु मनमें परी, चंपे चतुर सुजान ।
कोन चूक मेरी मानकें, प्यारी कीयो मान ॥

सखी बचन--दोहा ।

तुमको यह कहा बूझिबो, चूक आपनी लाल ।
जापै रूसी लाडली सो, सब जानत हाल ॥

राग कालिंगडा ।

मैं कहा जानूं कुंज बिहारी ॥ किहि कारण रू-ठी है तुमसो चन्द्र मुखी बृषभान दुलारी ॥ जब सों उठी प्रिया सोबतसों तबहीसों मनमें रिस भारी ॥ नाजानूं कुछ सपने में उन देखी है करतूत तुह्मारी ॥ ठाडे रहो भीतर मति जावो प्रीतम मानों कही हमारी ॥ नारायण जो भुज गहि रो-कों फिर कहा बात रहे गिर धारी ॥

लालजी बचन--पद ॥

सुनरी सखी एरी बिनती इकमेरी ॥ रूपरास मृदु हास चन्द्र सम है छबि अद्भुत तेरी ॥ है बड भाग सुहागभरी तू भानु सुताकी चेरी ॥ जिय घबरात सुहात कछू नाहिं जबसों प्रिया न हेरी ॥ लाऊंगो मनाय जानदे भीतर क्यों रूसी है रूपकी ढेरी ॥ मोहि समझ बिन दामकौ चेरो सांचमानतू मेरी ॥ जो तू कहैजी सोई करिहों शपथ खायकहुं तेरी ॥

सखी बचन--वार्ता ।

अच्छो लालजी आप भीतर पधारो परंतु जैसे में कहूं वैसेही करियो प्रियाजी प्रसन्न होय जांयगी ॥

पद ।

प्यारी ढिंग जाय लाल धीरे बचन कहियो ॥ नीची राखि दृष्टि नैन बिनती कीजो बिचार सन-मुखहै ठाडेदोऊ हाथ जोरे रहियो । अचरासोंमुख दुराय कबहूं भूषणसमार हैकें बलिहार उनकीकभू ठोडी गहियो ॥ नारायणभूलकेन डर पियोनिरा-दर सों जो कछु वो कहआप सभी बात सहियो ॥

समाजीबचन-दोहा ।

आयलाल टाडे भये, अब दोऊ कर जोर ॥
निहुर निहुर बिनती करें, बातें करत निहोर ॥

लालजी बचन-पद ॥

किशोरीका मोसों चूक परी ॥ हमतो कछु अप राधकियो ना क्यों तुम रोश भरी ॥ कहा कारण तुम भई अनमनी उरका चूक धरी ॥ रंगीलाल तु मकौन चूकपै बैठी हो रोश भरी ॥

राग खम्माच ।

प्राण प्रिया वृषभान नंदनी शरणागति में आ-यो ॥ अंजली जोर कहत नंद नंदन चरणन शीश नवायो ॥ कारण कोंन नाहिं अब बोलो कहा मोहि दोष लगायो ॥ अब तन कोप नयन भर हेरो ते-रोही दास कहायो ॥ तेरे मुख देखे बिन भामिनि पल ज्यों कल्प गंवायो ॥ रंगीलाल छबि निरखि राधिकाउर लगाय सुख पायो ॥

लालजी बचन-वार्ता

श्री वृषभान दुलारी कीजै ॥ श्री बरषाने वारी कीजै ॥ जैजै मेरी प्यारी की ॥ जै मुखचंद उजारी की ॥ जगत रूप उजियारी कीजै ॥

प्रियाजी बचन-दोहा ।

नैन मूंद मुख फेरि के, प्यारी बोली बैन ॥
जाउ पिया घर वाहिके, जासंग काटी रैन ॥

प्रियाजी बचन-पद ।

जाउ पिया जहां रैनि गँवाई ॥ भोर होत क्यों

उर मालन कों यह छबि आन दिखाई ॥ कीनों है जासों हित अपनों सो क्यों कर बिसराई ॥ बेग जाउ वे सुनि दुख पैहैं बहुर मिलैंगी नाई ॥ देख भरी अति रिस में प्यारी हारि मुख लियो नवाई ॥ नेंकनलख्यो प्रियाके सनमुख मनमें रहेसकुचाई ॥ प्रगट सदुर नख भूम कुरैदे मनही मन मुसकाई ॥ जबहि सुने प्यारी के मुखते खंडित बचन कन्हाई ॥

लालजी बचन- पद ।

श्रीराधिका बिनोदनी कमोदनी कपा करो ॥ ताप त्रय ताप हरो रूपकी उजागरी ॥ तजोमान आन तुम्हैं मोंहकीकमान कान करो कान नवल नेह सुघर नागरी ॥ हमारी ऊक चूक क्षम बिलोक अंक भामिनी कपोल मेल केलगुणन आगरी ॥ ल- लित नव किशोरीलाल बारने तिहारे लाल हाहा मुसिक्याय नेंक सुरत परागरी ॥

प्रियाजी बचन—वार्ता ।

हे लालजी महाराज आप वाही अपनी प्यारी के घर जाओ जाके घर रातकूं बास कियो है ॥

प्रियाजी बचन--पद ।

तुम जाओजी जाओ जाके रहे हो रात ॥ मेरे काहेको आये हो अब भये प्रभात ॥ लटपटे पेच उनींदे नैना डग मग डग मग डगमगात ॥

लालजी बचन।

हाहा खात हों पैयां परत हों अबकी चूक मेरी करोगी माफ ॥

प्रियाजी बचन ॥

कपटी कुटिल पिया तुमसों कहतहा मैं न मानूंगा तुमरी एक बात ॥ विसराम दास पिया मैं ना मानूंगी तुमरी एक बात ॥

लालजी बचन--वार्ता।

हे प्यारी जी मैं तो काहूके घर नाहिं गयो काहू सखीने आप ते झूंठी बात बनाय दीनी है ॥

प्रियाजी बचन-वार्ता।

हे प्यारे तुम सांची कहोहो परन्तु तुम्हारे पगडी के पेच बिखर रहे हैं यह कहा बात है ॥

लालजी बचन-वार्ता।

हे प्यारी जी हम बनमें गाय चरायवे गये हे सा वहां वृक्षन में उरझ के सब पेच बिखर गये है ॥

प्रियाजी बचन--वार्ता।

अरे प्यारे आपकी आंखन को काजर कैसे बिगड गया है ॥

लालजी बचन--वार्ता।

हे प्यारी रात को एक बछरा खुलगयो हो सो वाके पीछे भागे सो बनमें सीरी सीरी हवा लगी

तातें आंखन में सों पानी बह्यो तासों हमारी यह आँखन को पानी बिगरगयो है ॥

प्रियाजी बचन-वार्ता ।

हे श्रीलालजी महाराज आपके पांव क्यों कांपेहैं

लालजी बचन-वार्ता ।

हे प्यारी रात को एक गाय बनको भागी सो वाके पीछे भागत भागत थक गयो हूं ॥

प्रियाजी बचन- वार्ता ।

हे प्यारे आप ऐसे धीरे धीरे क्यों बोलत हो ॥

लालजी बचन-वार्ता ।

हे प्यारी आपके डरके मारे मेरो धीरे धीरे बोल निकसत है ॥

रागधनाश्री ।

बोले फेरि सकुच गिरवरधर ॥ अब जिनकाम करूंगो ऐसो सोंह खात तब सिरकर धरधर ॥ मैं तो प्रिया जी चेरो तुम्हारो तुम बिनु जात कभू नहीं पर घर ॥ अबकी चूक क्षमा कर मेरी कहैं आतुर है विनती कर कर ॥ तुम रिसात योंहीं प्रिया मोसों कल न परत प्रातिहीयो जर जर ॥ रंगीलाल रिसदेखतिहारी धीर धरत नाहिं जियरा डर डर ॥

प्रियाजी बचन--पद ।

तुम सांची कहो रंगीले लाल ॥ जावक सों कहां

पाग रंगाई रंग रेजन को मिली है बाल ॥ चन्दन रंग कपोलन लीने अरुण अधर भये श्याम वि-शाल ॥ जिन तुमरंग मन इच्छा पुजई पिया धन्य धनि धनि वह बाल ॥ माला कहां मिली बिन गु-णकी उरझत देख भई बेहाल ॥ सूर श्याम छवि सबै बिराजत यही देख मोकों जंजाल ॥

लालजी बचन पद ।

राधा प्यारी बात सुनों एक मेरी ॥ राधा० ॥ मैं आयो चाहत हों तुमपै बीच लियो उन घेरी ॥ परबस परचो दास परमानंद उत भई रैन अंधेरी॥

प्रियाजी बचन–ठुमरी खम्माच ।

प्यारे तेरे जीयकी न जानी जाय बातरे ॥ क-हुंतो सांझ आधी रात रहत है कहुं पिछली रात कहूं प्रातरे॥उनही सों जाओ बनराओ सुख पाओ तुम जिन ये सिखाये दाव घातरे ॥ अबतोसों भू-लके न बोलूंगी नारायण जहं लगि मेरी बस्यातरे

लालजी बचन-पद ॥

प्यारीजी सांच कहो कै हांसी ॥ काहेकोइतनों रिस पावत कत तुम होत उदासी ॥ पुनि पुनि कहत बात तबही ते कहा ठगीसी ठाढी ॥ इक टक चितै रही हिरदै तन मनो चित्र लिख काढी॥ समझीनहीं कहा मन आई मदन त्रासतुम आगे॥

सूरश्याम भये काम आतुर भुजागहन पियालगे

प्रियाजी बचन--पद ।

मोहिंछियो जिनदूर रहोजू॥जाकों हृदय लगाय लईहै ताही की बांह गहोजू॥तुम सर्वज्ञऔर सब मूरख सोरानी और दासी ॥ मो देखतहिरदे वह बैठी हम तुमको भई हांसी ॥ बांह गहत कछु लाज न आवत सुख पावत मन मांहीं ॥ सुनहुसूर मोतन वह इकटक चितवत डरपत नांहीं ॥

प्रियाजी बचन-वार्ता ।

हे प्यारे जी अब आप मोको न छियो आपवाहीको छियो जाके रात गरवा लगेहो ॥

प्रियाजी बचन-ठुमरी ।

प्यारे मेरे गरवामें जिन डारो बैयां । छूओ न लंगर गोरो पकरो न कर तुम छाडों अब कपट बलैयां ॥ जावो पिया वाही मन भाई के भवन में जाके निश परत हो पैयां ॥ झूंठी झूंठी सोंह क्यों खाओजी नारायण जानू मैं तुमारी चतुरैयां ॥

लालजी वचन राग गौरी ।

सबकछु कहो कहो मति ऐसी ॥ ममप्राणनकीप्राण पियारी सपनेहू बिछुर न बात अनैसी ॥ हम तुम न्यारे होंय दई जिन न्यारी होय कान कुल कैसी॥ मिलेहैंउरललितमाधुरी ज्योंमहंदीमें लाली जैसी

प्रियाजीवचन वार्ता ।

हे लालजी अब आप बहुत बातें न बनाओ चल हटो अपनी वाही प्यारी के घर जाओ ॥

लालजी बचन--ठुमरी ।

प्यारी जी तिहारे बिन कल न परत है ॥ मंदिर अटारी चित्रसारी फुलवारी मोहि कछु प्रिय न लगत है ॥ घनों समझायो इत उत बहलायो पुनि तोऊ मन धीरन धरतहै ॥ ऐसो हठ आगे कब की यो नारायण जैसो हठ आज तू करतहै ॥

लालजी बचन-वार्ता

हे प्यारी जी मैं आपकी शपथ खायकें कहूं हूं कि ऐसो काम फिर कभी न करूंगो अबतो आप क्षमा कीजिये ॥

लावनी ।

उठो अब मान तजो गोरी ॥ रही है रैनि बहुत थोरी ॥ सदा सों तुम मनकी भोरी कहूं मैं शपथ खाय तोरी ॥ औरनके बहकाये सों कर बैठत हो रोष ॥ झूंठ सांच परखत नहीं ब्रथादेत मोय दोष ॥ यही मोय अचरज है भारी ॥ तनक हंस चितवौ सुकुमारी ॥ शशी मुख पैहूं बलिहारी ॥

दोहा ।

अपनी ओर निहार के, देउ अभय बरदान ॥

क्षमा करौ सब चूक अब, जो कुछ भई अजान ॥ इनी बिनती मानों मोरी ॥ उठो० ॥ तुमरे गुण नितप्रति गाऊं ॥ बिना आज्ञा न कहूं जाऊं ॥ ताहूपै दृग तानकर भृकुटी लेत चढाय । जोरावर सों निबलकी काहू बिधि न बसाय ॥ करै चाहै जैसे जोरी ॥ उठो० ॥ जिनै तुम समझो हितकारी ॥ सोई अति कपटी ब्रजनारी ॥ दोहा ॥ नारायण तुमने करी, भली न्यावकी बात ॥ हमसों फूट करायके, आप अलग है जात ॥ भलेपर दंड बुरे परप्यार ॥

समाजी वचन वार्ता ।

प्रियाजी के पासकी सखी बोली कि हे प्यारी, ऐसो रोष अपने प्रीतम पर नहीं करनो चाहिये देखो लालजी महाराज आपकी कैसी बिनयकररहे हैं ॥

सखी बचन राग कल्याण ।

बेगि तजो अब मान पियारी ॥ तरसत हैं तेरे दरशनको ठाडे कुंजबिहारी ॥ जाके गुण गावें सुरनर मुनि सो गावें तेरे गुण प्यारी ॥ सनकादिक सुमरत जिहिं निशिदिन सो सुमरत बृषभान दुलारी ॥ जाके चरण रमा उरधारे सो चितवत तेरे पद चितलारी ॥ जाकी पौर शिव बिधि ठाडे तेरे द्वार ठडो सो आरी ॥ अति ही बिकल है तलफत मोहन सीस छियो सों करूं तिहारी ॥ नीको

लगत न अति हठसुन्दरि रंगीलाल तेरी बलिहारी

दोहा ।

सुनत सखी के बचनको, मुसक्यानी मन वाम ॥
त्याग मान को माननी, उरलगाय घनश्याम ॥
निरख निरख छबिजुगलकी, परसे पग सखियान ॥
करत आरती सकल मिल, मनमें आनंद मान ॥

राग धनाश्री ।

जय जय अलिन पुकार भई है ॥ निरख निरख सखि सुमन उतारत रंध्रन मग छबि छाय रहीहै ॥ चितै चितै नव रूप माधुरी अद्भुत रतिकी रीति लईहै ॥ लिपटे छुटत न ललित किशोरी प्रीतिकी रीतिकी बेल नई है ॥ इति ।

अथ मानलीला खंडिता लिख्यते

समाजी बचन--दोहा ।

आश्वन निर्मल पूर्णिमा, शोभा बन अभिराम ॥
मन मथ के मद मथन को, रास रच्यो घनश्याम ॥
फूले तरु गुंजत मधुप, अति छबि बरणि न जाय ॥
रसिक छबीलो सांमरो, जहां बिहरत सुख पाय ॥
एक समय निश सरदकी, रास रच्यो गोपाल ॥
मुरली धुनि सुनिके सकल, उठ धाई ब्रजबाल ॥
गई सबै ब्रज सुन्दरी, जहां सुन्दर नन्द कुमार ॥

कालिंद्रीके कूल पर, कीनों रास बिहार ॥

समाजी बचन--रागपर्ज ।

निरत करत कानन नंद लाल ॥ निर्मल सोम छया सुखरासी तरुन झुकी तरु डार ॥ अंसमती तद सुखन बिपिनमें चहुँदिश गोपीग्वाल ॥ गहि गहि पाणि सबन संग नांचत बाजत बेणु रसाल ॥ रास बिलास बिलोक राधिका मो समान नवबाल ॥ हरि बिलासबन कुंज अगोचर कियो मान ततकाल ॥

दोहा ।

लीलारास बिनोदमें, चन्द्रावलिहि बुलाय ॥
सुमन माल घनश्यामनें, गहि पहिराई ताय ॥
बहुरि बिहंस बीरी दई, सुन्दर श्याम सुजान ॥
ताहीं छिन श्रीराधिका, रही मान मन ठान ॥
रास छोड घरकों चली, पहुंची मन्दिर आय ॥
सखी सहचरी बोलकें, लीनी पास बुलाय ॥

प्रियाजी बचन-राग जंगला ।

सजनी द्वार खडी तुमरीजों ॥ लेउ लकुट कर हो हुस्यार तुम यह निज चित धर लीजों ॥ जो आवै वो लंपट मोहन भीतर धसन न दीजों ॥ हाथ जोर कितनेउ ललचावें नेंक प्रतीत न कीजो ॥ हमसों कपट प्रीति औरनसों ऐसेनसों

कहो कहा कीजे ॥ रंगी लाल वाकी एक न मानों मोमन कबहु न पसीजै ॥

समाजीबचन-दोहा।

सखियन बोध कराय प्रिय, जाय बैठि करमान ॥
ताको मुख देखे बिना बिकल प्राण भगवान ॥

लालजी बचन-रागसोरठ।

कहुं देखी ललिते श्रीवृषभान दुलारी ॥ हास बिलास रास खेलत में कहा चूक उर धारी ॥ हमतो कछु अपराध कियो ना क्यों रूठी सुकुमारी ॥ बिन देखे वृषभान नन्दनी मोहिंन कछू सुहारी ॥ देखी हो तौ कहो बिशाखा कितकों प्रिया सिधारी ॥ हा राधा वृषभान नंदनी सुन्दर रूप उजारी ॥ देउ दरस मोंहि दीन जानकें रंगी लाल बलि हारी ॥

ललिता बचन-वार्ता।

हे श्रीलालजी महाराज श्रीप्रियाजी तो आज अपने मंदिर में मान करके बैठी हैं ॥

लालजी बचन-रागमुलतानी।

मेरी तो जीवन राधा बिन देखे नहीं चैन ॥ हमते कछुहू चूक परी ना क्यों रूठी सुख दैन ॥ पैयां परूं मैं तेरे नेंक जाओ प्यारी लैन ॥ धीरज प्यारी मुख देखे सीतल होंगे नैंन ॥

ललिता बचन--राग जंगला ।

रूस रही तुमसों अब प्यारी ॥ तुमही करायो मान प्रियाको अटपट रूप दिखारी ॥ चिन्ह ल-खतही भर गई रिसमें श्रीवृषभान दुलारी ॥ करत फिरत ऐसे गुण मोहन अब काचियात कहारी ॥ भये बिरहबस सखी बचन सुनि व्याकुल तन मन भारी ॥ चतुर सखी पुनि कही कहावत हो तुम नि-पुण बिहारी ॥ अब पछितान लगे किहिं कारण प्रथमहि क्यों न बिचारी ॥ धीरज धर तब श्याम बुलाई और एकदूती नारी ॥ उंच नीच समझाय पठाई ताहि मनावन प्यारी ॥

समाजीबचन-रागबिहाग ।

सहचरी प्यारी पासगई ॥ मान छुडाऊं प्रि-याके मनका मनमें साद यही ॥ पहुंची जहां जाय तहां प्यारी बैठी मान ठई ॥ सालै सौत साल उर पियकी कल तज विकल भई ॥ नेंक न हेरत इत उ-तको प्रिय दूती चकित रही ॥ बिना भींत किम चित्र बनाऊं मनमें सोच यही ॥ अति आतुर है श्याम सुघडनें मान छुडन पठई ॥ यहतौ चंदन इत उतहेरत अब कहा करूं दई ॥

दूती बचन--सोरठा ॥

चतुर दूतिका नारि बोली मनहि बिचारयों

तू वृषभान दुलारि कहा सिखवूं तोय लाडली

दोहा।

मैं योंही कहिवे तुमें, आई सुघड सुजान॥
हाहा खा बिनती करें, तभी त्यागियो मान॥

समाजीबचन-दोहा।

सुनि दूतीके बचनको, तनक न चितई बाल
मनमें अति लज्जित भई, बोली बचन रसाल

दूती बचन-राग बिहाग।

प्यारी सुनिये बात हमारी॥ तो बिन नन्द कुमार बिरहबस बैठे दुखित महारी॥ बार बार तेरो गुण गावें और प्यारी तोय श्याम बुलायो॥ बनबन रह्यो हरष मन ब्रजमें पूरणचन्द्र सुहायो॥ त्रिबिध समीर शरद निश मोहन गृहप्रसून निज छायो॥ तजचलि रोष बेगचल भामिन तोबिन हरि अकुलायो॥ आज रैन घनश्याम सांवरे सुमन बीनके लायो॥ भूषन वृन्द गातके तेरे अपने हाथ बनायो॥ कह मृदुबैन बिनय कर ललिता माननिको समझायो॥ हरिबिलास तब चितय राधिका कछुक हृदयसुख पायो॥

सखी बचन-राग बिहाग।

माननी मान निहोरो मेरो॥ कुंज भवन में बैठे मोहन पंथ बिलोकत चंचल तेरो। हों पठई तो-

य लैन लालनें चलरी राख कर थोरो ॥ सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को रैन गई रस थोरो ॥

प्रियाजी वचन--राग बिलावल।

जानी तोहि पठई श्याम ॥ तेरी कही कौन धों मानें तुम जानत हम दोऊ सुजान ॥ भूले अब न मिलोंगी उनसों जिन्हैं परी पर घरकी बान ॥ उरमें राखत कछू कहत कछू वे बहु नायक कपट निधान ॥ पूरे गुणन कुटिल हैं पूरे नाहिं अधूरे कान ॥ वामन है उनने बलि छलियो तब कौन गिनती में हूं वाम ॥ चंद जोर कर मेरी ओरसों कहो मैं तुम लायक नहिं श्याम ॥

लालजी वचन सखीसे-- वार्ता।

अरी सखी आज श्रीप्रियाजी हमसों मान करके बैठी हैं ॥ सो हम तुमारी चतुराई जब जानेंगे तब तुम उन्हें मनाय के हमारे पास लावोगी ॥

दोहा।

कीरत सुता बिहीन मोहिं, पलपल युग सम जाय।
प्यारी मुख देखे बिना, मोहिं न कछू सुहाय ॥

दूती बचन--दोहा।

अहो लाल घनश्याम तुम, हूजे नहीं उदास।
जो मैं दूती आपकी, लाऊं प्यारी पास ॥

राग काफी ।

जो मैं दूती कहाऊं मान राधा को मिटाऊं ॥ काहेको लालन सोच करो तुम निजगुण तुम्हें दिखाऊं ॥ बीच परयो होय बरषन को बल लाकूं तुरत मिटाऊं ॥ बिलम नहिं नेंक लगाऊं ॥ कामरू देशके बीर पठै बिन पंख न पक्षी अकाश उडाऊं ॥ मानस की कहो केतिक बात सो पटपरमें मैं नाव चलाऊं ॥ खेल अपनो दिखलाऊं ॥ कांसकी जेवरिको मनमोहन सांचो सांप बनाय दिखाऊं ॥ कागजकी कर नागर चंगको आसमान के मांझ उडाऊं ॥ कभी नही घबराऊं ॥ जो नारी देहरी नहीं देखे ताकों कहो जहां लेंजाऊं ॥ रंगीलालप्रभु सोच करो मतिप्यारी ए आनमिलाऊं॥जभी बकसीसमैं पाऊं ॥ जोमें दूती कहाऊं ॥ मानराधाको मिटाऊं

लालजी बचन-वार्ता ।

अरी सखी जोतू श्री प्रियाजी कूंमनायके लावैगी त. हम तेरो बडो गुण मानेंगे ॥

सखीजी बचन--दोहा ।

दूतीमन हरषायके, गई किशोरी पास ॥
जहां मान करके प्रिया, बैठी अतिहि उदास ॥

दूतीवचन--रागकाफी ।

मान सखी यह बचन हमारो ॥ बार बार के रूठ

रहे कछुरहैं न भामिन मान तिहारो ॥ मैं पठई तोय लैन पियारे चलो उठो भूषण पट धारो ॥ ज्यों बिन नीर मीन घबरावै तैसेई तेरो प्राण पियारो विकल होय राधा मुख टेरत नेंक दया उर मांहिं विचारो ॥ रंगी लाल बलि जाय तिहारो मोतन नेंक किशोर निहारो ॥ मान तजो वृषभान नंद नी मोसंग कुंज भवन पग धारो ॥

प्रियाजी बचन-रागबिलावल ।

चीन्हें मैं सब उनकी बात ॥ कहा करूं कीन्ही अति मोहन फिरतरहत घर घर दिनरात ॥ रात गमावत कहूंचैनते हमें दिखावत मुख परभात ॥ जहां चाहे अबजाय तहांही राज करें ब्रजमें नंद तात ॥ अब तिनसों मैं कछू न कहिहों चाहै जहां फिरें इतरात ॥ छान वंदमें जान गई हूं मनके कारे सांवल गात ॥

दूती बचन- रागविहाग ।

छांड देउ प्यारी निठुराई ॥ कहा करत एतो हठ सुन्दरमान बचन अब तज हठ आई ॥ और स-खिन को मानापियारि तेरी बिरस रुखाई ॥ ऐसेही रहिहो तुम जबलग मैं लावोंहरिहि बुलाई ॥

प्रियाजी वचन-रागधनाश्री ।

आवत बात बकत मेरे घर ॥ ऐसे बचन सुनत को

तेरे वेधत हैं मानों हिय को शर ॥ इतकी उत उतकी इत मिलवत झूंठी बात बना कर नटवर ॥ आप आयँगे अपनी गरज को सोंह खांयगे हाहा कर कर ॥ जानत नांहीं रीतिप्रीतिकी कपटी कुटिल कठोर निपुण बर ॥ प्रीति करी सुख कारन उलटी सौत दिखावत जात जियाजर ॥

दूती वचन-रागवरवा ॥

मान तजि चलि सजनी चन्दा बुलावैरी॥हाहा हठ को कामनहीं है क्यों जीया सरसावैरी॥जो हमरेसंग चलो न भामिन वोतो आपही आवैरी ॥ घनछाया सम यौवन जानों एकपल छिनमें जावैरी ॥ यमुनाके तीर कदंबकी छैयां गोपीसंग नचावैरी । मुरलीधर तेरो ध्यान धरतहै तेराही गुणगावैरी ॥

❀ कवित्त ❀

मानों तो मानों न मानोतो हमेंकहा मानसके रूठको मानस मनायहै ॥ रूपको गरब कहा कर बैठी बलिजाऊं तिहारेकाज कोईदेवता न आयहै ॥ समयेके चूकेफिर समयो न पाओ भामिन मैंकहूं वैसी बातको फीर पछितायहै ॥ मानो हठछोडो आलीचालिये बनमालीपै रजनी केबीते शशि फीको दिखातहै ॥

प्रियाजी बचन दोहा ॥

सुनि प्यारीके बचनको, दूतीमन सकुचाय ।
कहीबिथा सब प्रियाकी, मनमोहन तेजाय ॥

दूती बचन--दोहा ॥

प्रिया मनावन कठिनहै, सुनिये श्याम सुजान ।
एक कही मानत नहीं, बैठी भृकुटी तान ॥

समाजी बचन--वार्ता ॥

दूतीके बचन सुनिके श्रीलालजी महाराज प्रेम में आयके यहपद गानेलगे ॥

❀ राग पर्ज ❀

हमारी सुधि ले बृषभान लली। बिनदेखे तोय प्राणपियारी लोचन धार चली ॥ अबलों कोर कटाक्षन हेरौ बिरह बिषाद बली ॥ तासों अब बिधु बदन दिखावो ममदृग कुमुद कली ॥ बिनती करत श्याम मनहींमन लखि लखि कुंजगली । हरि बिलास राधे राधे धुनि गावत धर मुरली ॥

ललिता बचन-वार्ता ॥

हे श्रीलालजी महाराज आपऐसे बिरहमेंक्यों होरहे हो ॥

लालजी बचन-रागईमन।

ललिता सुनिये बिनय मोर पद गहि दोऊ पाणि जोर राधेसे जाकरनिहोर कहियो गज गामनी ॥

ऐसो कहादोषमोर कीनो तुम मन कठोर त्याग रोष मिल बहोर मेरी मन भामिनी ॥ विषधरज्यों मणि विहीन बारि रहित मानों मीन तैसेमम मन मलीन जल धर बिन दामिनी ॥ यमुनाको विमल नीर फूल तरु तीर तीर प्यारी बिन मन अधीर युग पलसम यामिनी ॥ सकल ताप हरो आय आनन हिमकर दिखाय हरिविलास शरण आय त्रिभुवन अभिरामनी ॥

ललिता वचन-वार्ता।

हे श्रीलालजी महाराज आप ऐसे अधीर क्यों होतहो चलो आप मेरे संग मंदिरमें पधारो मैं प्यारीजी सूं आपकी सिपारस करूंगी।

समाजी वचन दोहा।

ललिता चली लिवाय संग, गई राधिका पास ॥
द्वार लाल पहुंचे जबै, मनमें अधिक उदास ॥
जबहि द्वार पहुंचे हरी, रोके सखियन आय ॥
करके आडी लकुटिको, कहे बचन समझाय ॥
भीतर चरण न दीजिये, सुनो लालमहाराज ॥
हुकम प्रियाको है नहीं, कहां जात ब्रजराज ॥

राग विहार।

प्यारे अरज मेरी सुनि लीजे ॥ बारंबार मैं समझावतहों भीतर चरण न दीजे ॥ जाउ पलट

के कुंज भवन में जहां रात दिन रीजे ॥ बहुत च-
पलता करो लाल जिन जो प्यारी सुनि पावै ॥ दं-
ड करे हमपै मन मोहन फिर को हमें बचावै॥वार
बार समझाऊं तुमको भीतर जान न पैहौ। जाउ
पलट नहिं भुजा पकर के धक्का आपको दैहौं ॥

लालजी वचन-रागविलावल।

मोकों क्योंरोकत ब्रज नारी ॥ कहोजाय वृषभान
सुतातें द्वारठडे बनवारी ॥ हाहा खात तोरे पैयां
परतहों अरजी करो हमारी ॥ क्यों रूसी वृषभान
नंदनी कहा चूक उर धारी ॥ सांची कहो बात तुम
सजनी तुमसब जाननहारी ॥ प्रिया बिना मोहि
कलनपरत है मदन बिथा अति भारी ॥ रंगी
लाल मेरी अरज करो तुम मेरी ओर निहारी ॥

समाजी बचन-दोहा।

द्वार लाल को कर ठडे, ललिता गई प्रिय पास ॥
माथ नाय कर जोर पुनि, कहन लगी इतिहास ॥

ललिता बचन रागखम्माच।

प्यारी तोय श्याम बुलायो ॥ बन बन रहो हरष
मच ब्रजमें पूरण चन्द्र सुहायो ॥ त्रिविध समीर
शरद निशिमोहन गृहप्रसून निज छायो ॥तज सब
रोश बेग चलि भामिनि तौबिन हरि अकुलायो ।
आजरैन घनश्याम सामरो सुमन बीनके लायो ॥

भूषण वृन्द गातके तेरे अपने हाथ बनायो कहि मृदुबैन बिनयकर ललिता माननको समझायो ॥ हरि बिलास तब चितै राधिका कछुक हृदय सुख पायो ॥

ललिता बचन--लावनी ।

मान अब छोडो तुम प्यारी ॥ कुंज में बोलत बनवारी ॥ मनावत रात जात सारी । मान तज कहो मान प्यारी ॥

दोहा ।

नागर नटवर नन्दसुत, हेरत बैठ्यो पंथ ॥
राधे हा राधे रटै, राधे तेरो कंथ ॥ १ ॥

रस में रिस वृथासुनो प्यारी ॥ कोप है अनुचित सकुमारी ॥ कहाउन चूक करी भारी ॥ जासों हैं बंकभृकुटि कारी ॥

दोहा ।

वा मोहन पै मान कर, बैठी भृकुटि तरेर ॥
उचित नहीं प्यारी राधिके, उठो होतहै देर ॥

समझ चित ऊंच नीच नारी । मानको है कारन कहारी ॥ मान यह उचित सीख हांरी । चलो जहां बैठे गिरधारी ॥

दोहा ।

मान तजत नहिं मान के, मुर बैठत इठलात॥

इतमें तुम इतरात हो, बीतत है उतरात ॥ ३ ॥

उठौ अब उठौ प्राणप्यारी । यही है केवल हितकारी ॥ सुनत यह उचित सीख सारी । मान तज कुंजन पग धारी ॥

❀ दोहा ❀

कृष्णलाल सुनि समझमन, उठीप्रिया तजमान ॥
लिपटी प्रीतम अंगसों, विद्युत मेघ समान ॥ ४ ॥

ललितावचन-ठुमरीसमताल ।

श्याम दृग तुमसे अटकेरी ॥ गुरुजन कुलकी कान वेद विधि सबताजि सटकेरी ॥ दधि सुत जिहि निशदिन ध्यावत । गिर कन्या पिय पार न पावत ॥ अहि पति कात हृदैको निर्मल निश दिन रटकेरी ॥ नेति नेति निगम बतावैं सुरनर मुनि जिहि ध्यान लगावैं सोई प्रभू द्वार तेरे पर ठाडे सखियन ठठकेरी ॥ ध्यान धरत तेरो मन मोहन फिरत सदां तेरेही गौहन तेरोई नाम रटत निशि वासर तू कित भटकेरी । द्वान चन्द्र तू छैल छबीली त्याग मानको मान हटीली तुम विन तनमन प्रण जरत है नागर नटकेरी ॥

समाजीवचन-दोहा ।

मान कह्यो मेरो सखी, अतिको भलो न मान ॥
मन मोहन घन श्यामते, मानन करिये जान ॥

❋ दोहा ❋

सुन ललिता के बचन को, मनहीमन मुसकाय ॥
तब ललिता घनश्याम को, ले गई संग लिवाय ॥

राग—कल्याण ।

ललिता संग गये जहां प्यारी ॥ ठाडे भये सकुच के आगे अतिही अधीन प्रेम बस भारी ॥ डोलत नहीं नेकहू इत उत चित्र लिखसे मौनहि धारी ॥ यद्यपि जी के गाढे गिरधर तद्यपि सकल स्यानता हारी ॥ अतिही डरैप अब पिय मोंसों यही समझ मुसक्यानी प्यारी ॥ उमग्यो हियो भयो अति आनँद बोलीनहीं परम सुकुमारी ॥

लालजीवचन-राग खमाच ।

प्राणप्रिया वृषभाननंदिनी शरणागति मैं आयो ॥ अंजलिजोर कहत नँदनन्दन चरणनशीश नवायो ॥ कारणकोन मानकर बैठी कहाजान मोय दोष लगायो ॥ अब तजिकोप नैनभर हेरोतेरो ही दास कहायो ॥ तेरे मुख देखे बिन प्यारीपल ज्यौं कल्प गमायो ॥ हरि बिलास छबिरासराधिका तो बिन कछु न सुहायो ॥

प्रियाजी बचन-राग भैरवी ।

भोर भये आये मन मोहन कहा बनावत बात हों॥चन्दनभाल विराजत मुखपर सबही चिन्ह

लखातहो ॥ बिन गुण माल मरगजे वागे सोहत चंद दुरातहो ॥ मीराके प्रभु वहांही जावो जहाँ जगे सारीराति हो ॥

❋ वार्ता ❋

हे प्यारे अब मेरे भवनमें आपको कहा काम है,अपनी वाही प्यारीके घरजाओ जासों आपकी अधिक प्रीतिहै आपजलदी जाओ वे आपकी प्यारी सखी आपकी वाट देखत होयगी ॥

लालजी बचन-पद ॥

प्यारीजी का मोसों चूकपरी ॥ मैंतो कछु अपराधकिया ना क्यों तुम रोषभरी ॥ कहा कारण तुम भई अनमनी उर कहा चूक धरी ॥ ललित किशोरी नृत्य करतमें मिथ्या मान ढरी ॥

प्रियाजी बचन-दोहा ॥

जाउ वहीं घनश्यामतुम, जहां बिलमे सब रात ॥
मोहि दिखावनको पिया, आयेहो परभात ॥

रागसारंग ।

जोमुख आवै कहतसो वाम ॥ जाउ जाउ पिया वेगि सिधारो कहा काम ममधाम ॥ जानत हो तुम हमहिं सयाने और सबै अनजान ॥ प्रातहमारे रैन बसत कहुं तुम्हें नेंक नहीं कान ॥ वेहू भली भले तुम मोहन जोरीबनी अभिराम ॥

तुमसो औरन कपटीकोऊ तनमन इकसो श्याम ॥

वार्ता ।

तासमय प्यारी जी के पास की सखी बोली

सखी वचन दोहा ।

प्यारी इतनों मानकर, ज्यों आटे में नौन ॥
बारबार को रूसिबो, तोय मनावे कौन ॥

राग बिहाग ।

अलबेली लख लटक मुकट की ॥ मान छोड बृषभान नन्दनी मानकही अबनागर नटकी ॥ नखसों लिखित सिखित कहा सजनी, कीन चहत कछु टौना ठटकी ॥ है कछु सुरत तोहि वादिनकी जब बनमाल सों बेसर अटकी ॥ गहिकर कमल कमलमुख तेरो मुरझाई तब नेंक न मटकी ॥ ते पर चल अब नाह बांह गहि मानतनहीं रहत बहु मटकी ॥ जुगलसखी प्रभु रस बस कीने भुज भर भेट मेट सब:घटकी ॥

समाजी वचन-दोहा ।

सुनत सखी के वचन को, तजो मान तत्काल ॥
भुज पसार भेटी तुरत, उर लगाय नन्द लाल ॥

प्रियाजी बचन-राग जंगला ।

अबहम चूक माफ करडारी ॥ ऐसी बात क रोगे जो तुम तो जानोंगे आप बिहारी ॥ लंगराई

निठुराई कपट तज सोंह करो तुम पिया हमारी॥ डर संकोच तज हरि तब बोले मैं सों करत हूं प्रिया तुमारी॥ अंत मैं जात नहीं कहं परघर तुमही प्रानन ते मोय प्यारी॥ तुमसों हूं दंपति तुम सम्पति तुमही जीवन प्राण हमारी॥ कलन परत तुम बिन एक छिन भर छिन अकुलात जियरारी॥

दोहा।

सुनत श्याम के वचन मृदु, प्यारी मन आनन्द।
हिल मिल दोऊ मगन हैं, मनो शरद के चन्द॥

समाजी बचन--दोहा।

मान माननी को रह्यो, राख्यो गिरधर लाल।
रंगीलाल बस भक्त के, नन्द नंदन गोपाल॥
ये लीला घनश्याम की, रसिकन मन आनंद।
रंगीलाल के उरबसौ, श्री राधा ब्रजचन्द॥

❀ इति ❀

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

अथ बैनी गूंथन लीला लिख्यते॥

समाजी बचन-दोहा।

वृन्दाबन बानिक बन्यो, भंवर करत गुंजार॥
दुलहिन प्यारी राधिका, दूल्है नन्द कुमार॥
राधा जी के बदन पै, बैनी अति छबि देय।
मानों फूली केतकी, भंवर बासना लेय॥

कुण्डलिया।

खोजत द्रुम रंध्रन लखे ललित किशोरी नैन ॥
निरखत छबि दम्पति दुरी लतन पाय मन चैन ॥
लतन पाय मन चैन मगन अति सुधि बुधि भूली॥
निरखरही टक लाय थकित छकि छकि रस भूली॥
रूमरूम छिन होत निछावर चकी बिलोकत ॥
गये प्राण तन मिले बहुर बन खोजत खोजत ॥

समाजी वचन राग बिहाग

फूले फूले फिरत श्यामा श्याम फूली कुंजन माहिं ॥ फूल्यो सिंगार हार हमेल फूले फूले दोऊ करत केल मानों घन में दामिनी लसे दोऊनके गलबांह ॥ फूली जोति जगमगात तामें फूली वदनकांति चंपकली कुंदकली बरषत तिहिं ठावें ॥ कहैं भगवान हितराम राय प्रभू देख फूल्यो श्री वृन्दावन पहुप वृष्टि होत सही आली चलि जावें॥

दोहा ॥

निरखनिरखशोभा विपिन, सुमन विचित्र निहार ॥
प्यारो प्यारी चिबुक गहि, हंसि बोल्यो मनुहार॥

❀ पद ❀

अहो प्रिया ममप्राण पियारी ॥ मोमन आस पुजावन हारी ॥ अति उल्लास सुमन चुनलाऊं ॥ नखसिख सब शृंगार बनाऊं ॥

लालजी बचन-वार्ता ।

हे प्यारी देखो आज या श्री वृन्दाबन में नाना प्रकार के पुष्प खिलरहे हैं और आज या कुंजकी बडी शोभा हो रही है सो हे प्यारी आपकी आज्ञा होयतो आपकी बैनी गुहिदऊं ॥

प्रियाजी बचन वार्ता ॥

अच्छो श्रीलालजी महाराज जो मरजी आपकी जो आपकी इच्छाहै तो गुहिं देउ ॥

ललिता बचन- पद ॥

बैनी गूंथ कहा कोई जानें, तेरी सों मेरीसी राधे॥ बिच बिच फूल स्वेत पित राधे को कर सके मेरी सी साधे ॥ बैठे रशिक सँवारन बारन कोमल कर कंगई सों कांधे ॥ हरीदास जीके स्वामी नखसिख सोंधे दै काजर नकई सों राधे ॥

श्री लालजी बचन--वार्ता ।

हे प्यारी देखो मैंने आपकी कैसी बैनी गूंथी है और जो आपके मनमें संकोच होय तो ललिता जीसों अपनी बैनी की शोभा पूछ देखो ॥

समाजी बचन रागनट

बैनी गुही है श्याम बनाय ॥ सुभग चंपक ब- रण कुसमित रही शोभा छाय ॥ अंग २ बना- य भूषण दियेजावक पाय ॥ बिबस है हरि अंक

माधो आतुर लियो कंठ लगाय ॥ रसिक प्रिया श्री विट्ठल गिरधरन को जसकहो कापर जाय ॥ रसिक प्रिया श्री गोपाल पीकी कोलेनाना भाय ॥

प्रियाजी बचन वार्ता ॥

अरी ललिता सखी अरी बीर आज हमारीबैनी श्री लालजी महाराज नें अपने करकमलनसों गुही है तू देखतो सही कछु कैसी गुही है ॥

ललिता बचन- पद ॥

गुही है तेरी बैनी गुहीहै तेरी बैनी ॥ सुन्दर श्याम गुही है तेरी बैनी ॥ पचरंग चीर सीस श्यामा के चंपक और जुही ॥ श्री गिरधरन विठलेश कहत हैं सुखकी रास तुही ॥

लालजी बचन-वार्ता।

हे प्यारी जी आपकी आज्ञा होय तो मैं आज सबही सिंगार करदऊं ॥

प्रियाजी बचन-वार्ता।

हे श्रीलालजी महाराज आपकी इच्छा है तो आज आप हमारे सबही श्रृंगार करदेउ ॥

लालजी वचन राग काफी।

रसिकलाल नटनागर निरतत निरत करत श्रृंगार ललीको। गुलाबांस गजरा हरवानिव नर गिस चंपकली को ॥ रतनाभरन उतार सुमन के

भूषन अंगनअंग पहिरावत ॥ बेंदाललित तिवारी बेंदी सोनजुही सुचतीस सगावत अरुण पीतसित सुमन ललित लै कंकण कलित हथफूल बनावत ॥ पायल पीत चमेली, नूपुर कलित मोनिया पगन सजावत ॥ ताता थेई गति नेकन भूलत पूरत पंचम सुरंग भीने ॥ ललित किशोरी लखत ंधूमग शरदइंदु शोभादृग दीने ॥

समाजी बचन दोहा ।

निरततनटनागरसजी, नखशिखप्यारी आज ।
अरुनहरित सितपीयरे, भूषन कुसुम समाज ॥

समाजी वचन–दोहा ।

पत्रावली घुमावकी, राजीलली कपोल ।
लाल तबै बीरीदई, रसिकलाल जै बोल ॥

श्री लालजी वचन--वार्ता ।

हे प्यारी जी अब आप दरपन में देखिये कि आपको शृंगार कैसो भयोहै अब आप देखो कि मेरो मुख नीको लगै है कि आपको ॥

राग कालिंगडा

मेरो मुख नीको कि तेरो राधा प्यारी ॥ दरपन हाथ लिये नँद नन्दन सांची कहो वृषभान दुलारी ॥ हम कहाकहैं तुमी क्यों ना देखो हम गोरी तुम श्यामबिहारी ॥ हमरो बदन जैसे चन्दाकी चां-

दनी तुमरो बदन जैसे रैन अंधियारी ॥ तुमनें तो गोवरधन धारो मैं उरधार रही गिरधारी ॥ तुमरे शीश मुकुट बिराजे हमरे शीशपर तुम बनवारी सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को दोनों ओर प्रीति अति बाढ़ी ॥

लालजी वचन वार्ता

हे प्यारी बेसर आपकी नीकी है के हमारी ॥

राग कालिंगडा।

बेसर कोनकी अति नीकी ॥ होड पडी लालन और लाडली चोंप पडी अति जी की ॥ न्यावपरो ललिताके आगे कोनललितकोन फीकी। दामोदर मन बिलगन मानो झुकनझुकीहै प्यारीजीकी ॥

लालजा वचन वार्ता।

हां सखी तुमतो इन्हीं की कहोगी ॥

❀ इति ❀

अथ ब्रह्मचारी लीला लिख्यते ॥

समाजी बचन—दोहा।

कपट गांठ नट नंदसुत, कर ब्रह्मचारी भेष ॥
कर सिंगार श्यामा छलन, चलोज जूरो केश ॥
कांधे मृगछाला ललित, पीताम्बर छबिछाय ॥
चारु जानेऊ अतिलसे, शोभा कहीन जाय ॥
बरषाने के बाग में, आसन दियो जमाय ॥

लतातरें जोगीजुगति, दई समाधि लगाय ॥
दरसन हित आवन लगीं, बरषाने की नारि ॥
करि प्रणाम चकितरहीं, तपसी रूप निहारि ॥
दरशनहित आवनलगीं, बागन में ब्रजनारि ॥
जोगी रूप अनूप लखि, शोभा अपरंपार ॥
गई बिशाखा देखकें, कही प्रियासों जाय ॥
तपसी आयो बागमें, शोभाकही न जाय ॥

समाजी वचन राग पर्ज ।

अति पंडित दूध अहारी॥एक आयो है ब्रह्मचारी ॥ मृगछाला ओढे शुभ लक्षण सुन्दर तापर वारी ॥ पोथीखोल बतावै सबको करललाट की रेखें ॥ ललिता कहत लडैती चलिये तो हम चल के देखें ॥ बर्तमान है गई होयगी सो सब बातबतावै ॥ भागबडेहैं यानगरी के जहां पुरुष असआवै ॥

समाजी वचन ।

दूध अधोटा सीत मलाई भाजन भरजो लियेहैं॥
अष्ट सखिन ले संगकुमारी चलिबेकौ मनजोकिये हैं॥ बैठ्यो खोर सांकरी लागत बडोतपोधनधारी॥
नैनबिशाल कंठबिच माला शोभाकही न जारी ॥
हे प्यारी आवत देख दूरते यों मुख बचन उचारो॥
को आई ले भीर बहुतसी जपमे अंतर डारो ॥

सखी वचन ।

यह बेटी किरत रानी की पितु वृषभान क-हाई ॥ तुम जिन होउ उदास तुम्हारो मान बढा-कर आई ॥ भेट धरी लै पयजो मथनियां इच्छा जेतो पीजे ॥ गिरवर सघन कियो क्यों आसन चल नगरी सुख दीजे ॥ धरें अनमनी मुद्रालो-चन मूंदै कबहूं खोलें ॥ बैठि घेर चहुं दिशा सखी वे ओठनहीं में बोलें ॥ ललिता कहत उच्चस्वर बोलो बूझत राजदुलारी ॥ हाथ जोर बिनती हम कर हैं सुनिये अरज हमारी ॥ कबहु ग्रीव बोलतहैं कबहूं हंसत छबीली भौंहैं बूझन को अकुलाय भानु कुल मंडन बैठी सोहैं ॥ बिनती करत बि-शाषा चित्रा मुखते कछु उच्चारी ॥ तुम यश सुनि आई श्री राधा कछु चरचा बिस्तारी ॥ एक० ॥ बूझनकी मनचाह सबन के हमसों बात अ-नेसी ॥ तुम पंडित समदरसी कहियो यह जो समता कैसी ॥ एक० ॥

ब्रह्मचारी वचन ।

अधरन मैं मुसिक्याय देखकें मर्म बात कहा गुनियै ॥ रहै सिद्धिता पूरी मेरी सो सब कारण सुनिये ॥ पोथी खोल कहन जो लागे कहा संदेह

जो बाला ॥ पतिपरिवार सकल गौरांगी दीखत भाग बिशाला ॥

सखी वचन।

तुंगविद्या पूछत ब्रह्मचारी यह विद्या कहां पाई। गुरू कौंन तीरथ जो कौंनसों तुमयहबुद्धकमाई॥

ब्रह्मचारी वचन।

सब विधि पूरण गुरू विद्यानगर जहां है ॥ चौंसठ विद्या प्रसाद तिन आसन सुमति तहां है ॥ कानन है सखि देश हमारो जहां विचरत सुख पावें ॥ छंद प्रमोद पिंगल के करके सादर करके गावें ॥ औरहु ज्योतिष की जो विद्या नीकी विधिसों जानों ॥ जैसो होय लक्षण या अंगमें तैसो प्रगट बखानों ॥

सखी वचन

प्रथम बराणिये राजकुमारि के ऋषिनन्दन गुण ग्रामा ॥ तुमकों बरषाने में बसावें जो रीझें श्रीश्यामा ॥ एक० ॥

ब्रह्मचारी बचन।

बिपुल सुहाग भाग दरसतहै आगम बात सुनाऊं ॥ रोम रोम सुख लिख्यो बिधाता और काहां लग गाऊं ॥ अखिललोक बनितन चूड़ामणि वरणत आदि मुनीशा ॥ प्रीतम ते जो मान न

कीजे नितनूतन है बीसा ॥ दोऊ कुल यश वर्द्धन भामिन सदा सुहाग तिहारो ॥ आरथवधू अशीष फलैगी जुग जुग आन बिचारो ॥ भूरभाग तुम सब दर्शतहो या पुर बडी न छोटी ॥ चार बदन बिधिहुन कहसके ऐसी बिद्या मोटी ॥

सखी वचन।

तुंगविद्या पुनि पूछन लागी मोमन उपजी बाधा ॥ नन्दसुवन कपटी सुनियत है दुलिहिन प्यारी राधा॥ज्योंकी त्यों कहिदेउ बालिगई तनक न राखो ओटा ॥ वेतो नंदराय सुत कहियेतुम बडे ऋषिनके ढोटा ॥ उनका शीलसुभाव कहो सखि तुमने कहो कब देखा ॥ लक्षण और कुलक्षण उनके मुनिवर सब अबरेखा ॥

ब्रह्मचारी वचन।

सखी अधिक तूही बोलत हैं कौन बात दुख पायो ॥ कहि मोसों मैं बरज दऊंगो जो मोन समझायो ॥

सखी वचन।

कोंन कोंन सिख सुनें तिहारी वह अँखियनको लोभी ॥ बिना नचाई नचत हैं भामिन पुनि कहि वह है योगी ॥ सखी बचन की मानत नाहीं बर कछु मुखसे बोले ॥

समाजी वचन-वार्ता।

इतनेही में श्रीलालजी के संगके सखा गाय च-रावते वहां आये और सखीनकी भीड़ देखके पास आये और श्री लालजी कूं देखके बोले ॥

सखावचन राग गौरी।

कान्हा कहा तैनें रूप बनायो ॥ हमें छोड़ग उनके पाछे आप यहांकों आयो ॥ पोथी दाब ब-गल में बैठो सबकों नाच नचायो ॥

समाजी वचन-वार्ता।

मनसुखा के ये वचन सुनिकै लाल जी भजे सो फेंटमें से बंसी गिरपडी ॥

दोहा।

भाजत में बंशी गिरी, ललिता लई उठाय ॥
पाई वस्तु न दीजिये, सखा कहै हरपाय ॥

सखा वचन--वार्ता।

अरी सखी याकी वंशी मति दीजो याने यहां आयके तुमकूं बडे नाच नचाये हैं ॥

लालजी वचन--राग कालिंगड़ा।

प्यारी बंशी मेरी दीजे ॥ ये बंशी मेरी प्राणपि-यारी सो तुम कर ना लीजै ॥ मैं अधीन है मांगत तुमसों ॥ यह बकसीस मोहि कीजे ॥ जो कछु अपराध हमन पै चूक माफ़ कर दीजै ॥ रंगीला-

लको दास जानके कृपा किशोरी कीजै ॥

सखी वचन--पद ॥

बंशी हम नहीं देंय बिहारी ॥ अब नट ह्वैके नाचो मोहन जब जाने ब्रह्मचारी ॥ भानुबंसको सुजस बखानों तब प्रसन्न हो प्यारी ॥

समाजी वचन- पद ।

खेलत कला बने नट नागर पुनि कहि कहि बलिहारी ॥ महाराज वृषभान रायको सुयश कहत बनवारी ॥ रंगीलालकी बिनती सुनिके भई प्रसन्न सुकुमारी ॥

वार्ता ।

श्रीवृषभान किशोरीकी जै ॥ शशिमुख चंद-चकोरीकी जै ॥

समाजी वचन--दोहा ।

है प्रसन्न कीरत लली, बंसी दई दिवाय ॥
मुख धर फूंकी सामरे, कालिंद्री तट जाय ॥
ब्रह्मचारी लीला ललित, पढै सुनैं चितलाय ॥
भवसागर की धारते, तुरत पार है जाय ॥
लीला श्यामाश्यामकी, रसिकन मन सुखदैन ॥
रंगीलालके उरबसौ, श्याम कमल दल नैन ॥

रेखता ।

महबूब नंद नन्दन चेटक अजब कियाहै ॥ मु-

सक्यायके अदासों मेरो मन हर लियो है ॥ सोहै बसंती चीरा मुख पानकी ललाई ॥ नाशा बुलाक मोती हीरा जो जड दियोहै ॥ सिर मोरमुकट सो है कानोंमें कुंडल आली॥मदहस्ति कीसी चालगति अंजन हगन दियोहै ॥ कटि किंकणी मनोहर नूपुर जडाऊ सोहै ॥ जोबन जुलम बिहारी टोनासो क्या कियै है ॥ हँस हँसके मेरी ओरी सैनोंमें कर इशारे ॥ और मंद मंद हँसके मनको चुरा लियोहै । छबि देख वाकी मोकों क्षणभर न. कल पडैहै॥ रंगीनें वाके ऊपर नोंछावरमन कियोहै॥

❀ इति ❀

अथ खेवट लीला लिख्यते ॥

सखाजी बचन–दोहा ।

दधि बेचन नव नागरि, गई बिक्यो न छदाम ॥
निंदत पुर पुर बासनिन, लवटीं अपने ग्राम ॥

सखीबचन-राग धनाश्री ।

हम कोंन सगुन वा बीरिचली ॥ ना दधि बिक्यो न दिवस रह्यो सखि या पुर बासिन बहुत भलीं ॥ दधि की सारन जानें कोऊ देखी सबहीं कुंज गली॥ ललित किशोरी पालागत हों आज सों अब या ग्राम रली ॥

समाजी वचन-दोहा।

नवल सखी सब वदत मुख, बैन अटपटे वीर ॥
सांझ भेय पहुँची पलटि, कालिंद्रीके तीर ॥

प्रियाजी बचन-रागधनाश्री।

मुग्धो चहत दिन दूर नगरिया कैसे उतरें पार-री ॥ ना मल्लाह नहीं कोई नैया रहीं बारकी बार-री ॥ कहा करैं सब जुवति गाम की बाट निहार निहाररी ॥ ललित किशोरी करै ननदिया बोलिन की बौछाररी ॥

प्रियाजी बचन-दोहा ॥

ऊंचे चढ देखो सखी, दूर दूर नैयाय ॥
जित तितहू देखी परै, बोल लीजिये ताय ॥

समाजी बचन-दोहा।

धाय २ ऊंचे गई, मानो दामिन मेरु ॥
एक सखी सो द्रुम चढी, जो कनक लतासिहेरु ॥
उभय कमल कर गहि लता, कालिंद्री दिशिहेरु ॥
कर अंगुरी कहिबे लगी, कहि ऊंचक तन टेरु ॥

सखी बचन दोहा।

अहो किशोरी स्वामिनी, दूर दूर वा पार ॥
बीस बिसे नैया चली, आवत दमक अपार ॥

समाजी बचन-दोहा।

नैयापै मल्लाह बन, झमक परयौ वा ओर ॥

ताही क्षण लंपट छली, नागर नंद किशोर ॥

खेवट वचन--राग गौरी ।

मेरी आई नई जुवनियां उर लागो कोई कामिनियां ॥ मृगनयनी दया बिचारो निश सिजिया आप पधारो ॥ अंग मदनकी पीरै मेटो टुक मसक मसक कस भेटो ॥ मुख चुम्बन दै लै गोरी रस लूटो ललित किशोरी ॥

समाजी वचन-दोहा ।

नैयालखि बोली सखी, अहो प्रियासुकुमार ।
दई पठाई करि दया, आवत नाव निहार ॥
ऐसो सुन्दर सोहनी, श्याम बरन सुकुमार ।
जायो का मल्लाहनें, मन मूरत सिंगार ॥

प्रियाजी वचन--राग गौड मलार ॥

लाउरे लाउ मल्लाह नवरिया ॥ दई दई कर तोय निहोरों बेरन लाउ आतुरिया ॥ मन मानी देहैं उतराई सांझ भई अकुलांय गुजरिया ॥ पलमें पारलगाय हमें तू गुण मानेंगी ललितकिशुरिया ॥

खेवट वचन--राग झझोटी ।

नाहीं लाऊं नाहीं थोर पास नवरिया॥ सुन्दर सुघड नवरिया मेरी पट भूषण बहु भारी ॥ लचकत कटि दधिभांड भारसों ललित किशोरी ग्वारी ॥ कुच नितंबके भार चलै ना हो बरषाने वारी ॥

समाजी बचन-दोहा।

लाउ लाउ मल्लाहके, बातन मत इठ लाय॥
उतराइ तोय देंयगी, लाल बात रहि जाय॥

मलाह बचन-रागगौरी।

टुकरहो नवरिया लावतहों॥ आवतहों जू आवतहूं निज भागन आज सराहतहों॥ नहीं बातमें तनक बनावत हों॥ जिजमाननके गुण गावत हों॥ उत पूरब पवन झकोर रही॥ इत जमुना अधिक हिलोर रही॥ करबह्री छुट छुट ओर रही॥ यहनैया कर अति जोर रही॥ तुम दरस नेंन अनु रागेजू॥ अति भाग हमारे जागेजू॥ बलि नीर गंभीर है आगेजू॥ अब यहां बाट नाहिं लागै जू येनैना रूप लुभावांजी॥ कर काम करत नहीं पावांजी॥ इत डांडा छुट छुट जावांजी॥ उत नैया-धार बहावांजी॥ उर धीर धरो नव तरुण लली॥ मैं पहुंचैहों क्षणमाहिं थली॥ मैं आयो बेगिनबेर अली॥ अब ललित किशोरी जोर चली॥

समाजी बचन दोहा।

घोंटू घोंटू पानिये, नैया दई लगाय॥
कनक नसैनी काढ़िके, दीनी ताहि लगाय॥

परस्पर बचन-दोहा।

कहा नामरे मांझिया, रहै कोनसे धाम॥

नेह नवरियामें कुटी, रशिका मेरो नाम ॥

खवट बचन– दोहा ।

हों धीमर तम गोपिका, लीजै चरण धुवाय ॥
बूंद बूंद अचमन करूं मेरो कुल तर जाय ॥

सखी वचन– दोहा ।

सोचो कहा यामें प्रिया, लीजै चरण धुवाय ॥
चतुरन की यह रीतिहै, लीजै काज बनाय ॥

खेबट वचन--दोहा ।

एक एक कर छिनकमें, सबकूं दऊं उतार ।
सभी संग नव नागरी, चलिये ना बलिहार ॥

सखी बचन--दोहा ।

एक एक हम ना चलें, लोक लाज कुलकान ।
हम तरुनी और तरुन तू, चरचें चतुर सुजान ॥

समाजी वचन–दोहा ।

धसधस जल पलटीं सभी, भीजन बसनडराय ॥
अंकम भर भर धीमरें, दीनी तुरत चढाय ॥

खेवट बचन-दोहा ।

छोडत हों नैया अबै, सम्हर बैठिये बाल ॥
खोल दई गुण बोलकें, यों मांझी तत्काल ॥

समाजी वचन--दोहा ।

अपने रस नैया चली, दई मलाहनें छांड ।
लग्यो बिलोकन बिधुबदन,कहु बल्ली कहुं डांड ॥

प्रियाजी बचन रागजंगला।

संजनी निरखत मेरो रूप ॥ चन्द्रसो अंग अनंग लजावत जायोरी काऊ भूप ॥ ललित किशोरी मूक भयो लखि परो बिरहके कूप ॥

खेवट वचन-- ठुमरी ।

कौन यतन कर तारों छबीली कौन यतन कर तारों ॥ चलत न कछु बरबस नन्दसो बहुतक बात बिचारो ॥ बनत न दोदो काम एक संग कैसे पार उतारो ॥ नैया खेवो ललित किशोरी कै यह रूप निहारो ॥

समाजी बचन दोहा ।

चली नवरिया पलकमें, पहुंची नीर गम्भीर ॥
चलत पवन लखि लहर जल, अबला भई अधीर ॥

सखी वचन रागपूर्वी।

धीमर बंश बिभूषण श्याम ॥ तेरी राति जनम्यो नाहिं दूजो चंद मंद कर सुख अभिराम ॥ करुणा सदन सीलको आगर गुणसागर रसिका सुचि नाम ॥ ललित किशोरी कर आतुरता अकुलानी सब बाम ॥

खेवट बचन राग गौरी।

यहां कहुं बांस लागत नांहि ॥ लेउ सम्हार आपनी नैया चल न सकत उत माहि ॥ नाहिं जु

नाहिं हमोर बसकी भंमर परत यहि ठाहिं॥ ललित किशोरी जल भर आयो कहा करें कित जाहिं॥

सखी वचन- रेखता।

अरे मल्लाहके जालिम हमें मझ धार क्यों बोरे॥ लगादे पार किसतीको नहीं क्यों बादवा जोरे॥ जराबल्ली लगा जालिम यहां जल बहुत हिल्लोरे॥ ललिताकिशोरी गुण मोन निठुर क्यो हंसके मुख मोरे॥

खेवट बचन-राग रेखता।

बहुत है भार भूषण का इसी से डग मगाती है॥
जराफेंको जराफेंको बसन नाहिं चलने पाती है॥
ललित किशोरी जमुनामें डुबावो लाज थाती है॥
सकुचके भारसे तुमरे यह नैया डूबी जाती है॥

दोहा।

लोक लाज कुल भारहै, कुलकी कान न धोय॥
अबै बोरिये इन सकल, नैया हलकी होय॥

समाजी बचन-दोहा।

कछु भूषण कछु बसन सब, दीनउतार उतार॥
कालिन्दी अरपण किये, मांझी सिखउर धार॥

खेवट वचन-दोहा।

गोरस सभी पिवायके, माखन देवच्खाय॥
पार लगाऊं पलकमें, मोतन बल बढि जाय॥

समाजी बचन दोहा ।

तनक तनक गोरस दियो, माखन दियो खवाय ।
शेष ढुरायो जमुन में, दीने भांड बहाय ॥

मलाह वचन सोरठा ।

कह्यो लेउ मो मान, पार होय बेडा अबै ॥
करो पतिव्रत दान, कालिन्दी मझधार मे ॥

सखी वचन दोहा ।

दान पतिव्रत नां करें, प्राण रहें चह जांय ॥
एरे कुटिल मल्लाह के, ये बातें न सुहांय ॥

रेखता ।

अरे मल्लाह के जालिम हमें नहिं पार करताहै ॥
यहां मझधार में लाकर जुलम की बात करताहै ॥
सुना नहिं कंस नृप तैने नहीं डरसे तू डरता है ॥
अकेली जान ब्रजनारी हमारी लाज हरता है ॥

खेवट बचन दोहा ।

मदन देव पूजन करो, मन बुध चित हंकार ॥
नव निकुंज बिच पूजि हो, होउ क्षणक में पार ॥

सखीबचन-दोहा ।

मदन न पूजें मांझिया हमरे ना कुल रीति ॥
तनक किशोरी की कृपा लेंय छिनकमें जीति ॥

खेवट वचन-- ठुमरी ।

नाहिंजू नाहिं हमारे बसकी ॥ अपनीसी बहु-

तक कर हारयो नेक न इत उत ठसकी।मैं इकलो यह बहुत बुझाली चलत न मेरे मसकी ॥ ललित किशोरी नीर उलीचो जुर मिल सब आपसकी ॥

सखी बचन राग काफी ।

भर भर जमुना नीर उलीचो ॥ कनक कटोरा तरुण छबीली नवल नेह द्रुम बेली सींचों ॥ झुकत नवरिया चहुं दिश चंचल चपल मांझिया ऊपर नीचो ॥ ललित किशोरी डग मगात अलि बैठि जात थरसल दृग मीचो ॥

खेवट बचन ।

जल्दी नैया चलि उठै याको है एक मंत्र ।
सात पांच मिलके सभी लिखो डामरू तंत्र ॥

दोहा ।

एक एक सुनि लिजिये मो मुख कान लगाय॥
करो याद या मंत्रको तुरत पार ह्वै जाय ॥

सखी बचन दोहा ।

भली भली मल्लाह के, बेगी मंत्र बताय ॥
जा बिध नैया भमर ते, तुरत पार है जाय ॥

समाजी बचन रागकाफी ।

मांझी मंत्र कहत हितकारी ॥ बांयो हाथ शी-शकर दांएं परस कपोलबाम सुकुमारी ॥ हों मो-हन कहि चूमलेत मुख अंगुरिन ओट निपट छ

लियारी ॥ ललित किशोरी कहतन कोऊ डुलतन लाज सकुचकी मारी ॥

खेवट बचन–राग दीपचन्दी।

ऐसे डांड गहो मेरी प्यारी ॥ या बिधि ठाडी होउ झुकनसो चरण एक धर कोर निवारी ॥ जप जप मंत्र मनही मन यों कर चपल चलै ब्रजनारी ॥ ललित किशोरी पारलगै चट खेवोजी खेवो सबै सुकुमारी ॥

पुनि खेवट वचन--दोहा।

जो लों सुनिहो मंत्रना, तरुण सिरोमणि नार ॥
डांड छिये बिन आपके, बेडा होय न पार ॥

सखी वचन– रागकाफी।

मांझिया कैस नांच नचावै ॥ कबहु कहै तुममंत्रप ढो सब कबहू डांड गहावै ॥ कबहु कहै भार भूष ण को कबहू हँस मुसक्यावै ॥ रंगीलाल कबलों सहैं तेरी झूंठ मकर बनावै ॥

प्रियाजी बचन–दोहा।

अहो छबीली मानिये, यामें नहिं कछु हानि ॥
सुनिये मंत्र मलाह को, सीखि लीजिये मानि ॥

समाजी बचन-दोहा।

नैननही आयुश दियो, मांझी तिहि ढिगजाय ॥
मंत्र बतावन मुख लग्यो, दांये कान लगाय ॥

समाजी वचन-दोहा ।

चूम कपोल मल्लाह नें, ललक बोल बलिहार ।
मूंदे कर कैसी बनी, चट पट कुंज किवार ॥

प्रियाजी बचन दोहा ।

ललित किशोरी उझकि कें, अलियन कही पुकार
छल बिद्या कर छलिननें, अजहुं छली ब्रजनार ॥

प्रियाजी बचन--दादरा ।

दगा भई ललिते नंदलाल ॥ मैं जानी कछु बात कहैगो दई किबरिया हाल ॥ ललित किशोरी निश दिन मेरी रहत गले की माल ॥ लाज गई कुल कान मिटी सब हाय दई इन ख्याल ॥

रेखता ।

सुन्दर सलोंने श्याम नें बंसी अधर बजाई ॥ धुनि सुनिके व्रज की बाला सुध बुध सकल गमांई कोई पहिर हार पांयन पाजेब गले में डाली ॥ कांन बिच नथ पहिर के अद्भुत सिंगार लाई ॥ कोई एक नैनन अंजन आंजे ही उठिकें दौरी ॥ कोइ ओढ लहंगा सिरपै साडी कमर सजाई ॥ कोई जैसे बैठी घरमें वैसेही उठिके भाजी ॥ कछु नासम्हार तनकी जादूकी राग गाई ॥ फिर जाय सबनें बन में नंदलाल को निहारा ॥ करते ही दरश सबनेंस ब धीरधोबहाई ॥ सिर पेच मुक्करेशी कुंडल जडा

ऊ सोहै॥ नाशा बुलाक मोती पै मन जात है लुभाई ॥ कटि किंकणी पीताम्बर पग पायजेव सोहै ॥ लखि रूपकी निकाई बलिहारी रंगि जाई ॥

अथ बंशी लीला लिख्यते ॥

समाजी बचन–दोहा।

मधुर सुधारस बांसुरी, अधर धरी नन्दलाल ॥
ब्रजबाला सब बस भईं, सुनि सुनि शब्द रसाल ॥

ललिता बचन--वार्ता ॥

अरी सखी आज श्रीवृन्दावन में ऐसी बंशी बजी है कि वाकी रसभरी तान सुनिकें हमारे प्राण विकल होतहैं ॥

राग विहाग।

बैरिन बाज री कहुं बेणु कैसी करों अबदैया ॥ वा दईमारी को कल न परत है तैसोई मिल्यो बजैया ॥ राग बिहाग मधुर मुख गावै बलिदाऊ को भैया ॥ बान समान तान उर लागत कोऊ नहिं समझैया ॥ सोवतरैनि मैन उपजावत लाज मरों घर भैया ॥ हरिबिलास मनहरयो हमारो सुन्दर श्याम कन्हैया ॥

विशाखी वचन--दोहा।

अहो बांसकी बांसरी, तें तप कीयो कोंन ॥
अधर सुधापियकोपियै, हमतलफतनिजभोंन ॥

रागकाफी।

मीन दीन सम कीन श्याम मोहि बंशी तान लियो॥ बिषधर अरबिष देत बँसुरिया आप पियूष पियो॥ उतै रवि सुत इत सौतसतावै आध अमोघ दियो॥ सगर सुतू नित व्याप रैनि दिन व्याकुल करत हियो॥ अंग नृपति सुत जग दुख दाई पुनि ब्रज आय जियो॥ हरिबिलास सुनि गुरु अब सजनी बस घनश्याम कियो॥

सखी चन्द्रावलि वचन-दोहा।

आली कालीते अधिक, बंशी बिष उतपात॥
वह काटे ते चढत है, वह फूंके चढि जात॥

ललिता बचन राग-ललित।

बाजी बंशी नींद नहीं आईरी॥ जबते बजी मोहि कलन परत है युगसम रैन गमाईरी॥ एकतो डर घर कंत सखीरी बहुर ननद दुख दाईरी॥ मन मथ अंग अंग मथन सब लाग्यो बिन देखे यदुराईरी॥ सुनि सजनी बीती सब रजनी पलभर पलक न लाईरी॥ हरिबिलास हरिललित रागनी बेणु अधर धरगाईरी॥

महादेवी बचन दोहा।

अरी क्षमा कर मुरलिया, परत तिहारे पाय॥
सुनि सुनि तेरे शब्द को, दुखी होत हम हाय॥

राग जंगला ।

बांसुरिया हरि अधर धरी है ॥ तजि सब काज चलो अब सजनी बहु दुख दायन बैर परी है ॥ जबते जाय मिली मोहन मुख तब ते अति अनिरीति करी है ॥ सोवत निश मोहि पकर मंगावत पुरजन गुरुजन लाज हरी है ॥ त्रिभुवनको करता चतुरानन ताते दुगुण बदन बसरीहै॥ बोलत मधुर सुधासम बाणी हिये कपटकी खान खरी है ॥ भनक सुनत कल तनक परत नहिं घाट बाट नित रहत अरी है ॥

चित्ररेखा बचन-दोहा ।

कह्यो न करिये क्यों सखी, पियसुहाग को साज ।
अहो बावरी बँसुरिया, मुख लागी मति गाज ॥

राग हंसवट ।

बजीरी कहुं बैरन बेणु बजी ॥ मन्द मन्द मधुरी धुनि छाजत सुर शृंगार सजी ॥ देत शूल मनमैन अचानक तजि सुख सेन भजी ॥ इत उत खोजरही बन बाला गुरुजन नाहिं लजी ॥ निशदिन व्यापरही दुखदायन सब कुल कान तजी ॥ हरिबिलास त्यागौ सब जबते नटवर क्रांतिसजी ॥

प्रियाजी बचन दोहा ।

बाजे मति अब बांसरी, मतिपिय अधरन लाग ॥

अरी घर गई देख क्यों, रोम रोममें आग ॥

राग काफी।

सभी बाजोंपर काफी बंशी जहर भरी ॥ बैरन प्राणविकल करदीने रैन सैन बिसरी ॥ तबते मैन चैन नहिं दीनों गति मति सकल हरी ॥ सोवतही आगार अटापर औंचक जागि परी ॥ मधुर मनोहर बेणु रसीली निशदिन बिबस करी ॥ हरि बिलास गुण कौन बखाने गिरधर अधर धरी ॥

दोहा।

हे अभिमानी मुरलिया, करी सुहागन श्याम।
अरी चलाये सखिन पै, भले चाम के दाम ॥

राग सोरठ।

मुरली श्याम कहां धों पाई ॥ करत नहीं अधरन ते न्यारी कहां ठगोरी लाई ॥ ऐसी ढीट मिलतही है गई उनहीके मन भाई ॥ हम देखत वह पियै सुधारस देखोरी अधिकाई ॥ कहा भयो मुख लागी हरिके बचनन लियो रिझाई ॥ सूरश्यामको बिबस करावत हरे बांसकी जाई ॥

प्रियाजी बचन-दोहा।

तो कारण घर सुख तजो, सहा जगत के घेर।
हमको तोसों मुरलिया, कौन जन्म को बैर ॥

रागदेश–सोरठ ॥

बंशी नहीं यह सौति हमारी ॥ याहीनें गृह काज भुलायो सुध बुध सब हरि लई हमारी ॥ जो कुल वंत प्रवीन नारि जग धीरज धर्म पतिव्रति वारी ॥ तिनहू की यह लाज बिगोवै बनबन फिर-तहैं बदन उघारी ॥ नारायण हमतो नित तरसें यह भई अधरन की अधिकारी ॥ कैतो यही रहैगी या ब्रज कै ब्रजमें बसिहैं ब्रजनारी ॥

सखी बचन--वार्ता ।

हे प्रियाजी ये दई मारी बंशी हाथ पांवन को धंधो हू छुडाय देय है ॥

पद ॥

त्यागें ब्रजबनिता घरबास मुरलिया धुन सुनकै ॥ जबमोहन धर अधर बजावै लगत हियेमें जास ॥ मुरलिया० ॥ होत प्रवेश तान जब श्रवणन लगै न भल ब्रजबास ॥ मुरलिया० ॥ बिधि ब्रह्मलो-ककूँ त्यागै शिव त्यागै कैलास ॥ मुरलिया० ॥ तज पितुमात बंधु गुरु परिकर जाय करै बनबास ॥ मु-रलिया० ॥ होत उदोत लालसा नैनन देखन मुख मृदुहास ॥ मुरलिया० ॥ बिनदेखवह मोहनि मूरत मिटै न मन की प्यास ॥ मुरलिया धुन सुनकै ॥

वार्ता।

हे प्यारीजी हमारे मनमें ऐसी आवैहै कि या-
बंसी सौतकूं चुरायके दुबकायदें ॥

दोहा।

अरी बीर सब मेलकर, बंशी लेंय चुराय ॥
रैन दिनाकौ खटकनौ, या ब्रजते उठ जाय ॥

प्रियाजी वचन-वार्ता।

अच्छौ सखी चलो ? आज श्रीलालजी महारा-
जकी बंशी कूं चुराय लावें ॥

मनसुखा बचन--वार्ता।

अजी श्री लालजी महाराज आज सब सखी
मिलकें आपकी बंशीए चुरायबे कूं आवें हैं ताते
या बंशीये आप मोकूं दै देउ ॥

दोहा ।

कह्यो मान घनश्याम अब, बंशी दैदे मोय ॥
नातर ब्रज की गोपिका, ठगनी ठगलें तोय ॥

लालजी वचन--वार्ता।

अरे मनसुखा ले मेरी बंशी कूं अच्छें दुबकाय
के राखियो ये बंशी मोहि प्राणनतें प्यारी है ॥

सखाजी वचन-दोहा।

बंशी उरसी फेंटमें, भाज्यो मुख मटकाय ॥
जहां हतीं ब्रज गोपिका, तितही पहुंचो आय ॥

सखीबचन--दोहा ।

अरे मनसुखा तन सुखा, नेक इतै लौं आय ॥
माखन मिसरी देंय तोय, खैयो पेट अघाय ॥

मनसुखा वचन-दोहा ।

माखन मिश्री हे सखी, मोय न नेक सुहाय ॥
अरी सखी कहा कारणें, मोसों तू ललचाय ॥

सखी वचन दोहा ।

नृत्य करन हम चाहती, प्रेम सहित हरिध्यान ॥
ढूंढ फिरीं पायो नहीं, तो सम प्रेमी आन ॥
आउ परस्पर मिल करैं, मनसुख रासबिलास ॥
हिलमिल बढिहै सुखअधिक, पूरणप्रेम प्रकास ॥
सखिन सहित तब मनसुखा, नृत्यकरत रसबोर ॥
प्रेम बिवस धरणी गिरो, बंशी लीनी चोर ॥

मनसुखा वचन—वार्ता ।

अजी श्रीलालजी महाराज ? यानें मेरी फेंटमें ते तुमारी बंशी लै लीनी है ॥

लालजी बचन--वार्ता ।

अरे मनसुखा मैंने तोतें पहिलेही कहीही कि देख मेरी बंशीकूं अच्छे धरियो सो तैनें मेरी कही नहीं मानी वा बंशीकूं वेही सखी लैगई होगी चलो बिनें ढूंढें ॥

लालजी वचन--रागसोरठ।

कहुं देखी भैया बंशी चुरावन हारी ॥ हम जमुना स्नान करतहैं वेजल भरवे आईं ॥ सात सखी मिल मेले ठेले बिन मेरी बंशी चुराईं ॥ घाट बाट हम सबही ढूंडे ढूंडे अटा अटारी ॥ पात पात वृन्दाबन ढूंडो तोउ न मिली राधाप्यारी ॥ आले पातको लहँगा सोहै श्याम रंगकी सारी ॥ हरीगोटकी चोली पहिरे वही वृषभान दुलारी ॥ जमुना तीर कदमकी छैयां तहां खडे बनवारी ॥ सूरदास बलिजाय चरणकी तहां मिली राधाप्यारी ॥

लालजी वचन।

हमरी बंशी प्यारी तुमदो वृषभान दुलारी ॥
कहां दुराई सांचि बतावो मुरली प्राण पियारी ॥
वो मुरली अति सुन्दर मेरी प्रिया सोंह तिहारी ॥

प्रियाजी वचन।

हमनहीं ललन बिलोकी मुरली तुमकहुं अनत बिसारी ॥ पूछतहो क्यों छैलछबीले कोजाने कहांडारी

लालजी वचन।

वोबंशी मोयनेंक न बिसरे दीजे बेग बतारी ॥
अब न छिपावो सांच बतावो बिनती करूं तिहारी

प्रियाजी वचन।

नहीं जानें तुम कहां धरीहै बांसरि श्रीगिरधारी ॥

बार-बार क्यों पूछतहोजू मन मोहन गिरधारी ॥

लालजी बचन ॥

वा बंशी नें त्रिभुवन मोह्यो कहां लगि कहूं बिचारी
तुमतो गुणनहींजानो वाके सुरनर मुनिहितकारी

प्रियाजी बचन।

हमनहीं श्याम छिपावें मुरली तुमसों कुंजविहारी
सांची कहैं मुरलिया हमनें नांही नयन निहारी ॥

लालजी बचन।

यहमुरली मेरी ललितमोहनी सोतुम रखीलुकारी
बनबन मांहिं बजावों गावों तुमरेही गुणगावों प्यारी

प्रियाजी बचन।

सो सब सांची कहो कुमर जो, हम कहा जानें
नारी। । येगुणया मुरलीके माहीं सुनमोहीं ब्रजनारी

लालजी बचन ॥

हँस मुसिक्याय देउतुम मुरलीप्यारी मोहि बता-
री॥बार बार बिनती मैंकरतहौं मुरली मेरी प्यारी ॥

लालजी बचन।

बांसरी दीजिये ब्रजनारि ॥ काल सखी या ठौर
बांसरी भूल बिसारी ॥ लै जुगई तुम धाम हांक
हम सुनी तुह्मारी ॥ नाहैं तुमरे कामकी प्यारी
बंशी हमरी देउ ॥ हम आतुर है मांगहीं तुम
नाहिं न नांहिं करेउ ॥

सखी बचन ।

बंशी कैसी होत नाहिं हम नैनन देखी ॥ पिता तुह्मारे साध कान्ह तुम बडे बिवेकी ॥ इतउत खेलत तुम फिरेहो वहांही भूलगयेहो ॥ सांच शब्द बाबाकी सों हम नाहिं जू नाहिं लई ॥

पद ।

कहाजानो मुरलियाकी सार गमारी ॥ मोल अमोली बंशी मेरी तुम गोबरबीनन हारी ॥ खोटे खरेको भेद न जानो देत सदा मुख गारी ॥ कर गोरसकी छाछ बनौ तुम सुघड कहारी ॥ माणिकूं माहिंमें डार काच तुम परखौ कर धारी ॥ करत बृथाही जतन मुरलिका छिपि है नाहिं हमारी ॥ हाथ कहा आवै इन बातन नाहक ठानौ रारी ॥

लालजी बचन ॥

बंशी हमरी देउ काहेकों रार बढाओ । मनमें समझ बिचार काहेकों लोग हंसाओ ॥ लोग हंसें चरचाकरें हो मनमें सोच बिचार ॥ यह बंशी मेरी प्रेमकी तुम काहेन देत गमार ॥

सखी बचन ।

हमसों कहत गमार आपनी करत बडाई ॥ माहूंगी गुलचा गाल तभी बाबाकी जाई ॥ तुमसे

कितने ग्वारियाहो मांगत हमसों छाछ ॥ चतुराइ तुम छांडके कहा नचाओ हाथ ॥ (नाच)

लालजी वचन ।

या बंशीकी सार कहा तुम ग्वालिन जानों ॥ तीनलोक पटतार तासों मेरो मनमानों ॥ या बंशी खोजत फिरतहो शिव बिरंच मुनि नाथ ॥ परचो परचे है नहीं तुम कहा नचाओ हाथ ॥

सखी बचन ।

नंदमहरके कुम्मर कान्ह तोय अब कौन पतीजे ॥ भूलगये कहूं अंत दोष हमहींको दीजे ॥ लै लकडी मुखपर धरीहो बंशीवाको नाम ॥ जा घर तुम से पुत्र हैं लाला उजरत तिनके गाम ॥

लालजी बचन ।

बसैं कि उजर होंय कहा परवाय तुह्मारी ॥ तुमसीहैं लखचार नंदघर गोबरहारी ॥ इक लख है मेरे संग फिरें हों लख आमें लख जाय ॥ लख ठाडी दरशन करें हो लख ठाडी ललचांय ॥

सखाजी बचन ।

सुघड सयानी नारि हाथ गहि बंशी लीनी ॥ पूरन परमानंद सामरे ए हंसके दीनी ॥ दैबंशी ग्वालन मिली हो घूंघट बदन दुराय ॥ सूरदास प्रभु हारी ग्वालिन जीते जादोराय ॥

अथ बंशीनटलीला लिख्यते ॥

समाजी वचन--दोहा ।

रसिक लालकी बांसरी, गिरी फेंट ते जाय ॥
ललिता सखी उठायकर, दईलदैती जाय ॥
चितबत फेंटा तान सखि, चकित रहे नंद लाल ॥
अरी कितै: कहां बांसरी, मग खोजत लखिख्याल ॥

लालजी बचन--दोहा ॥

तुमही लीनी चंपके, अबही गई हिराय ॥
बार बार बलिहार मैं, बँशी देउ बताय ॥

सखी बचन दोहा ।

हम नाहीं देखीदगन, बंशी कैसी होय ॥
जाय बांस बनमें कहूं, लाल लीजिय जोय ॥

लालजी बचन दोहा ।

अहो बिशाखा तुम लई, सांची ही कहि देउ ॥
नई नई तान सुनाय हौं, रस समाज सुख लेउ ॥

सखी बचन दोहा ।

काननहू हम नां सुनी, बनहीमें कहुं हेर ॥
टेरत हेरत बांसरी, आये :हो कहुं गेर ॥

समाजी बचन दोहा ।

हे ललिते तुमनें लई, मम मुरली सुख दाय ॥
नाहिं नाहिं क्यों करतहो, मनहीमन मुसकाय ॥

ललिता बचन--दोहा ॥

तमकि झमकि न्यारी भई, दैदै गुलचा गाल ॥
मत वारेन की सी लता, लगत तुमारी लाल ॥

समाजी बचन-दोहा ।

इतै लाल खोजत फिरैं, बंशी चहुं दिश धाय ॥
उतै लाडली अधर धर, दीनी तुरत बजाय ॥

लालजी बचन-दोहा ।

सुनी लाल मुरली धुनी, रोम रोम हरषाय ॥
झमक बोल बलिहारियां, मांगत बिनय सुनाय ॥
मन्द मधुर और लहरनी, झीनी ललित रशाल ॥
मोहू पै ना आजलों, ऐसी बाजी बाल ॥

रागसोरठ ।

दैदीजै सुकुमारी यह बांसरी बलिहारी । राधा राधा सरल बजाऊं तन मन डारों वारी ॥ कोमल अधिक अधिक माखन सों परै होयगे हारी ॥ ललित किशोरी बिनती मोरी मोतन तनक निहारी ॥

प्रियाजी बचन--रागसारंग ।

हो तुमरी मुरली बन पाई ॥ बनबन बीथि लतातरु हिलमिल ललिते संग ढुंडाई ॥ आहा लाल देहूं मैं तबही नट की कला मोहि देउ दिखाई ॥

समाजी बचन-दोहा ।

इतै प्रिया हिल मिल सखी, बैठ कदमं की ओट ॥

नखसिख नटबानिक बनो, जंगिया कस्योलंगोट।
ग्वाल बाल सब संग के, नटनी तिन्हैं बनाय ॥
आहा आहा करत सब, नच ढफ ढोल बजाय ॥

लालजी बचन-वार्ता।

आहाहाहाहा बलिहारी श्री वृषभान दुलारी के बोलबाले रहैं नेह नगरका नट हाजिर मुजरे पर निगाह आहा हाहा हा बलिहार ॥

लालजी वचन--रागकान्हरो नायकी।

राधाजीरो बढै सुहाग॥ फूलै फलै प्रीतिकी बेली नवल सनेही सों नित नित लाग॥ बैनन में प्रीतमकी बतियां नैनन रंगरंगे अनुराग॥ बलि बलि या मन मोहनि मूरत आज हमारे जागे भाग॥

समाजी बचन--दोहा।

एक एक कर नट कला, मांगत हाथ पसार ॥
बंशी दीजे लाडली, मोतन तनक निहार ॥
आहाहा कर नाटिननें, पीटयो धौल धमार ॥
टेढी सूधी करकला, चटक मटक सुकुमार ॥
झूम झटक कीनी कला, टेक हथेली भूम ॥
कभूबांस पर कर कळा, कभू बांसपर घूम ॥
कबहू सीसबळ है खडे, खंभ ठोके नंदलाल ॥
कबहु कर पग सीसबल, चलत मोरकी चाल ॥
रीझ रीझ नटकी कला, नवल बधू सुकुमारि ॥

छला अँगूठी आरसी, सबहिन दई उतार ॥

प्रियाजी बचन-दोहा ।

हौं नट कला प्रवीन तुम, प्यारे मोहनलाल ॥
यों कहिये वृषभानुजा, बकसी मोतिनमाल ॥

रागकाफी ।

बिहंस लाडली लालही बकसी मुक्ता माल नवीन ॥ नट नागर कर जोर कह यह तो अतिसुख दीन ॥ ललित माधुरी रशिक सुघड को मन बांछित बिधदीन ॥

लालजी बचन--वार्ता ।

श्री वृषभान दुलारी की जै ॥ नख शिख रूप उजारी की जै ॥ घुंघरी अलकों वारी की जै ॥ बैनी ब्यालिन कारी की जै ॥ बेंदी भाल सम्हारी की जै ॥ भृकुटी कुटिल कटारी की जै ॥ कंचन बाहु बिशाली की जै ॥ कुंभ उरोजन वारी की जै ॥

वार्ता ॥

हेप्यारीजी अबआप प्रसन्नहैकें हमारीबंशी दै देउ

प्रियाजी बचन-रागईमन ।

मैं तोरे संग मुरली श्याम बजाऊं ॥ ऐसे ही पिय सब छेदन पै अंगुरी चपल चलाऊं ॥ पंचिम रिषभ निनाद सुरन लो संग संग टीप लगाऊं ॥ ललित किशोरी ईमन काफी सोरठ गाय सुनाऊं ॥

लालजी वचन--रागईमन ।

तिहारे कर मुरली बजैगीना ॥ ललित त्रिभंगी बिराजे बिनही सजैगीना ॥ लट पट पेच मुकुट बिन धारे छजैगीना ॥ ललित किशोरी बिन नट बाने रजैगीना ॥

लालजी वचन-वार्ता ।

तब श्री प्रियाजीनें प्रसन्नह्वै कें श्रीलालजी महाराज की बंशी दैदीनी ॥

ललिता वचन--वार्ता ।

हे श्रीलालजी महाराज आप प्यारीजी कूं कोई अच्छी रस भरी तान गायके सुनाओ ॥

रागझंझोटी ।

प्यारीजी कूं मंद तान अति भावै ॥ मधुर मधुर सुरतान रुचै चित गोविंद गाय रिझावै ॥ झीने-झीने मधुर अलापत ललिता बीन बजावै ॥ ललित किशोरी हरषि प्रसंसित सो सुख कहत न आवै ॥

समाजी वचन--दोहा ।

सुनत श्रवण मुरली धुनें, बिवस भई ब्रज बाल ॥
मोहन सों भेटी प्रिया, पर्‍यो प्रीतिको जाल ॥
बंशी नट लीला सरस, भक्तन के सुख साज ॥
पंडित रंगीलाल ने, संग्रह कीनी आज ॥

इति ।

अथ अवधूतनलीला लिख्यते ॥

सभाजी बचन--दोहा ।

रूपनाम जाके अमित, कहनसकै शत शेष ॥
छलन चल्यौ कीरति लली, सो धर जोगिन भेष ॥
त्रिभुवनकी छवि वारिये, छलिया विश्व निकार ॥
भोगी जोगी जगतके, या शोभा बलिहार ॥

ठुमरी ।

निरखो या जोगिनकी शोभा॥लता पत्र फल फूल बिमोहित नव नारिन खग मृग मन लोभा ॥ धूर कपूर लगाय अंगसों झलकत कछुक गात सम- राई ॥ सकुचत मिलतन चंद्र धूर छबि लज्जितकाम भस्म सुघराई ॥ मुद्रा कान डाल गल सेली गाती सों छाती कस लीनी ॥ पैर २ आभूषण अंगन मनों मैंन नायक छबिछीनी ॥ जोगन कहा जग- भोगनकी माणि कर सिंगार नखसिख सुकुमारी ॥ मेंहदी रची रुचिर चरणन कर बीरी बदन ललित मुख न्यारी ॥ बिथुरे केश बेष बेशर बर भामिन उमा रमा सकुचैनी ॥ ललित किशोरी चटक मटक छबि ललित चाल फब चित हरलैनी ॥

अवधूतिनि बचन पद ।

अजी हरि नाम भजो हरि नाम भजो ॥ दुनियां के

परपंचों में हम मजा नहीं कुछ पायाहै॥भाई बंधु-पितामाता पति सबसों चित अकुलाया है ॥ छोड छांड घर बार नाम कुल यही पंथ मन भायाहै॥ ललितकिशोरी जुगल चरणमें अबहम नेह लगाया है॥ क्या करना है संपति संतति मिथ्या सबजग मायाहै ॥ शाल दुशाला हीरा मोती में मन क्यों भरमायाहै ॥ मातापिता सुता पति बंधू सब गोरख धंध बनाया है ॥ ललित किशोरी चरण चारु भज तज ये जगत भुलायाहै॥२॥ बनबन फिरना बेहेतर हमको रतन भवन नहीं भाया है ॥ लता तरें पड रहनेमें सुख नाहिंनसेजसुहायाहै ॥ सोना करधर सीस भला अति तकिया ख्याल न आयाहै॥ललितकिशोरी नाम उसीका जपजपमन सुख पायाहै॥

पद।

नित हम हरि गुण गावें सजनी नित हम हरि गुणगावेंरी ॥ पवन पान कर रहें महीनों अन्न पान नहीं खावेंरी ।। पानी पियें न सोवें निशिदिन बैठि समाधि लगावेंरी ॥ खुल गई पलक कभी छिनभर तो करले बीन बजावेंरी ।। जमुने कूले बटतर भूले दिलबर के गुण गावेंरी ।। तरह तरह के आसन करके निर्गुण ध्यान लगावेंरी॥भेदसुसुम्ना नाडी मारग ऊरध प्राण चढावेंरी॥तुरत खेचरी मुद्राको

बल तन समेत उडजावेंरी ॥ ललित किशोरी नि-
र्जन बनमें जोगी जुगति जगावेंरी ॥

समाजी बचन दोहा ।

उझकि बिशाखा द्वारसों, कीरति सों कही जाय ॥
अद्भुत जोगिन गैल में, आई है एक माय ॥

कीरतबचन--सोरठा।

लीजै ताहि बुलाय, खान पान सनमान कर ॥
जोगिन बिमुख न जाय, द्वार आयपग परसके॥

सखी वचन दोहा ।

कीरति भवन पधारिये, रहौ आज की रात ॥
कछु भोजन कर जाइये, बन कों होत प्रभात ॥

जोगन वचन--झूलना ।

तजदीनी जब दुनियां दौलत फिर कोई के घर जानाक्या ॥ कंदमूल फल खाय रहै अब खट्टा और सलौना क्या ॥ क्षणमें शाही बकसे हमको मोतीमा-लखजानाक्या ॥ ललितकिशोरी रूप हमारा नहिं जानें तो जाना क्या ॥

समाजी वचन--दोहा ।

जोगनजग भोगनमुकुट, चली बिशाखासाथ ॥
नचत नचावत मुदितमन, दिये हाथमें हाथ ॥
उठी देखि के दूरते, कीरत की सुकुमारि ॥
सास्टांग करजोर के, कही प्रणाम पुकारि ॥

करप्रणाम आसनदियो, अति आदर मनफूल ॥
बैठी पद्मासन निकट, जोग कपटको मूल ॥
मंडलदे सब नागरी, बैठी जोगिन पास ॥
कीरति दोकर जोरके, बोली उरधर त्रास ॥

कीरत वचन–वार्ता ।

आपकी जन्म भूम कहां है ॥

जोगन–वचन ।

हमारी जनम भूमितो यह ब्रज ही है ॥

कीरत--बचन ।

आपको निवासस्थान कौनसो ठोर है ॥

जोगन–बचन ।

हमारो निवास स्थान प्रीति पुरामें है ॥

कीरत--वचन ।

आपने ये जोगाश्रम कबते लियो है ॥

जोगन वचन ।

जबसों नेह नगरिया में पग दियो है ॥

समाजी बचन- दोहा ।

जलझारी लाई सखी, कीरति चरण धुवाय ॥
बहुत भांति बिनतीकरी, आनँदउरन समाय ॥
तब जोगन आशिषदई, मनमें अति हरषाय ॥
चाह होयसो मांगिये, भाग सुहाग सवाय ॥

कीरत बचन-वार्ता ।

आपकी कृपासों सब आनंदहै कछु नाहिं चाहिये दूध पूत धन धाम लक्ष्मी सब परमेश्वरने दियोहै परंतु एक संदेह रहैहै कि ये किशोरी सोवतेमें चोंक चोंक परैहै और एकली बेकली बातें करतहै कभू लता२ कभू कुंज२ कभू श्याम२ कभू कपटी २ छली२ कभू रहरह सिसकरी भरभर हूंहूंकरबे लगैहै सो आप कृपाकरके याको यह दुःख दूरकरो ॥

समाजी बचन--दोहा ।

तबही जोगन हरषके, गह्यो ललीको हाथ ॥
बुद बुदाय फूफू करत, कछू मंत्र पढ माथ ॥
अवधूतन अंग अंगको, कर परसत मिसमंत्र ॥
भोजपत्र लिख लिख कभू, कभू बनावत जंत्र ॥

जोगन बचन-दोहा ।

कीरत आयशु देउ टुक, नचौं किशोरी संग ॥
झार मंत्रसूं क्षणकमें, सुद्ध करूं सब अंग ॥
नवल सखी जेती हती, सबहिन दैहुं नचाय ॥
काहू सों भय ना रहै, लेउं उतार बलाय ॥

कीरत बचन-दोहा ॥

अरी किशोरी सब नचो, इन संग सहज सुभाय ॥
अभय रहोगी आजसों, करिहै दूर बलाय ॥

समाजी बचन-दोहा।

सुनि कीरतके बचनकूं, नचन लगीं सब आय॥
ताकि धिना धिन बीचमें, जोगन बीन बजाय॥
निरतत राधा नागरी, सखियन लाय समाज॥
कियो गान कल कंठते, भूषण अद्भुत साज॥

रेखता।

नाचत छबीली राधिका शोभा अपार है॥
बिच गान करै जोगन करले सितारहै ॥ पगपाय
ल बाजें छुम छुम गति लेत मुरकके॥ कबहू उडाय
करकूं घूमें अपार है॥ कबहू ठुमक ठुमकके कटि
कोलचाय तिरछी॥ हंस हंस केगान करती कीरत
कुमारहै॥ ताथेई थेई थैया ताथेई थेई थैया ॥
इसतान को निरखके रंगी बलिहारहै॥

दोहा।

ताकि धिना धिन बोलके,नाचि नाचि गायबजाय॥
झनन झनाझन तालदै, बैठीं सब हरषाय॥
नाना मुद्रा आसनन, जोगन करत बिहार॥
पहिरे कंथा कपटको,मुरकत अंग सुकुमार॥

कीरत बचन- वार्ता॥

हे अबधूतिनजी कछु मेवा पकवान धौरीको
दूध औटो धरयोहै सो आप कृपा कर कछु जल
पान करलीजिये॥

जोगन बचन- वार्ता ॥

बहुत अच्छो जैसी इच्छा आपकी चलिये ॥

समाजी बचन-दोहा।

कीरत संग जोगन चली, संग सखी सुकुमार ॥
राजी भोजन कुंजमें, पद्मासनकूं मार ॥
व्यंजन थार संजोयके, कीरत परस्यो आय॥
जमुना जल झारी धरी, जोगन सन्मुख लाय ॥
कपट जोगनियां मूंदहग,कीनों कछुएक ध्यान ॥
भोग लगावत ढांक कर, करत इष्ट सनमान ॥
अवधूतिन टुक मौन रहि, बोली पलक उघार ॥
हमें न अंगीकार यह, व्यंजन और निहार ॥

कीरत बचन- वार्ता ।

हे अवधूतिनजी ऐसो मोसों कहा अपराध भयो, जासों मेरो सागपात आप अंगीकार नहीं करो? हम लोगतो गृहस्थ सदा अपराधके भाजन हैं आपको सदैव हमपर कृपा राखनी चाहिये ॥

जोगन बचन--वार्ता ॥

हे कीरतजी तुम और कछु बात मति समझो हमारे यह नेमहै जो हमबिना प्रशादी वस्तु अंगीकार नहीं करैं हैं ॥

कीरत बचन-वार्ता ।

आपने भोगतो लगाय लीनोहो ॥

जोगिन बचन-वार्ता ।

हमनें भोगतो लगायलीनों हो परंतु न जानें कहा संकोच करके हमारे इष्ट देवने नेंकहू भोग न लगायो सब पदार्थ जैसे को तैसो धरयो है ॥

समाजी बचन--दोहा ।

सुनत भई कीरत चकित, जान्यों उतकट योग ॥
अद्भुत याको देवता, प्रकट लगावै भोग ॥

कीरत बचन- वार्ता ।

हे महाराज आप कृपा करके भोग लगाइये ॥

दोहा ।

कीरतके सुनिके बचन, जोगन भोगलगाय ॥
रुचि रुचि सब भोजन कियो,मनमें अतिहरषाय ॥

वार्ता ॥

तब श्रीकीरतजी आचमन कराय बीड़ी दे हाथजोर अबधूतनजीसों बोलीं कि हे महाराज हमारी इच्छा कछु हरिगुण गान सुनिबेकी है ॥

जोगन बचन-वार्ता ।

बहुत अच्छो अब आप हरि गुण गान सुनिये ॥

दोहा ॥

कर सितार लै जोगिनी, मनमें आनन्द मान ॥
पद्मासनकूं मारकें, करन लगी कछु गान ॥

पद ।

यंह भेष हमैं अति भाया है ॥ छांड दिया सब मालखजाना हीरा मोती लुटायाहै ॥ फेंक फांक के साल दुशाले जगसे चित्त उठायाहै॥लोक लाज कुल कान छोड सब मन माशूक लुभायाहै ॥ धीरज धरम सभी छोड़ा तब मजा फकीरी पायाहै॥ जंगलमें अब रमताहै दिल बस्तीसे घबराया है ॥ मानस गंध न भातीहै संग मरकट मोर सुहाया है ॥ चाक गरेबां करकरके दम दम आहें भरना भायाहै ॥ छलित किशोरी इश्क रैन दिन ये सब खेल खिलायाहै ॥

राग गौरी कालिंगडा ॥

मुसाफिर रैनि रही थोरी ॥ जाग जाग सुख नींद त्याग दे होत वस्तुकी चोरी ॥ मंजिल दूर भूर भवसागर मान कूर मतिमोरी ॥ ललित किशोरी हाकिमसों डर करै जेर बर जोरी ॥

कीरत बचन-वार्ता ।

वाह वाह महाराज आपनें तो बडे प्रेमके डूबे भये पद गाये, कृपाकर ऐसे एक दो पद औरहू कहो ॥

जोगन बचन- वार्ता ॥

बहुत अच्छो:आप औरहू पद सुनिये ॥

राग ईमन ॥

साधो ऐसेही आयु सिरानी ॥ लगत न लाज लजावत संतन करतहि दंभ छदंभ बिहानी ॥ माला हाथ ललित तुलसीदल अंग अंग भगवत छाप सुहानी ॥ बाहर परम विराग भजन रति अंत सुमति पुर जवतिनदानी ॥ मुखसों ध्यान ज्ञान बर मनबहु कानन रति नित बिषय कहानी ॥ ललितकिशोरी तजि प्रपंच सब संगत साधन मनहि अति मानी ॥

राग ईमन ।

लाभकहा कंचन तनपाये ॥ बचनन मृदुल कमलदल लोचन दुख मोचन हरि हरषन धाये ॥ तनमनधन अर्पण कहा कीनों प्राण प्राणपति गुण नहिं गाये ॥ जोवन धन कल धूत धाम सब आयु गमाय गमाये ॥ गुरुजन गर्भ बिमुख रंग राते डोलत सुखसंपति बिसराये ललितकिशोरी मिटै तापना बिन दृढ चिंतामणि उरलाये ॥

दोहा ।

बडीबार हमको भई, कीरत तुमरे गेह ॥
सांझ भई बन जांयहम, राखराहियो नेह ॥

वार्ता ।

इनसब किशोरीनकी मनोकामना सिद्ध होय ॥

कीरतवचन-- दोहा ।

हे महाराज अवतो रात्रिको समय आयोहै सो आप यासमय बनमें कहां जाओगे आज यहांही रहो अटारीमें एकान्त बिश्राम कीजिये ॥

जोगन वचन- वार्ता ।

अच्छो आपकी यही इच्छाहै तो आज यहांही बिश्राम करैंगे और यहां बैठिके मंत्रहू सिद्ध करदेंगे ॥ आप ललितासों कहिदेउ जो सामिग्री चाहिये सो सब इकट्ठी करदेउ॥और हमारेपास कोई न आवै न शब्दकरे जब सब सोयरहैं तब मंत्र सिद्ध होयचुकैगो तब ललिता इन्हें जगाय लैजायगी तब वा जंत्रकूं इनकी भुजामें बांधके हम किंवार दैके समाधिमें स्थित होजांयगीं तब एक महूर्त रातिरहैगी जब हम उठकर चली जांयगी ताते हमकूं जाती समय कोई सखी टोकै नहीं ॥

कीरत बचन वार्ता ।

हे ललिता तुमजायके इनको सबकाम करदेउ और इनकेपास कोई जान आवन नहीं पावै जैसे ये आज्ञाकरें सो करदेउ ॥

समाजी बचन दोहा ।

अवधूतिन करगहिलई, ललिता ललित अटार॥
जाय पधारी सेजपै, मूंदे कुंज किंवार ॥

पलट वेग चुप चुप बदन, सबहि न गई सुवाय ॥
झूंठ मूंठ साहित्य सब, लावत इत उत धाय ॥
सोई सबको जानिके, कीरत कुमरि जगाय ॥
अवधूतन ढिग अटानमें, पहुंची दोनों जाय ॥
ताक्षिहीण जोगन तजो, अपनो कपटी रूप ॥
देख प्रिया चकित भई, देख्यो श्याम अनूप ॥

प्रियाजी बचन- वार्ता।

हे प्यारे छल विद्यामें बडे कुशलहो ॥

लालजी बचन-वार्ता।

हे प्यारी तुमहू तो कालि छलिकर आईहो ॥

आरती ॥

ललिता राई नोंन उतारे ॥ बिलसत रसिक मदन मदमाते झांकि झांकि रंध्रन रूप निहारे ॥ दंपति अति चित चाय कपोलन परस हुलस मन माहीं ॥ निरखें छबि चिर चारु हाथ गहि घनदामिन दीने गल वाहीं ॥ आनंद उमंग समातन अंगन छुटि छुटि अति लपटात छबीले ॥ अपनी घात अधर चट चूमि चपल हट जात रंगीले ॥ अंकम मसक रसीली बतियां करत परस्पर दोउ मन मांहीं ॥ ललित माधुरी कोंले बिलोकत ललिताकिशोरी दृगन अघाई ॥

इति।

अथ प्रीत परीक्षा लिख्यते।

समाजी बचन--दोहा।

एक समय श्री कृष्णनें, मनमें कियो हुलास ॥
प्रीति परीक्षा करनको, चलिये प्यारी पास ॥
नागरिरूप बनायके, यह विधि नंदकिशोर ॥
छलन चली श्री राधिका, बरषाने की ओर ॥

पद।

ठुमकि, चलन मुसिक्यान माधुरी बीरी पान चबाती ॥ पूछें सखा श्याम के श्यामहि कहां रहती कहां जाती ॥

लालजी बचन

बासी मैं गोकुल नगरी की नंदपुरी में रहती॥सुघर सुनी वृषभान सुता हम उनको देखन जाती ॥

सखा बचन।

जाउ जाउ याही मग सूधे, इत उत नेंक न हेरो ॥
इतै बसत है नंद महर सुत, घर जैहै कर फेरो ॥

लालजी बचन।

जानत हैं हम नंदनंदनसुत, यशुमति उनकी मैया
मैं देखो है सो यह बोले, गायन को चरवैया ॥

सखा बचन।

इत बांकोहै नंद कुमरतू, इतै करतहै बातें ॥ बचिहै भाग आज अपने ते, श्यामलताके नाते ॥

लालजी वचन।

जानत हैं उन संगके ठगिया, तुमआये यांसाजे॥
बछिह रहत गौके पाछे तनक मठाके काजे॥

समाजी वचन।

गौकुलते वृन्दाबन आई, फिर बरषाने जानौं॥
जो वे सखा संगमें खेलत, तिनहू नहिं पहिचानो॥

दोहा।

पट भूषण सिंगार सजि, नारि वेष सब साज॥
गये श्याम श्यामा सदन, प्रीत परिक्षा काज॥

समाजी वचन राग रामकली॥

नारि वेष कर नंद दुलारे॥ मृदु वृषभान नि-केत पधारे॥ जावक पद मंजीर मंद धुनि नीवी कस अधरोटा धारे॥ चंपकली गल मोतिनमाला पाणि वलिय माणि कनक सँवारे। अंगन भुज नव रतन दीप नव श्रुति ताटंक सील जग प्यारे॥ अंगदुकूल विचित्र वने अति भाल बिंदु लोचन कज रारे। शीश फूल द्युति मांग जाल माणि सुमन सुगंध रचे कच कारे॥ लटकन लटक रह्यो नाशा नथ, मुख तम्बोलअधर अरुणारे॥ माणिमयमौल चन्द्रिका राजे रति रंभा मद मोचन हारे॥ कीरत सुता समीप जाय हरि, बैठि सकुच निज घूं-

घट मारे ॥ हरिविलास मन मुदित राधिका रूप अनूप सुअंग निहारे ॥

दोहा

श्याम सखा को रूप लखि, प्यारी बोली बैन ॥
अहो सखी सुन्दर सुघड, लखि लाजत मन मैन ॥

प्रियाजी बचन – रागअलैया।

कितसों आमन भयो पियारी ॥ रूप अनूप महासुकुमारी ॥ नाम तुमार कहा है सजनी कौन नगरकी रहवे वारी ॥

लालजी बचन।

सुनों प्रियबैन कहत मनमोहन नंदगामकी गोपकुमारी ॥ श्यामसखी मम नाम कहत सब तव दर्शनलगि आस हमारी ॥ मारगमोहि मिल्यो नंदढोटा हाथपकर दीनी बहुगारी ॥ नाना विनय कराय तजी मोय चलत बहुर कांकरि तकिमारी ॥

प्रियाजी बचन।

तासु बचन सुनि कहत राधिका तुम स्वरूप मदहो मतवारी ॥ नंदनन्दन जगके सुखदाई बानी असपुनि कहब सम्हारी ॥

लालजी बचन राग सोरठ

सखी तू मानि ले वाकोनाम नहीं पछितावेगी ॥
मनकपटी मुख मीठो बोलै कली कली रस चा-

खत डोलै ऐसे सों कर प्रीति कहा फल पावैगी ॥
मेरी कही तू चित न धरत है याते अब मोहि
जान परत है तू अपने सुंदर तन रोग लगावैगी ॥
नेह किये कछु हाथ न आवै लोक लाजकुल धर्म
नसावै नारायण कह नाहक जगत हंसावैगी ॥

प्रियाजी बचन - वार्ता ।

अरी सखी ऐसो तेरो लालजी महाराज सों
कहा बैरपरचो है सोतू उनकी बुराई करतहै ॥

रागकाफी ।

या सामरे सों मैं प्रीति लगाई ॥ कुल कलंक सों
नांहिं डरोंगी अपनों करों अपने मन भाई ॥ बीच
बजार पुकारकहूं मैं चाहै करो तुम कोट बुराई ॥
लाज मरयाद मिली औरनको मृदुमुसक्यान मेरे
बट आई ॥ बिन देखे मनमोहनको मुख मोहि
लागत त्रिभुवन दुखदाई ॥ नारायण तिनको सब
फीको जिन चाखी यह रूप मिठाई ॥

सखाजी बचन-दोहा ।

सुनि प्यारीके बचन हरि, प्रगट भये नंद नन्द ॥
करी परीक्षा प्रियाजुकी, मनमें बढ्यो अनंद ॥
श्याम रूप अद्वैत जग, देख प्रियाभर नैन ॥
करत प्रशंशा हगनकी, मधुर मधुर मृदु बैन॥

प्रीति परीक्षा-श्याम कर, गये मुदित निजगेह ॥
पीछे ते राधा चली, हरिते अमित सनेह ॥

इति ।

॥ अथ चन्द्रावलि लीला ॥

समाजीबचन--पद ।

दही मही ले चली गुजरिया आले कुसुमकी ओर गई ॥ वृन्दाबनकी कुंजगलिन में बारे श्याम सों भेट भई ॥

लालजी बचन ।

बार बार तू गई ग्वालिनी गोरस दान न दीजिये ॥ या मग में तुम नित प्रति बेचो फेर नफा सों बेचिये ॥

सखी बचन ।

छोड़ कान्ह मेरो अंचल चुडला मोघर सासरिसावनी ॥

लालजी बचन ।

सास तिहारी माय हमारी आज बसो याही रेतमें ॥ तनक दही के कारण गजरी क्यों होती रिसदेतमें ॥

सखी बचन ।

जोरे सामरे दहिको भूखो यहरे बात तैनें भली कही ॥

जोरे सामरे पाले परोहै तोरला पतौआ तोय प्याऊं दही जोलों सामरो इतउत चालो झमकि चली चन्द्रावलि ॥ ढूंडत ढूंडत आयो खिरक में टूटेसे खटोला कान्हा गिररह्यो ॥

समाजी वचन ।

ढूंडत डोलै वायकी माय जसोधा वारो श्याम मेरो कितगयो ॥ ढूंडत ढूंडत आईरे खिरकमें टूटे खटोला कान्हा गिररह्यो ॥

जसोधा वचन ॥

कैतोय आवै ताप तिजारी कै तोय आवै झुरझुरो॥

लालजी वचन ।

ना मोय आवै मैया ताप तिजारी ना मोहि आवै झुरझुरो ॥ तनक दही के कारण मैया मेरो मन मोह्यो चन्द्रावली ॥

जसोधा वचन ॥

अपने कुमारकूं चार बिवाह दऊं दो गोरी दो सामरी ॥ छलगई तो छलजानदे मोहन वह ग्वालिन है ढीटरे ॥

लालजी वचन ॥

वे दो गोरी मैया गंग बहाऊं समद बहाऊं दो सामरी ॥ तनक दही के कारण मैया मेरो मन मोह्यो चन्द्रावलि ॥

समाजी बचन।

जबहि श्यामने बुद्धि उपाइ छालव कूं ब्रजगूजरी॥ हांस हमेल गुदी खंडवारो पायल कान्हा पै बाजनी॥ गोरी गोरी बैयां हरीहरी चुरियां मँहदी कान्हाके राचनी॥साळू सरस कसबको लहंगा अंगियां कटव कटावकी॥ सोलहै सिंगार किये नंद केने असल बन्यो चन्द्रावली॥

कृष्ण बचन॥

ढूंडत ढूंडत आये नगर में कान्हाको घर कौंनसो॥ द्वारे तो वाके बछरा बंधोहै दही बिलोवैचन्द्रावलि॥ कौन गामकी रहिवे वारी कहा तिहारो नामरी॥ याही गामकी रहिबेवारी चन्द्रावलि मेरो नामरी॥

सखी बचन।

ऐसो जालिम जोर गेंदताकि मारी सामलिया॥ कहाकरूं कछु बसनहि मेरो नटनागर चित चोर॥

कृष्ण बचन॥

मैं तोय पूछूं गोप ललीरी चन्द्रावलि को घर कौंनसो॥ ऊंची अटारी चन्दन किवारी माट बिलोवै चन्द्रावली॥ खोलो बहन मोरी चन्दनाकिंवरिया बाहर ठाडी तेरी बहनोली॥

दोहा ।

टेरत टेरत थक गई, आई महलन पास ॥
खोल किंवरिया हे सखी, आई तेरे पास ॥

चन्द्रावलि ।

आवतहीं ठाडी रहो, मनमें राखो धीर ॥
नाम बताओ आपनो, कहांते आई बीर ॥

कृष्ण वचन–दोहा

पीहर ते आमन भयो, आई खबर सुध लैन ॥
तोहि ते मिलवे हे सखी, लागूं तेरी भैन ॥

चन्द्रावलि वचन ॥

माय न जनमी गोतन उपजी तूं बहनुल क-
हांते आई ।हमनें तो कहुं सुनी न देखी आज क-
हांते प्रगटाई ॥

कृष्ण वचन ।

मैं मामाकीतू फूफी की बालापनमें बिछटगई॥
तुमरोतो जब ब्याह भयोहो हमें सासरेपठायदई॥
दोनों बहन मिल भेटनलागी छाती तेरी मरदानी॥
बालापनमें भई सगाई याहीते छाती मरदानी ॥

सखी बचन

दोनोंबहन मिल पैयां लागी पिंडरी तेरी मरदानी

कृष्ण बचन

तेरे घरकी गैल भूलगई कंकर पिंडरी छिल गई ॥

चन्द्रावलि लीला ।

जब चन्द्रावलि यों उठि बोली आओ बहन पनियां चलें ॥

कृष्ण बचन —पद ।

पानी मोरी हो जायगी बलाय ॥ सागर पानी कोभरें मेरे मछरीनें मारी लात कंकरी चुभचुभ जाय ॥ आंगन कुआ खुदाय बहन मेरी रेसमडोर मंगाय ॥ नवलसखी ऐसेकहै दूर भरन मतिजाय ॥ दोनों बहन मिलि पनियां चाली चालै चाल बड़ी मरदानी ॥

कृष्ण बचन ।

बालापनमेंघेरेरीबछेरू याहीतेचाल मेरी मरदानी

सखी बचन ।

ताते सीरे धेरेरी ततेंडा आउ बहन न्हावन करैं ॥

कृष्ण बचन ।

मेरेबगरमें सेढसीतला परघर न्हावन न कीजिये ॥

सखी बचन ।

तबचन्द्रावलि यों उठिबोली आवबहन भोजनकरैं ॥ कहत सुनत मोय सरमलगतहै ग्रास भरे बडे मरदके ॥

श्रीकृष्ण बचन ।

हाथीछूटे घोडाछूटे जेंमतविलम न कीजिये ॥ मेरे घरमें सास करकसा मुँहडेमें गुलचा दीजिये ॥

सखी वचन ।

चुनिचुनि कलियन सेज बिछाई आओ बहन दोऊ शयन करें ॥

कृष्ण वचन ।

ग्वालै अपने खिरक खंदायदे दुख सुखकी दोऊ बातें करें ॥

समाजी वचन ।

ग्वाल तो अपने खिरक खंदाय दीयो कान्हा नें तारो जड़ादियो ॥ लहंगा खोल खूंटी धरादियो पीताम्बर वानें पहरलियो ॥ दोंनो बहनमिल पौढन लागीं कान्हानें पकरलियो अंचरा ॥ मैं मुरिहा तोय जबी जानती कबकी बात तैनें याद करी ॥ छांडकान्ह मेरो अंचलचीर ॥ तू गूजर चंदा जात अहीर ॥ श्यामहूं जात अहीर ॥

सखी वचन ।

जोरे श्यामऐसो छलकीनों रासरचो छःमासको ॥ चंदसरीके धेररी सिराने छै महिनाकी रातकरी ॥

इति ।

॥ अथ गेंदलीला लिख्यते ॥

समाजीबचन- पद ।

जयजयकृष्ण कमल दल लोचन दुख मोचन

सुखदाई॥जयगोविंद चंद ब्रज तनधर आरतहरण कन्हाई ॥ जयराधा वृषभाननंदनी पूरणकीजै काजा ॥ जोजन आवै शरणतुम्हारी हरो सकलकी बाधा ॥ यामें राधामाधवजी की दिल दुबिधा मति राखो ॥ लीला लाल लाडलीजीकी प्रेम सहित कछुभाखो ॥ एकसमय हरि गेंदन खेलत गये वृन्दा बनमांहीं ॥ यमुना कूल कम्बदकी छैयां वंशीबटकी छांहीं ॥ तहां आन निकसी श्रीराधा पांचो संगसहेली ॥ जिनहिं देख रंभादिक लाजें को कवि बरण सकेली ॥ देखी गेंद परीमगमांहीं राधा तुरत उठाई॥हरिको दाव बचाय लाडिली ललिताहाथ गहाई ॥ हेरीगेंद बहुत मनमोहन इतउत कहूं न पाई ॥ हंसके कृष्णकही राधासों तुम मेरी गेंद चुराई ॥

लालजी बचन ।

दीजै मेरीगेंद लाडिली क्यों कीजै अब देरा॥बाबानंद मोहि गुहिदीनी तासों प्रेमघनेरा ॥ प्रेमपियारी गेंदहमारी सो तुम हमरी दीजै ॥ फिर फिर कृष्णकहत राधासों ऐसो काम न कीजै ॥

प्रियाजी बचन ।

बोली तुरत तबै श्रीराधा श्रीवृषभान किशोरी ॥
डारिआये कहुं गेंद कान्हतुम हमें लगावत चोरी ॥
देखलेउ तुम गेंद आपनी कहां लालनजी डारी ॥

नाहक दोष लगावत हमको मोहन कुंजबिहारी ॥

ललिता वचन ॥

ललिता कहत सुनों जी लालन बातनके बन वैया ॥ झूंठहि दोष लगावत हमको लंगर ढीट कन्हैया॥ढरकत गेंद इतै हमदेखी आन कहां ठहरानी ॥ परी गैलमें गेंदइतै हम देखी जात बिलानी॥

लालजी वचन ।

सुनियत राधा गुणन अगाधा बाधाहरन हमारी ॥ वाही सों गेंद जाय हम खेलें श्रीवृषभान दुलारी ॥

प्रियाजी वचन ।

हमनहीं गेंद बिलोकी मोहन कित आये तुमडारी॥ नाहक दोष लगावत हमको मोहन कुंजबिहारी ॥

लालजी वचन ।

नीकेदेउ गेंद तुम मेरी नाहीं जान न पैहो॥जाकी गेंद गई है प्यारी सो तो और नलै हो ॥

प्रियाजी वचन ।

जैसेचोर लालजी तुमहो तस औरनको जानों॥ घरघर खात फिरत दधिमाखन ऊंच नीच नाहिं मानों ॥ कइएक बेर ग्वाल और गोपिन पकर लै गुलचा दीने ॥ तबहू लाजन आई तुमकों फेरिकाम वही कीने ॥ यही कामहै कान्ह तुम्हारो सुनो

नंदके ढोटा ॥ फिर फिर आंख दिखावत हमको
लिये हाथ में सोटा ॥

लालजी बचन।

डरपाये नाहिं गेंद छोडिहों एक गई दोलैहों ॥ बस
कर राखों कुँज कुटीमें घरै जान नहिं दैहो ॥ कहा
करिहैं बृषभान हमारो गेंद चुरावत पाई ॥ लैहो
दंड सलोनी तुमसों करलैहो मनमाई ॥

प्रियाजी बचन।

लालन हमरो कछून करिहो रैयत आप हमारे
निशदिन सेवा करत रहतहै मोहन पिता तुह्मारे ॥
तुमरे पिताको हमरे पितानें अपनी बांह बसाये ॥
कबसों जबर भयेहो कान्हा ऐसे बचन सुनाये ॥
सुनि जसुधाके कुमर लाडले आप हमें नहीं जा-
नों॥झूंठी बात बनावत हमको मनमें कपट समा-
नों॥देखत हमहि बरस बहुबीते इतैनाहिं नंदरानी॥
पितु हमरे की सेवा करते नंदगाम सबजानी ॥

लालजी बचन।

बोले बिहंस तबै ब्रजभूषण दूषणहरण कन्हाई॥
नंदसुनो बृषभान भूपकी कहाकरी सेवकाई ॥
कब हम रैयत भये तुम्हारी सुनों बात तुममोरी॥
सुरनर मुनिजग तीनलोकमें मोय चरणनकी चेरी
इन्द्रादिक सब रैयतहमरी शिवाबिरंचि सबजानें ॥

तिनको कहतगोपिका रैयत कहाग्वालिनी जानैं ॥

लालिता बचन ।

ललिताकहत राधिकाजीसों इतते चलनन पैहो॥
नारिमोहिनी नंद सुवनको उनके घर पहुंचैहो ॥
मानों प्रिया सिखावन हमरी गेंद श्यामको दीजै॥
श्रीयमुनामें मंजन करके गमन भवन कों कीजै ॥
चलिये बेगि आपने घरकों मानों कही हमारी ॥
नैंकहु ढील लगैगी तुमको रिस होगी महतारी ॥

समाजी बचन ।

बाढीप्रीतआधिक उर अंतर लगेनैननसों नैना ॥
कहिहैं बात परस्पर दोऊ डगभर भूमि चलैना ॥
हंसकर गेंददई कान्हाको लीजै मदन गुपाला ॥
हम दासी हैंतुमरी सामरे तुमहो दीन दयाला ॥
श्रीयमुना को चलीं राधिका फिर फिर चितवत पाछे ॥ तहां लालजी खेलन लागे सखा संग सब आछे ॥ नंद सुवन वृषभानलाडली सुनिये बिनती मोरी ॥ कृपाकटाक्ष करो मोजनपर प्रेमदास बलिहारी ॥ जो कोई सुनैं गेंद लीलाको पढै सुनै अरु गावै ॥ बढै पुण्य और पाप होय क्षय सप्त लोक तरजावै ॥

इति ।

अथ चीरहरणलीला लिख्यते ।

समाजी बचन--दोहा ।

ब्रजबनितासबमिलचलीं, करनजमुनअसनान ॥
नेम धरम व्रतदृढकरति, मतिचाहत भगवान ॥

सखी बचन--वार्ता ।

अरी सखी चलो श्रीजमुना स्नान कर आवें ॥

समाजी वचन--राग आसावरी ॥

गौरी पति पूजत ब्रज नारी ॥ नेम धरमसों रहत क्रियायुत बहुत करत मनुहार ॥ येही कहत पति देउ उमापति गिरधर नंद कुमार ॥ शरण राखलीजै शिवशंकर तन तरसावत मार ॥ कमलपत्र पहुप मातुलफल नाना सुमन सुवास ॥ महादेव पूजत मन बच कर सूरश्याम की आस ॥

दोहा ।

ज्ञान ध्यान व्रत नेमकर, पूजत श्रीत्रिपुरारि ॥
हाथ जोर अस्तुतिकरत, ब्रजकीघोषकुमारि ॥

स्तुति छन्द ।

करहिं अस्तुति गान बहुबिधि पाणि पंकज जोरहीं ॥ बार बार नवाय मस्तक प्रेम सहित निहोरहीं ॥ जयमहेश कृपाल शिव आनंद निधि गिरिजापते ॥ कैलाशपति कल्याण अग जग नाथ सर्व न

मामते ॥ जटाजूट त्रिपुंड शशि कल गंगयुत शोभित सिरे ॥ कमल नैन बिशाल सुन्दर चारु कुंडल श्रुति धरे ॥ नील कंठ भुजंग भूषण भस्म अंग दिगंबरं ॥ अर्द्धंग गौरि विशाल शशिशिव भाल धर करुणा करं ॥ कपूर गौरिप्रसन्न आनन वक्र भृकुटि त्रिलोचनं ॥ काम पद सुख धाम पूरण काम सोच बिमोचनं ॥

चीरहरनलीला--दोहा ।

तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जनमन पीर ॥
प्रेम दान दीजै हमें, सुन्दर बर बलबीर ॥
जमुनातट पर चीर धर, करन लगीं अस्नान ॥
ताही क्षणनंदलाडलो, छिप्यौअचानकआन ॥

रागबिलावल ।

बसन हरे सब कदम चढाये ॥ सूरप्रभू हँस गोपकन्यनके अंग आभूषण सहित चुराये ॥ अति विस्तार नीपतरु तरुमें जहां तहां लटकाये ॥ अति आभरन हारि प्रति देखत छबि मनही अटकाये ॥ नीलाम्बर पाटम्बर सारी श्वेत पोत चूनर अरुनाये ॥ सूर श्याम युवती ब्रत पूरण कदम डार फल पाये ॥

तथा ।

जलते निकस बाहिर सब आई ॥ दृष्टि पसार ल-

गी सब देखन चीर दृष्टि नहिं आवे ॥ जलते निकस आय तट देखो भूषण चीर कछू तहांनांहीं॥इत उत हेरि चकित भई सुन्दर सकुच गई फिर जल के मांहीं ॥ नाभि पर्यंत नीर में ठाड़ीथर थर अंग कंपत सुकुमारी ॥ को लैगयो बसन आभूषण सूर श्याम उर प्रीति बिचारी ॥

सखी बचन- वार्ता ।

अरी सखीयो श्रीयमुनाजीके तीरते हमारे वस्त्र आभूषण कोलैगयो अब घर कैसे चलेंगी ॥

द्वितिय सखी बचन वार्ता ।

अरी सखी ये देखो नंदलाल हमारे चीर लैके कदंब के ऊपर जाय बैठेहैं ॥

तीसरीसखी बचन-वार्ता ।

अरी सखी अबकैसे जलते बाहर निकसें और कैसे इनपै ते वस्त्र लें ॥

चौथीसखी बचन वार्ता ।

अरी सखी इनकी बिनय करोतो बस्त्रमिलैं नहींतो ये बस्त्र कभू न देंगे ॥

सखी बचन- राग रामकली ।

हमारे चीर देउ मुरारी ॥ लै सब चीर कदमपर बैठे हमजलमांहिं उघारी ॥ तटपर बिनाबसन क्यों आवें लाजलगे अतिभारी ॥ चोली हार तुमहिको

दीने चीर हमें देउ डारी॥ सुन्दरश्याम कमलदल लोचन हमहैं दासी तुम्हारी ॥ जो कछु कहो सोई हम करिहैं चरणकमल पर वारी ॥ अंग अंग कम्पत मनमोहन बिनती सुनहु हमारी ॥ सूरश्याम कछु छोह करोजू शीतगई तनमारी ॥

वार्ता ।

अजी श्रीलालजी महाराज हमारे चीर देउ देखो हम अबला जात नंगी तुमारेपास कैसे आवेंगी और देखो शीतके मारे हमारो सब अंग थरथर कांपतहै सो आप कृपा करके हमारे सब बस्त्र दै देउ ॥

लालजी बचन ।

अरी सखी हमनें तुमारे बस्त्र नहीं लीनहैं येजो कदंबपर तुह्मे कारे पीरे लाल हरे रंगकेबस्त्र दीखेंहैं सो तुमारे बस्त्र नहींहै येतो शरदऋतुमें हमारो कदंब फूलोहै ॥

सखी बचन-- वार्ता ।

हे श्रीलालजी महाराज आप झूंठ क्यों बोलो हो हमारेही चीर कदंबपर धरेहैं कदंबनहीं फूल्यो है देवी कात्यायनी हमारी साक्षीहै इन्हें पूछदेखो

लालजी बचन-- वार्ता

अच्छौ सखी कात्यायनी देवीसे पूछ देखो ॥

सखी बचन।

हे देवी अंबिका हे महामाया हे जगदंबा तुम सांची सांची कहो या कदंबपै हमारे चीर धरेहैं कै श्रीलालजी महाराजको कदंब फूल्योहै ॥

कात्यायनी बचन।

अरी सखियो या कदंबपै तुह्मारे बस्त्र धरेहैं सखी कदंब नाहिं फूल्योहै ॥

सखी बचन।

अजी श्रीलालजी महाराज देखो ये देवीहू हमारेही चीर बतावे है ॥

लालजी बचन।

अरी सखी तुम याको नित्य न्हवाओ चंदन अक्षत धूप दीपतें पूजन करोहो मेवा पकवान भोग धरोहो यातें सखी ये तुमारी सी कहैगी और सखी ये कात्यायनीदेवी नां है याको नाम काठ खानी देवीहै ॥

सखी बचन- वार्ता।

अजी श्रीलालजी महाराज आप कात्यायनी देवीकी नाहिं मानों तो श्रीमहादेवजी महाराजसों पूछ देखो ये सांची सांची कहि देंगे ॥

लालजी बचन- वार्ता

अच्छो सखी श्रीमहादेवजी तें पूछ देखो ॥

सखी बचन- वार्ता

हे श्रीमहादेवजी महाराज आप सांचीसाची कहिदेउ या कदंबपै हमारे बस्त्र धरेहैं या श्रीलालजी महाराजको कदंब फूलोहै

महादेवजी बचन- वार्ता।

अरी सखी कदंब नाहिं फूल्यो तुह्मारेही बस्त्रहैं॥

सखी बचन-वार्ता।

अजी श्रीलालजी महाराज देखो श्रीमहादेव जी हमारेही चीर बतावें हैं अब आप हमारे चीर दैदेउ॥

कृष्ण बचन-वार्ता।

अरीसखी येमहादेवजी यासमय आक धतूरोखायके नसामें बैठे हैं और तुम इनको पूजन करके मीठे२ भोजन कराओहो याते ये तुमारी सीही कहैंगे हम ऐसे बावरे की नांय मानें सखी हमारे कदंबको पूछ देखो॥

सखी बचन-वार्ता।

हे कदंब हे देवता तुम सांची सांची कहो तुमारे ऊपर हमारे चीर धरे हैं कि तुमही फूले हो॥

कदंब बचन-वार्ता।

अरी सखी नांहिं नांहिं मैंही फूल्यो मैंही फूल्यो तुमरेही चीर धरेहैं॥

सखी वचन--वार्ता।

देखो श्री लालजी आपको कदंबहू हमारे ही चीर बतावै है॥

सखी बचन--रागरामकली।

मोहन बसन हमारे दीजै॥ जलमें रहैं सुनों नंद नंदनशीत लगेतन भीजै॥ कान सुभाव वृथा अन औसर इनबातन कसजीजै॥ सुनि दुख पावै म- हिर यशोमति जाय कहैं अबहीजै॥ सब अबला- जल मांझ उघारी दारुण दुख कस दीजै॥ प्रभुब लिराम हम दासितिहारी जो भावैसो कीजै॥

श्रीलालजीबचन--रागगूजरी।

जलते निकस तीर सब आवहु॥ जैसे सबिता को कर जोरे तैसे जोर दिखावहु॥ हम बाला तुम तरुण कान्ह अब कैसे अंग दिखावहि॥ याजलही में बांह टेकके देखो श्याम रिझावहि॥ ऐसे नहीं रीझिहों तुम पैं तटही बांह उठावो॥ सूरदास प्रभू कहतट बाहर कढो तब तुम बस्तर पावो॥

सखी बचन--रामकली।

हाहा कहत घोष सुकुमार॥ सीतते तन कंपत थर थर बसन देउ मुरार॥ मनही मन अतिही भ- यो सुख देखके गिरधारि॥ पुरुष स्त्री अंग देखे कहत दूषणभार॥ नेंक नही तुम छोह आवत गई हम रु-

बहारि ॥ सूरप्रभु अतिही निठुरहो नंद सुतबनबारि

श्रीकृष्ण बचन-पद ।

लाज ओट यह दूर करो ॥ जो मैं कहूं करो तुम सोई सकुच बापरी भार, परो ॥ जल के तीर आय कर जोरो मैं देखों तुम बिनयकरो ॥ अब ब्रत पूरन भयो तुह्मारो गुरजन शङ्का दूरकरो ॥ अब अंतरमो सो जिन राखो बारबार हठ बृथा करो ॥ सूरश्याम कहै बसन देतहूं मो आगे शृंगार करो ॥

सखी बचन-पद ।

हमारे देउ मनोहर चीर ॥ कांपत दशन सीत व्यापतअति हम अति यमुना तीर ॥ मानेगी उपकार तुमारो करो कृपा बलबीर ॥ अतिही दुखित तनपरसत मोहन प्रवल प्रचंड समीर ॥ हमदासी तुम नाथहमारे जलके भीतर ठाढी ॥ मानहु बिकसकुमोदिनि शशिसों अधिक प्रीति उर बाढी ॥

कृष्ण बचन ।

जो तुम हमाहि नाथ कर मानहु यह मांगे हमे देहू ॥ जलते निकस आयतट ऊपर बसनआपनेलेहू

समाजी बचन ।

करधर शीश गईं हरि सनमुख मन मैं कर आनन्द हो यकृपाल सूरप्रभु सबविध अम्बर दीने नंद नंद॥

इति ।

अथ श्यामसखीलीला लिख्यते ।

समाजी बचन--दोहा ।

एक समय नन्दलाडले, मनमें कियो हुलास ॥
भेष सखी को धर चले, प्यारीजीके पास ॥
घूम घुमारो घांघरो, पीताम्बर पट धार ॥
कुच कचुंक अद्भुत कसी, सोभा बनी अपार ॥
करकंकण गजरे बने, मोहन मालाहार ॥
मुख में बीडा अति लसे, कीने सभी सिंगार ॥
कर सिंगार श्माम सखीको, कर नूपुर झनकार॥
बरषाने को चलिदई पहुंची कीरतद्वार ॥

श्यामसखी बचन–रागकाफ़ी ।

मेरी बात सुनों चित लाई ॥ अरीमें नन्द गा-मते आई॥बडी बारको मग भूली हों कोऊ न देहि बताई ॥ बासि है एक राति कोऊ लायक मोय राखे बिरमाई ॥ है गई भेट सखी ललिता सों बांह पकर सो लाई ॥ प्यारीजी याहि निकट राखिये किनहू सों यह आई रुठाई ॥

समाजी बचन ।

है भाांनाने काहूबडे भवन की, दै आदर बैठाई ॥
घूंघट मार पाय लगि बैठी, हंस हंस यों बतराई ॥

श्यामसखी बचन ।

पीहर मेरो प्रेम पुरामें, वहां देउ पहुंचाई ॥ अति अनीत मैं देख गाम की पीहर चली पराई ॥

प्रियाजी बचन ।

कहा अनीत तें देखी गाममें मोते कहि समझाई ॥ दीखत है कुलवंती सजनी कौनें तोय सताई ॥
कै तेरे घर में नारि करकसा, कै ननदी दुखदाई ॥
कै पति तोय निरादर राखे, कहो सबै समुझाई ॥
घर छोडें कैसे बने सजनी बडे गोपकी जाई ॥
जाउ जाउ घर लौटि आपने तू क्यों मन बौराई ॥

सखी वचन--राग कल्याण ॥

मैंगौनेको अबही आई जानुंकहां चतुराई ॥एक दिना हों पौरी ठाडी देखे कुमर कन्हाई ॥ वो-ढोटा रिझवार रूपको मो मन नहिं छलि आई ॥
भूल्यो खेल और ढौरनको मेरे द्वारे धूम मचाई ॥
फिरफिर रंग भिजोवै मोको मैंसकुची जा महाई॥
गावै निपट उघारी गारी मुख मेरो ललचाई । मोहि सलोनी कहत सामरो दैदै बहुत बडाई ॥ लाज रहै कहो कैसे सजनी कहै मनें जो भाई ॥

प्रियाजी बचन-वार्ता ।

अरी सखी और तोसों कहा कुचाल करी ॥

श्यामसखी वचन।

दिनदिन पाछे लग्यो रहतहै नहिं मनमें सकुचाई॥ लोग चबाव करें सब ब्रजके मोपै सह्यो न जाई॥ लागे दोष लगावन मोकों सब नरनारि सवाई॥ घरमें पांव ठहेर कैसे सास मिली रिसि आई॥ एक दिना किंवार दै बैठी ऐसी बुद्धि उपाई॥ खोल खोल कहै लंगर मोसों मुरली तैंने चुराई॥ हों डरपी कैसो भई दैया यासों कहा बस्याई॥ जुरिआईं सब पार परोशन तिननमोहि समझाई॥ यह राजाको कुमर घरबसी तें कहा कुमति कमाई॥ दीजो याकी बंशी जो कहूं तैंने होय चुराई॥ पुनि आये सब सखा संगके बढ़गई भीड सवाई॥ काहूकेकर रंगकमोरी और पिचकारि सुहाई॥ बीच परी उनकी जो मिलनियां तिन किंवार खुलवाई॥ कहन लगे ढूंडो याकी चोली मुरली मेरीदुराई॥ हों घूंघटदै बाहर निकसी तारी सबन बजाई॥ भाजन रंग सीसते गेरो नख शिख मोहि भिजाई॥ अवसर पाय निकसके आई मोमें कहा खुटाई॥ पीछे परयो नंदको लंगर उन मोहि नाच नचाई॥ अबकाहू पुरबैठ रहोंगी वा पुर गयो न जाई॥ कीजै कहा होय जो राजा हाकिमसों अन्याई॥

प्रियाजी बचन–वार्ता ।

अरी सखी वे नंदलाल तो ऐसे नहीं हैं जैसे तू कहैहै

श्याम सखी बचन ।

हे प्यारी वे बड़े गुणनके पूरे हैं जैसे जैसे उनमें गुणभरे हैं वेभी आपको सुनावतहों ॥

सखी वचन--राग कल्याण ॥

बैठ्यो रहै ताकमें निशदिन जबमैं जमुना जाऊं ॥ गागर फोरि करै बरजोरी तब मनमें घबराऊं ॥ कबहू चोली फार नखनसों हँसहँस कंठ लगाई ॥ देखै हाल सासघर मेरी नित उठ रारि मचाई ॥ जोजो अवगुण कीने मोसों सो सब कहा सुनाऊं ॥ जो कुछबीती हिरदोई जानैं तुमते कहत शकाऊं ॥ जीवत नंदगाम नाहिं जाऊं सुनि सखी बात हमारी ॥ सूरश्याम ब्रज बसिबो छाडों जहां लाज नित जारी ॥

प्रियाजी बचन–पद ।

बसो भुवन मेरेमें सजनी मैंतेरी करों सहाई ॥ राखूंगी तोय मान भावसों तू जिन मन दुखियाई ॥ प्रातहोत भेजूं दादीकूं देऊंगी सब समझाई ॥ बीतिगयो वासर जो छबीली रजनी अर्ध दर्साई ॥ बहुत दयाकर ब्यारू श्यामा ढिग बैठार कराई ॥ ललितासों बोली यों श्यामा पलका देउ बिछाई ॥

सैन करावो या सजनीकों सास महलके मांई ॥

सखी बचन- पद।

न्यारे मोहि नींद नहिं आवै नाकुछमोय सुहाई ॥ रहिके निकट कहानी कहिहों सुनोंकुमरि मनलाई॥ लैगइ पकर बांह श्यामाकी अपने ढिग सेज बिछाई ॥ राधाकहै सुनोंहो सजनी कहि मोसोंसमझाई॥

प्रियाजी बचन-- वार्ता

जब दोनों पास पास सेज बिछायके पौढी तब श्रीप्रियाजीनें श्याम सखी सों कही, अरी सखी तैंनें जो कहीही कि मैं कहानी सुनाऊंगी सो अब मोसों कहिये ॥

श्याम सखी बचन- वार्ता।

अच्छो प्यारी अब मैं कहानी कहूं हूं तुम सुनों

कहानी।

फाटो पेट दरिद्री नाम ॥ ऊंचे घरमें वाको ठाम ॥ श्रीको अनुज बिष्णुको सारो ॥ पंडित होय सो अर्थ बिचारो ॥

उत्तर

अरी सखी याको नामतो शंख है ॥

दोहा।

अहो श्याम सजनी सुघड, सुनिये मेरी बात ॥
अब सोवो सुख नींदमें, गई बहुत अब रात ॥

समाजी बचन--दोहा ।

तबही उठि घनश्याम नैं, दीने झपट किंवार ॥
निज स्वरूप धारण कियो, नागरि रूप बिगार ॥
तब राधा मन चकित ह्वै, मनमें बढो अनन्द ॥
धन धन छलबलिया चपल, नागर श्रीब्रजचन्द ॥
मम हित तुम धारण करयो, नागरि रूप बनाय ॥
मोय निज दासी जानके, कृपा करी यदुराय ॥
ये लीला रस रीति की, प्रेम अधिक दरसाय ॥
पढै सुनैं आनंद लहैं, भव सागर तर जाय ॥

इति ।

अथ नागलीला लिख्यते ।

समाजी बचन- दोहा ।

गोचारन मिस श्यामघन, ब्रजजन के हितलाग ॥
यमुना तट आये हरषि, नाथन काली नाग ॥

समाजी बचन--राग कालिंगडा ।

खेलत गेंद बाल गोपाल ॥ दमन अहिमद हेतु कंदुक दीन यमुनहि डाल ॥ सब सखा गहि पीतम ट कहँ गेंद देउ नंद लाल ॥ कदमद्रुमआरूढ ह्वै हरि कूद तब ततकाल ॥ निरख छबि नागिनि लुभा नी रूप परम रसाल ॥ क्रोध कर फूंकार छोड़त उ- ठ्यो सतफन व्याल ॥ श्याम अंग सकोप लिपट्यो

श्रावत माहर जाल ॥ उदर बलदल अबल कीनों विशाल कृपाल ॥

जसोधा बचन–रागकालिंगडा।

आज नैन भुज दाहिन फरके ॥ पलपल विकल होत नंदरानी असगुन जान हृदय मम धरके ॥ बिनबल गयो श्याम सुरभीले मोचत मन बिचार बहुकरके ॥ मोहन मगन भयो यमुनामें आय कही गोपनके लरके ॥ छींकत आज गयो बन लाला प्राण अधार सबै घर घर के ॥ हरिबिलास जसुधा अकुलानी नैन नीर भर भर के ॥

सखा बचन–दोहा।

अरी जसोधा मात सुनि, कहतग्वाल सबराय ॥
कालिन्द्री कनुआगिरो, अब जीवन किम होय ॥

समाजी बचन–दोहा।

सुनत मात व्याकुल भई, गिरी धरणि मुरझाय ॥
जिममणिबिनव्याकुलफणी, लोटतधरनी माय ॥
ब्रजबासी मन बिकल है, धाये यमुना तीर ॥
कालिन्द्री के तीर पै, भई सबन की भीर ॥
बिकल जानि पितु मातुको, केशव कृष्णमुरार ॥
कालिन्द्री ते प्रगट भे, निजकर बंशी धार ॥

समाजीबचन–रागझंझोटी

नाचत हरि उरगसीस थिरक २ आली ॥ नटवर

वर भेष करें मुक्ता गज माल गरें मोर मुकट शीशधरें अंखियनकी लाली ॥ बाजत बंशी विशाल गावत सुरभर रसाल शोभा निधि नंद लाल अमित भाग शाली ॥ नूपुर पददेत मान तोरत अहि सीस तान परत चरण गिर समान रुधिर वमन काली ॥ कद्रू सुत अति अधीन पाहि पाहि करत दीन हम जड खल भक्ति हीन वृथादेह पाली ॥ अबतो प्रभु समझ दास दीजै मोहि जिन निरास शरणागति हरिबिलास सुध ले बनमाली ॥

नागिन बचन-रामकली।

नन्दनन्दन हरिशरण तुम्हारी ॥ दीन दयाल भक्ति भयहारी ॥ अंजलिजोर सुतनकर आगे बिनय करत कालीकी नारी ॥ आरत सकल हरण बनमाली औसर बीत्यो जात मुरारी ॥ नाथ सुहाग हाथ अबतेरे प्राणदान अबदेहु बिहारी ॥ अहिपतिनिनकी सुनत दीनता छांडो उरग तुरत बनवारी ॥ हरिबिलास हरि सासन सिरधर रमणक गयो बिषधारी ॥

समाजी बचन—रागकाफी।

मुदितभये ब्रजजन समुदाई ॥ काली अहिकोमान मथन कर आये निकर कन्हाई ॥ अतिअनुराग भरे सबभेटे मात पिता बलभाई ॥ गोपिनवृन्द स-

कल अवलोकन प्रीति परम उरछाई ॥ ताहीनिश दावानल जाग्यो सबै उठे अकुलाई ॥ हरिबिलास हरि बन्हि पानकर सब ब्रज विपति बहाई ॥

दोहा।

ये लीला घनश्यामकी, पढै सुनै चितलाय ॥
रंगीलाल भव सिंधुते, बिनश्रम पारहिजाय ॥
लीला त्रिभुवननाथकी, पढै सुनौं जो कोय ॥
रंगीलाल कलि कालकी, बाधा तनक न होय ॥

इति।

अथ हिंडोलालीला लिख्यते।

समाजी बचन दोहा।

ग्रीषम गति बरसा लगी, वृन्दा बिपिन बहार ॥
घन गर्जत उमडत घटा, दामिन दमक अपार॥

रागदेश

घन गर्जत बोलत मोर ॥ उमड घुमड बादर बहु सजनी घिरआये चहुं ओर ॥ दिन मणि सुता प्रवाह बेग युत उरभी करत हिलोर ॥ तरुतल कर त बिहार बिपिन में राधा नंदकिशोर ॥ वृन्दाबन छबि लखत सखीरी मुदित महा मनमोर ॥ रंगीलाल अब चलो बिलोकन मनमोहन चित चोर ॥

प्रियजी बचन-वार्ता।

हे श्रीलालजी महाराज आजतो या श्रीवृन्दा

बनमें बडो आनंद ह्वै रह्यो है आपकी इच्छा होय तो चलो ललित कदंब तरें हिंडोला झूलैं ॥

श्रीकृष्ण बचन ।

चलौ! प्रिया वाही कदमतर झूलें ॥ झुकरही लता अतिसघन प्रफुल्लित कालिन्दी के कूलें ॥ ॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलि गुञ्जत मन फूलें ॥ ललित किशोरी भगवतरावत कर कर बतियां भूलें ॥

समाजी बचन--दोहा ।

प्यारी के सुनिकैं बचन, उठे लाल हर्षाय ॥
द्रुम कदंब की डार में, झूला दियो डराय ॥

वार्ता

प्रिया प्रीतम दोनों झूलन लगे और ललितादिक सबसखी गामन लगीं ॥

राग मल्हार ।

देख युगल छबि सावन लाजै ॥ उत घन इत घनश्याम लाडलो उतदामिन इत प्रियासंगराजै ॥ उत वर्षत बूंदनकी झरियां इत गल मुतियन हार बिराजै ॥ उत दादुर इत बजत बांसरी उत गरजत इत नूपुर बाजै ॥ उत रंग २ के बादर इत पचरंग के बाजे उतै धनुष बनमाला इतै साजै ॥ उत घन घुमड इतै दृग घूमत नारायण वर्षासुख आजै

पद ।

झूलैं नन्दकुँवर वृषभान दुलारी ॥ झोटा लेत झिझक मुर लिपटत मोहनके गल प्यारी ॥ सो उधर उरकर धीर बंधावत डरहुन जिन सुकुमारी ॥ यहछबिनिरखकहैं नारायण तनमनधनहमवारी ॥

चन्द्रलतादि सखी बचन ।

झूलैं झूलैं आज हिंडोरा झूलैं झूलैं नवल कुंवरि नवदुलहन दूलहै ॥ धाधाधाधाधुमाकिट् त्यक्ता बाजत मृदंगा सखि सुघट् तान गं गननननननन नाचत मोर सघन बन प्रफुलित श्रीयमुनाजी कूलै ॥ रसिक छबीली वृषभानुकी किशोरी गोरी भोरी संग गोरी रंग राच्यौ उरझी माल लटक नटबेसर अंग अंग भुजफूलैं ॥

अन्य सखी बचन ।

युगलवर झूलत दै गलवांही ॥ बादर बरसे चपला चमके सघन कदमकी छांहीं ॥ इत उत पेंग बढावत सुन्दरि मदनउमंग मनमाहीं ॥ ललित किशोरी हिंडोला झूलैं बढ़ यमनालौं जांहीं ॥

समाजी बचन दोहा ।

झूलत प्यारी राधिका, झोटा देत मुरारि ॥
निरख जुगलछबिकीछटा, मुदितहोतनरनारि ॥

राग देश।

झूलत वृषभान दुलारी ॥ बन सघन लता तरु प्यारी ॥ अवनि बलाक गगन तालि शोभित उठी घटा अतिकारी ॥ बारबार चपला चमकत नभ गिरवर आभा नारी ॥ शीतल मंद सुगंध अनल बर फहर रही तनसारी ॥ झूलत श्यामाश्याम झुलावत गावत गोप कुमारी ॥ झोटा लगत बजत पग नूपुर रंगीलाल बलिहारी ॥

प्रियाजी बचन--राग घाटो।

धीरे झोटादेउ बनवारी। झोकन ते डर लागत मोको लचकरही तरु डारी ॥ गरजत मेघ सुनत भय लागे तडितनजात निहारी ॥ जानपरत जल परस्यो चाहत गगन घटा उठिकारी ॥ तुम तो निडर विदित नंद नंदन हम अबला सुकुमारी ॥ रंगीलाल ब्रजराजदुलारे बारबार बलिहारी ॥

वार्ता।

हे प्यारे मोकों अकेली झूलतमें डर लगैहै ताते आपहू हमारे संग झूलो ॥

लालजी बचन-वार्ता।

अच्छो प्यारी हम आपके संग झूलेंगे ॥

समाजी बचन- दोहा।

चढ़े हिंडोला श्यामघन, पिंगुल लीनी जोर ॥

हँस हँस झूलें दोउजनें, झोटा लेत हिलोर ॥

प्यारी बचन।

झूलिये नेक धीरै धीरै ॥ एहो लाल झूलिये नेक धीरै धीरै ॥ काहेकू इतनी रमक बढ़ावत द्रुमउरझ्यो चीरै चीरै ॥ झुक झूक झोटनकेमिस मोहन आवतहौ नीरै नीरै ॥ नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरै भीरै ॥

सखी बचन-राग सोरठ।

राधामाधो झूलत हिंडोल ॥ शोभित घटा छटा सौदामिन सुखद सुखेणन बोल ॥ उपवनसघन कोकिलाकूंजत विपिन बिनोद अमोल॥सरस हंस कुरंग बृंद कपि शैल रहे सब डोल ॥ चलत बयार चीर फहिरावत अलकें परत कपोल ॥ रंगीलाल पियप्यारी गावत सैन सुधारस बोल ॥

प्रियाजी बचन-राग देश।

हिंडोरना को झूले थारे लार ॥ थे अटपटे थारी झूलनअटपटी म्हे तो घनी सकुमार ॥ थे झूलो थाने म्हे झूलाऊं गाऊं थारो चरित अपार ॥ रंगीलाल यों कहै राधिका मोहनप्राण अधार ॥

सखी बचन-राग देश।

माई मोय पवन झकोरे ॥ चलो बिलोकन नंद नन्दन मुख उनबिन मदनमरोरे ॥ सनन सनन

सनचलै पुरवाई तरुशाखा गहि झुकि झुकि जाई॥ सकलभांति पावस सुखदाई मिलो बेग चितचो-रे ॥ झनन झनन झींगरवाबोले मोर मराल कुरंग मझोले उपवनमें बहुपरे हिंडोले नंदगामकीओरे ॥ घनन घनन घन गरजनलागे हमसबके मन ह-रि अनुरागे रंगीलाल रस प्रीतिहि पागे प्रीतम नन्द किशोरे ॥

दोहा ।

ये लीला ब्रजचन्दकी, गावै सुनैं सुजान ॥
रंगीलाल तापर करें, किरपा श्रीभगवान ॥

इति ।

अथ सांझी के पद लिख्यते ।

समाजीबचन--राग मुलतनी ।

आज बनी सांझी अति प्यारी ॥ राधे सुघड़ बनावनहारी ॥ नान बरण सुमन लै आई रचि रचि अपने हाथ सह्मारी ॥ मधुपुर बृन्दाविपिन आदि ले ब्रजकी सबलीला विस्तारी ॥ गोप सुता सब बन बन आईं कीरत भवन भीर भई भारी ॥ बेणु ढोल तालादि बजावत गीत मधुर सुकुमारी ॥ रंगीलाल बानिक बनि आयो मुदितभई वृषभान दुलारी ॥

इति ।

अथ भतरौंडलीला लिख्यते ।

समाजी बचन दोहा ।

एकादिना नन्दलाडिले, ग्वाल बाल ले साथ ॥
धेनु चरावन बन गये, बलदाऊ संग भ्रात ॥
गये सभी भतरौंड पै, जहां चौबेन की भीर ॥
करत यज्ञ हरि हेत सब, कालिंद्री के तीर ॥
तब हलधर हरषायके, भेजे ग्वाल सिखाय ॥
जाउ द्विजनके पासतुम, भोजनलाउ लिवाय ॥
गये गोपसुत अन्न हित, जहां चौबेनकीन भीर ॥
तहां निरादर पाय पुनि, गये चौबनन तीर ॥

ग्वाल बचन–राग कालिंगडा ।

श्रवणकरो बिनती कछु माई ॥ सखन सहित बन धेनु चरावत राम श्याम आये दोऊ भाई ॥ असन हेत हरि हमहि पठाये क्षुधावंत बालक समुदाई ॥ ग्वाल बिनय सुनि मुदित द्विजपत्नी गद गद कंठ प्रीति उरछाई ॥ तज तज काज चलीं सब बाला बहु प्रकार बलिकर जबराई ॥ रंगी लाल कर यूथ सकल मिल गईं जहां घनश्याम कन्हाई॥

द्विजपतनी बचन–राग बिहाग ।

चलो सखि देखोरी ब्रज राज ॥ यमुना तीर सखा सुरभी ले आये हमरे काज ॥ मेघबरण राजीव बि-

लोचन अब लोकहिं तज लाज ॥ भर भर थार मु-
दित लै धाई षटरस व्यंजन साज ॥ श्याम समीप
आय हुलसानी जन्म सुफल भयो आज ॥ रंगी-
लाल बिधुबदन बिलोकत मानुं चकोर समाज ॥

अपरसखी बचन–राग जैजैवंती ।

देखसखी यहरूप मनोहर जो मूरति नितनैन
बसीहै ॥ झलकन मुकुट लकुट अतिप्यारी मनो
दिवाकर ज्योति कसीहै ॥ कुंडल लोल कपोल प्र-
भाअति मीन मनोजल जाल फसीहै मंद हसन
द्युति दशन सखीरी जनु मरालमु ख पांति लसीहै ॥
दृगबिशाल चंचलकजरारे खंजन मृग मरजाद न
सीहै ॥ नीरदनील बरण तनशोभा तडित पीतप-
टफेंट कसीहै ॥ नानाबरण रतन गल माला मानो
चाप वासब दर्शीहै ॥ ललित त्रिभंग मतंग चाल
हरि बहु अभंग छबि अंग धसीहै ॥ हरिबिलास
द्विजनारि लुभानी जनु चकोरगण लखतशशीहै ॥

ललिता बचन–राग पीलू ।

जनहित चरित करत यदुराई ॥ बिप्रबधुन सों
कहत श्यामघन अब अपने घर जाऊ ॥ सो करजो
र बिनय कर भाषत सुनियत मृदुल सुभाऊ ॥ त
ज तज पतिन शरण तब आई अब कित में पल-
टाऊ ॥ कर बहु बोध बिदा सब कीनी गईनेह उर

छाऊ ॥ हरिबिलास इत असन करचो हरि सहित सखा बलदाऊ ॥

समाजी बचन–दोहा

येलीला ब्रज चन्द्र की, सुनें जो चित्त लगाय ॥
रंगीलाल हरि कृपाते, भवसागर तरजाय ॥

इति

अथ गोवर्द्धनलीला लिख्यते ।

समाजी बचन--दोहा ।

कार्तिक मास सुहावनों, घरघर ब्रजउत्साह ॥
वासब पूजाहेत सब, गोपरहे हरषाय ॥
सुरपति पूजाहेत सब, ब्यंजन घने विशेष ॥
ब्रजपति निकट बुलायके, करत ज्ञान उपदेश ॥

श्रीकृष्ण बचन--राग खमाच ।

बिधिरची कर्मरेखा प्रधान याबात तात मन कर बिचार ॥ यमकालबरुण धनदादिदेव सब सेवित निश दिन कर्म सार ॥ नित बिचरत नभ द्विजराज दिवाकर अहिपति धारेधरणी भार ॥ जलबरषत वासब अखिल मही मल कर्म लिखी न हीं सकतटार ॥ जगत देतकरम फलअजरमेश सिर्जत पालत पुनिसंघार त्रैलोक चराचर जीव सबै नितभोगत विधगति सीसधार ॥ श्रीकृष्णबचन

वरपरमज्ञान मुदितभये ब्रजपति उदार ॥ बहुहरि बिलास भोजन बनाय सब चले हरषपूजनपहार ॥

श्रीकृष्ण बचन--वार्ता ।

श्रीकृष्णचन्द्र बोले इन्द्रके पूजवे ते कहा होय है और इन्द्र तो आप भोजनहूं नाहिंकरत है तासों तुम मेरो कह्यो मान कर गिरराज को भोग लगाओ ये गोवर्द्धन पर्वत या ब्रज भूमि के मुख्य देवता हैं इनके प्रसन्न भये ते सब ब्रजबासिनके घरन में अन्न धन अधिक होयगो और गायन कूं घास अधिक होयगी ॥

समाजी बचन--दोहा।

सुनि कान्हा के बचन कूं, ब्रज जन मन मुसकाय ॥
चलत देर कीनी नहीं, आनन्द उरन समाय ॥

सखीवचन--राग भैरवी ।

सखीरी चालि पूजिये गिरिराज ॥ खटरसव्यंजन अमित बनाये गोवरद्धन ने काज ॥ ब्रजनर नारि हुलास अधिक उर अभरण अंबर साज ॥ मुदित जात सब चले दरस कों चढ़ चढ़ रथ गज बाज ॥ सैल समीपजाय सब पहुंचे गोपी गोप समाज ॥ रंगीलाल घनश्याम निरख मुख ब्रजआनंद न समाय ॥
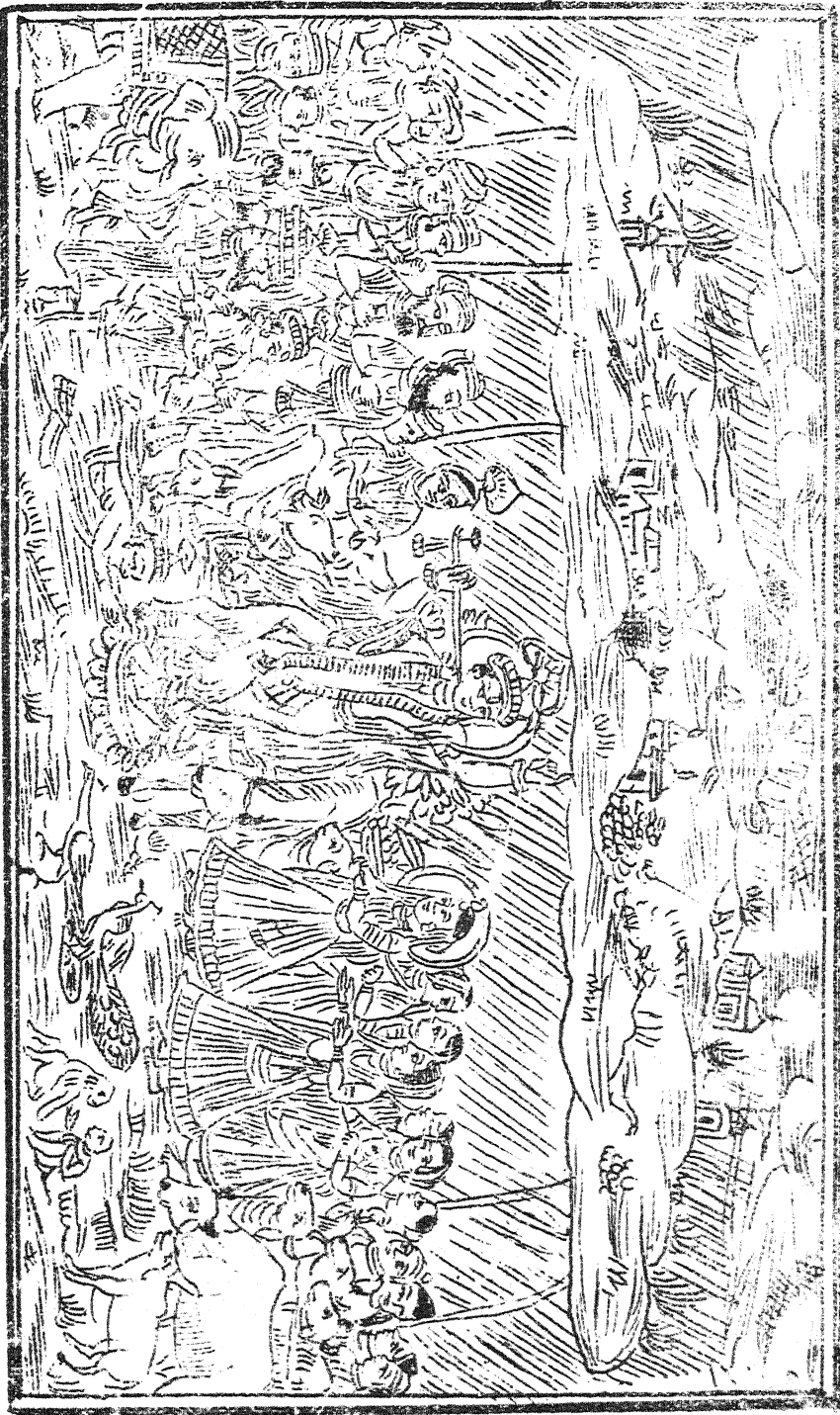
समाजी बचन दोहा ।

अपनी अपनी छाकले, धरत अगारी जाय ॥
प्रगट भये तब आप हरि, रुचि रुचि व्यंजन पाय॥
ब्रज जन मन आनंद है, गावत गीत रसाल ॥
फूले फूले फिरत सब, ब्रजके गोपी ग्वाल ॥

राग आसावरी ।

नंद करत गिरि पूजाकी विधि ॥ भोजन लै सब धरे छहोंरस कान्ह संगआई अष्टोसिधि ॥ लैलैआवत ग्वाल घरन ते भाजन बहुत प्रकार ॥ व्यंजन देख नंद सुख पावत तुरत करो जिवनार ॥ जोइ जोइ हरी कहत करत सोई सोई पूजा की बहु भांति ॥ माखन दधि पय तक्र धरत लै जोर जोर सब पांति ॥ को बरणे नाना बिधि व्यंजन ज ब-नये ब्रजनारि ॥ सूरश्याम की लीला अद्भुत कहा बरणें मुखचारि ॥

राग नट ।

विप्र बुलाय लिये नंदराय ॥ प्रथमारंभ यज्ञ को कीनों उठ वेद धुनि गाय ॥ गोवरधन सिर तिलक बन्दवो मेटदई इन्द्र ठकुराय ॥ अन्न कोट ऐसो रच राखो गिरिकी उपमा पाय ॥ भांति भांति व्यंजन परसाये कापै वरणे जाय ॥ सूरश्याम सब कहत ग्वाल गिर जेंवेंगे कब आय ॥

दोहा।

गिरिवर पूजा देख ब्रज, बासव भयो अबोध ॥
प्रलय काल के मेघ सब, पठये ब्रजकर क्रोध ॥

राग बिलावल।

इन्द्र सोच कर मनहि मन अपने चकित होत पुनि बुद्धि बिचारत ॥ कहा करत देखो मैं इनको मोकोबिलम लगत नाहिं मारत ॥ अब ये करैं आपने मन सुख मोको अबन संभारे ॥ तबलों रहों पूजानिवैरैं ये बचहि न बैर हमारे ॥ इतनो सुख इनके कर रहिहै दुख है बहुत अगाध ॥ सूरदास सुरपति की बानी मनहीं मनकी साध ॥

राग गौरी।

चढ़ बिमान सुरगण नभ देखत ॥ लीला करत श्याम नूतन यह फिराफिर गिर गोवरधन पेखत ॥ थकित भये जहां तहां सब मुनि गण ठौर २ नर नारी ॥ चितवतहै सब श्याम बदन तन गति मति सुरतिबिसारी ॥ पूजामेट इन्द्रकी पूजत गिरि गोवरधनधारी ॥

समाजी बचन- दोहा।

इन्द्र कोप करके अधिक, लिये मेघ बुलवाय ॥
सुनत बचन तब इन्द्रको, चले मेघ सबधाय ॥

राग देश ।

घंन गरजत बरषत पानी ॥ सब गोपवधू अकुलानी॥निरख बिनोद कोप अति कीनों॥ सुरनायक अभिमानी॥घिर आये अति मेघ भयंकर मारुत प्रबल उडानी ॥ मूसलधार समान परत जल बिधि गति जात न जानी ॥ घोर घोर चपला दुखदाई शिला अमित बरसानी ॥ बृज मंडल बूड़न अब चाहत सकल प्रजाघबरानी ॥ या अवसर घनश्याम उबारो सुनि बृज आरतबानी ॥ गिरि उठाय कर धरयो कन्हाई हरिबिलास सुखदानी ॥

समाजी बचन ।

श्याम गोवरधन करपर धारयो,देख सखी मन लाय ॥ सात दिना घन बरषत थाके सुर पति रह्यो लजाय॥ सुन्दर बांये करपर लियो गोवरधनहिं उठाय ॥ कोइ मूसल कोइ लकुट लगावत सब मिल करत सहाय ॥ परम मुदित सब ब्रजके बासी मनमोहन गुण गाय ॥ रंगीलाल गिरिधरणि धरयो हरि मोहन बेणु बजाय ॥

ब्रजबासी बचन-राग सारंग ।

बिदित जग भाग भूरि बृजनाथ ॥ जाको सुत वैकुंठ निवासी खेलत ग्वालन साथ ॥ करकर कोप इन्द्र अतिबरस्यो मूसल धारा पाथ ॥ तादुखते

ब्रजलोग उबारे गिरलीनो धर हाथ ॥ गोपन बच-न सुनत नंद हरषे गर्गकही सोगाथ ॥ हरिबिलास प्रभु सगुण श्याम हरि लिख्यो बिधाता माथ ॥

समाजी बचन-दोहा।

गिरवर धारयो देखकर, सुरपति अतिहिलजाय ॥
आय श्यामचरणन परो, अस्तुति करतबनाय ॥

इन्द्र बचन- राग भैरवी।

जय वृन्दाबनचन्द्र श्याम घन नेतिनेति श्रुति गायो ॥ सुर गंधर्व सिद्ध चारण सब लै संग सुर-पति आयो ॥ अंजलि बांधि करत बहु बिनती च-रणन सीस नवायो॥तब गुण अगम अपार अगो-चर तेज तिहुंपुर छायो ॥ ईश फणीश गिरा ब्रह्मा-दिक काहू पार न पायो ॥ कर उबटन तन मंजन मघवा पट भूषण पहिरायो॥पुनि गोविंद सेवयदु-पतिको सब श्रृंगार बनायो ॥ धूप दीप नैवेद्य आ-रती हरिपद रज सिरनायो ॥ रंगीलालकर विनय अमरपति अमरावती सिधायो ॥

दोहा।

करबिनती बासव गयो, ब्रजमें बढ्यो अनंद ॥
रंगीलाल सब ब्रजबधू, गावत गुण गोविंद ॥
ये लीला ब्रजराजकी, गावै सुनैजोनित्त ॥
जुगललाल कृपाकरें, सुखीरहै नितनित्त ॥

गोवरधन पूजा सरस, कीन्ही श्रीयदुराय ॥
रंगीलाल संग्रहकरी, मनमें अति हरषाय ॥

इति

अथ होली लीला लिख्यते ।

समाजी बचन--दोहा ।

निज निज मंदिर गोपिका, ढपन शब्द सुनकान ॥
गुरुजनभय संकोच बश, शोचत मन अकुलान ॥

राग जैजैवंती ।

अबतो सखी फागुण सुख आयो ढप गोपाल बजावैरी ॥ एकतो डरहै सास ननद को दूजेलाज लजावैरी ॥ केशर रंग गुलाल मलो मुख मोहि नंदलाल सुहावैरी ॥ जबलौं वाको रूप न देखो मन मेरो दुख पावैरी ॥ मुरलीमें लै नाम हमारो हरि बिलास नित गावैरी ॥

समाजी बचन--दोहा

नवल सहेली संगले, मनमें अति अनुराग ॥
कीरत जा खेलन चली, नन्द नंदन ते फाग ॥
होरी देखन सुरबधू, मनमें अति हरषाय ॥
बैठि बैठि आकाशमें, रहीं पुष्प बरषाय ॥
वृन्दाबन घन सघन में, चलीं सकल ब्रजबाल ॥
रंग कमोरी कर लियें, झोरी भरयो गुलाल ॥

राग काफी ।

राधिकाचली खेलन होली ॥ कर सिंगार नख सिख ते बनिता सकल भई इकठोरी ॥ लैलै अगर गुलाल फेंटमें फागको ठाठ कसोरी ॥ चली सब मिलकैं गोरी ॥ कंचन हाथ लियें पिचकारी केशर रंग कमोरी ॥ वृन्दाबनहि चलीं सब मिलकें कोई सामल कोई गोरी ॥ बैसकीहैं सब थोरी ॥ नन्द सुवन तिहिं अवसर आयो लै गुलाल भर झोरी ॥ देख सखी ब्रजराज कुमरको ब्रजबनिता सब दो- रीं ॥ श्यामको पकर लियोरी ॥ कोउ करपकर क- हत मोंहनसों बहुत करी दधि चोरी ॥ रंगीलाल कोउ गुलचा मारे कोऊ हंसे मुख मोरी ॥ हंसत वृषभान किशोरी ॥

❋ दोहा ❋

बहुत खिजायो बृज बधुन, गहिकर श्रीबृजराज ॥
तबहि श्याम चट झपट के, गयो सबनते भाज ॥

प्रियाजी बचन--धमार।

मोपै सहीन जाय गिरधरने मोय गारी दई ॥ गारी दैके भाज गयोरी वाको मेरे दरद भयोरी ॥ कहोरी सखी का करूं उपाय ॥ अबही फाग रचो बंशीविट वहां वह मुक्कर आय ॥ हैनट खट गहिलो जोंयाकों सबहि मिलकें धाय ॥ वाहि बधू को भेष

करूंगी मैं अपने सिर मुकट धरूंगी ऐसे वाय नई नारि बनाय ॥ हाथनमें चूरी पहिराऊं सीसफूल बेनी गुँथवाऊं वाके कर पदमें महदीरचवाय ॥ ऐसे वासों भामर भरिहों वाके मान गुमानें हरिहों हेरी सखी जब छाती सिराय ॥ मोपै सहीन जाय ॥

सखी बचन--राग धमार ।

अरी ब्रजखेले धमार मोहन प्यारो नन्दको ॥ संगबनीरस गोपी वोपी कह्यो न परै सुख सारदी सब छन्दको ॥ बाजत चंग मृदंग उपंग किन्नरी रसबाढ्योहै अति अनंदको ॥ नंददास प्रभू प्यारेका कौतुक देखत अरीसी गयो गर्व मतिमन्दको ॥

दोहा ।

उडत रंग घनसम गगन, बरषत ज्यों बौछार ॥
नंदलाल ब्रज बधुनमें, होय परस्पर सार ॥
लिपटझपटचटगिरतकोउ,कोउ फिर उठत संभार
कोउ गुलाल ले मुखमलत, कोऊ देत रंग डार ॥
याबिधि होरी माचि रही, श्रीवृन्दाबन बीच ॥
ठौर ठौर दीखन लगी, रंग गुलाल की कीच ॥
बाजत ढोल धमार डफ, चंग मुरज मौचंग ॥
झांझ मंजीरा बांसरी, गावत भरे उमंग ॥
याबिधि होरी देखकें, मगन भये मुनि वृन्द ॥
रंगीलाल जै जै करत, गावत गुण ब्रजचंद ॥

अथ दधिलीला लिख्यते ।

समाजी बचन दोहा ।

बिन देखे घनश्याम छबि, गोपिन गृहन सुहात ॥
दधि बेचन मिस कर सबै, नित उठ कानन जात ॥
कर सिंगार नव नागरी, नख सिख रूप बनाय ॥
गोरस मटकी शीश धर, चली जात मग माय ॥

राग रामकली ।

धेनुचरावन जात गुपाला ॥ हिल मिल बिपिन चलीं ब्रजबाला ॥ बदन मयंक कंज दल लोचन सखन समेत गयो नन्द लाला ॥ पीत बसन कटि कछनी काछें श्रुतिकुंडल गल गुंजन माला ॥ लटपटिपाग लकुट करलीने मधुर बजावत बेणु रसाला ॥ दधि बेचन मिस चली सखीरी अबलो फसी नेहके जाला ॥ रंगीलाल उरवस्यो रैनिदिन मेघवरण तनरूप रसाला ॥

सखी बचन--राग कालिंगडा ।

ये अखियाँ मोहन सों अटकी ॥ एक दिनांकी बात श्याम की सुधिनहिं भूलत बंशी बटकी ॥ डोलत फिरी दियेगल बैयां त्रिविध पवन कालिन्दी तबकी ॥ कबधो भर भर नैन सखीरी हमदेखें छबि नागर नटकी ॥ तबते भोर जात वृन्दाब-

न सीस धरी गोसर की मटकी ॥ निसदिन आठों याम सखीरी बैरन बंशी धुनि उर खटकी ॥ हरि बिलास सब सुध बुध त्यागी कुल मरयाद लाज घुंघटकी ॥

समाजी बचन दोहा ।

चली जात मगमें सखी, छुम छुम पायल घोर ॥
सुनि कानन धायो चपल, नागर नंद किशोर ॥
आय अचानक श्यामने, झटक गही करबांहु ॥
दधिको दान चुकाय कर, चली अगारी जाहु ॥

सखी बचन--राग बरवा ।

छांडो बैंया छैल गिरधारी ॥ डगर आपनी जाउ चले तुम हम दधि बेचन हारी ॥ काहे रार करतहो हमते सुन्दर श्याम बिहारी ॥ कारे अंग सकल गुण कारे रोकत गैल हमारी ॥ सरलसुभाव शील यसुधाको ताकी लाज बिसारी ॥ रंगीलाल हरि हांस न कीजे हमहैं सब कुलनारी ॥

लालजी बचन- दोहा ।

गई सदा मग निकस तुम, हे चंचल ब्रजनार ॥
आज दान सब लेउंगो, बोले नंदकुमार ॥

सखी बचन पद ।

सांज भई काहे बार लगाई ॥ सास ननद पूछें-गी हमते काहे बेर लगाई ॥ जानदे मोहन रैनि

अंधेरी दधि मटकी गरुवाई ॥ कानन सघन हमें डरलागत छांडो डगर कन्हाई ॥ जाय कहैंगी नन्दरानीते जान परै जबराई ॥ हरिबिलास हरि जाउ धेनुले त्यागो निज लंगराई ॥

लालजी वचन–दोहा।

करत अट पटी बात तुम, हो सब चतुर सुजान ॥
बिना दान दधि पै लिये, दऊं न तुमको जान ॥

सखी वचन रागपर्ज।

अब गिरधारी सही बहुतोरी ॥ पाछे आये मम सारी पकरत खोल कंचुकी डोरी ॥ नई मट किया दूध दहीकी सो मोहन तुम तोरी ॥ नंदबबा तोय यही पढ़ायो दधि माखन कृत चोरी ॥ कंस नरेश नेंक सुनि पावे जानि परै बरजोरी ॥ हरिबिलास इत हरि मुसक्याने उत वृषभानु किशोरी ॥

लालजी वचन राग धनाश्री।

कहा कंस सों मोहि डरावत ॥ कहा बापुरोहैवह जाको बार बार तुम नाम सुनावत ॥ लूट लेऊंगो दूध दही सब बेग नहीं जो दान चुकावत ॥ बहुत दिननसों चोरी कर कर दान मार हमरो नित जावत ॥ करौं आज सब दिनको लेखो काहें इती अवार लगावत ॥ ध्वान्त चन्द्र तुम क्यों बेकाजें आप खिजै अरु मोहि खिजावत ॥

सखी बचन--राग बिहाग।

बोली फेर बिहंस यों ग्वारी ॥ क्यों बेकाजे बतरावत हो रोक बिरानी नारी ॥ काल लला तुम घर घर फिर फिर खाते दही चुरारी ॥ आज सिहात बहुत मन अपने दानि बने गिरधारी ॥ नंदहि क्यों बेकाज बंधावत मनमें समझ गिरधारी ॥ रंगीलाल सब ऐंठ निकरजाय जाओ कंस अगारी

समाजी बचन दोहा।

सुनि ग्वालिन के बचन हरि, मटकी डारी फोर ॥
झटका पटकी होतमें, माला डारी तोर ॥
रिसव्हैकै ग्वालिनचली, नन्द गामकी ओर ॥
जाय वहां ठाडी भई, नंदमहर की पोर ॥

सखी वचन राग खम्माच।

यशुमति तेरो कुटिल कान्ह डगर चलत बैयां मेरी पकरी ॥ बन बन निडर फिरत मदमाते हाथ बेणु अरु लिये लकुटिरी ॥ हमसब जात रही बर षाने गोरस मटकी सिरपर धररी ॥ सखन समेत सघन कानन में आप मिल्यो ओढे कमरीरी ॥ दधिकी मटकी धरणि में पटकी चूनर फारि लई सगरी ॥ रंगीलाल तुमवाहि न बरजो जाकारण तजिहैं यह नगरी ॥

जसोधा वचन वार्ता ।

अरी बीर सखियों आज वाहि घरमें आवन देउ देखो वाय में कैसो सूधो करूं हूं ॥

दोहा ।

सुनि जसुधाके बचन कूं गई ग्वालनी गेह ॥
मनमें अति हर्षित भई, चितघनश्याम सनेह ॥
यहदाधिकी लीला ललित, पढै सुनैंचितलाय ॥
रंगीलाल भव सिंधुते, तुरत पारह्वै जाय ॥

इति ।

अथ दानलीला लिख्यते ।

समाजी वचन-दोहा ।

गोरस मटकीशीशधर, करकर नवल सिंगार ॥
चली जात बृंदा बिपिन, कर नूपुर झनकार ॥

राग बिलावल ।

ब्रज बनिता बन बन कर आई ॥ धरकर मट की सीसदहीकी मधुपुर चली हंसत समुदाई ॥ करत किलोल अमोल परस्पर लटकतजात श्याम चित लाई ॥ रतन जटित आभूषण पहिरे नख सिख भरी निकाई ॥ मणिन सहित पग नूपुरबाजे मंद मंद सुखदाई ॥ कटिहार लहंगा सुरंग चूनरी गवन गयंद मराल लजाई ॥ कुच उतंग उर हार

अधिक छबि सुन्दरता बरणी नाहिं जाई ॥ पंकज बदन मदन मद लाजत अधरनपीक लीक अरुणाई ॥ रंगीलाल बनठन बृजबाला चली जात बृन्दाबन माई ॥

सखी बचन-वार्ता।

अरी सखियो नेंक जलदी पांव उठाये चलो यहां नन्द को लाला गौ चरायवे आवत होगयो कालि सखी वानें मेरी बडी गति बनाई ही तासों हमें डरलगै है ॥

सखी वचन-राग कालिंगड़ा।

इन गलियिनमें लागतचोर ॥ लकुट हाथ बालक संगलीने बिचरत नटवर नंदकिशोर ॥ हों भोरी बौरी करडारी बिकल कियो मन मोर ॥ दधि मटकी धरणीमें पटकी वरबस डारी बांह मरोर ॥ करत हास घनश्याम सखीरी खोवत गुरुजन लाज बहोर ॥ हरिबिलास कैसी अब कीजे जिन की डगर सांकरी खोर ॥

सखी बचन-दोहा

छनन छनन छुम घुंघरू, धुनि पूरीत चहुंओर ॥
सुनि कानन कानन इतै, धायो रूप किशोर ॥

दोहा।

मग में रोकी झपट के, नागर नट ब्रज बाल ॥

जात इतै कित सुंदरी, भरैं रूपकी झाल ॥

बार्ता–कही मान प्यारी दान दै ॥

दोहा ।

रे अहीरके छोहरा, बन्यौ अनौखौ छैल ॥
कोहै तू ठाडौ भयौ, रोक हमारी गैल ॥

बार्ता–कह्यो मान प्यारे जान दै ॥

दोहा ।

मैंबृजेश नँदराय सुत, इत मेरो अधिकार ॥
तूक्यों मदमाती फिरै, बोलै नाहिं संभार ॥

बार्ता–कही मान प्यारी दान दै ॥

दोहा ।

जातकहूं घनश्यामहम, क्यों रोकतहौ छैल ॥
हम बेटी वृषभानकी, यही हमारी गैल ॥

बार्ता–कह्यो मान प्यारे जान दै ॥

दोहा ।

सदाजात तुम मधुपुरी, दधिबेचन बृजनारि ॥
निकस जात छिपकेसदा, दान हमारौ मारि ॥

बार्ता–कही मान प्यारी दान दै ॥

दोहा ।

तुम ब्रजेश कबसूं भये, आये दान जु लैन ॥
बडे बोललाजै नहीं, मुर मटकावै सैन ॥

बार्ता–कह्यो मान प्यारे जान दै ॥

❀ दोहा ❀

रसमानी रिससों भरी, कहैं अनोखी बात ॥
बिनादान मानू नहीं, क्यों इतनी इठलात ॥

वार्ता--कही मान प्यारी दान दै ॥

दोहा ।

जात कहूं घनश्याम हम, क्योंरोकतहो छैल॥
हम बेटी वृषभानकी, यही हमारी गैल ॥

लालजी बचन—दोहा

सदाजात तुम मधुपुरी, दधिबेचन ब्रजनारि॥
निकस जात छिपके सदा, दान हमारो मारि ॥

राग भैरवी ।

कर नख सिख सिंगार चलीं दधि बेचन नारि सयानी ॥ बिधुवदनी मृदु कोकिल बयनी छबिरति निरखि लजानी ॥ नटवर भेष कीये नंद नन्दन शोभा अंग समानी ॥ लकुट हाथ ले घेर खडे मग प्रीति हृदय हुलसानी ॥ अब आगे कोउ जान न पैहो चोरी हम पहिचानी ॥ लैहों दान आज दिन दिनको बहु दिन रहीं लुकानी ॥ मोहन बचन सनेह भरे सुनि गोपसुता मुसक्यानी ॥ रंगीलाल अब नये सुने हम नन्दसुत गोरस दानी ॥

जुगल बचन—रेखता ।

निकस घरते चली ग्वालिन धरें शीश सब दधि

मटकी ॥ छमा छम बाजते नूपुर सुरत भर सामरे नटकी ॥ किये सिंगार तन सुन्दर ताडित समचीर और भूषण ॥ छुटी अलकें कुटिल कारी मनों सिरनागनी लटकी ॥ खडे मगबीच नन्दलाला कहत गहि हाथ गोपीसों ॥ लैहों मैं दान सब दि-नको गईहों बेच नित सटकी ॥ कहत मुसकाय एक बाला भली नहिं बात ये मोहन ॥ कहैंगी कंस से जाके तुमारी बात नट खटकी पछारूं कंसकूं भूतल करूं प्रतिपाल सुर सुरभी ॥ दान मोहि देउ गोरसका सकल तुम नारि कित भटकी॥ दही मिस बेचवे रंगी फिरो सब मैंन मतवारी ॥ लैहों मैं दान बरजोरी मटकी लै छीन महि पटकी ॥

परस्पर बचन-लावनी ।

गोरस बेचन चलीं सखी मुसुक्याती ॥ सबकी-ने तन सिंगार मदन मद माती ॥ मगठाडो नन्द किशोर लकुटि करधारे ॥ बन लीने डोलत धेनु चरावन हारे ॥ संग सखा लिये दसवीस गोप के बारे ॥ सब घेरलई ब्रजबाल श्याम मतवारे ॥ लैं-हों मैं आज जगात कहां तु जाती॥सब कीने तन सिंगार मदन मदमाती ॥ १ ॥बोली एक नारि रिसाय सुनों गिरधारी ॥ कंसराजको राज कठिन है भारी ॥ सब जान रपै ठकुराई श्याम तुह्मारी ॥

मोहन तुम कबतेभये दान अधिकारी ॥ बृजराज जसोधा सरल पूत उतपाती ॥ सबकीने० ॥ २ ॥ जाने ना पैहो करो कोटि चतुराई ॥ नृप बोल पठावौ तुम्हैं लेय छुड़वाई ॥ नित गोरस बेचन भोर होत उठधाई ॥ मोहि पकर मिलीहो आज नवल तरुणाई ॥ दीजै दिन दिनको दान कहा इठलाती ॥ सबकीने० ॥३॥ कर घूंघट पटकी ओट चोट कर गोरी ॥ चलि हटजा नंदके परै गैलतज मोरी ॥ तोय पकर हाथ लैजाउं यशोमत धोरी ॥ तू भयो अनोखो छैल करै बरजोरी ॥ कहैं रंगी लाल यों ग्वालिन झुंझलाती ॥ सबकीने ॥ ४ ॥

लालजी वचन—दोहा।

दान देउ ब्रज नागरी, नाहक ठानों रार ॥
बिना लिये मानूं नहीं, क्यों सतरात गमार ॥

राग बिलावल।

काहे को इतनी सतराति ॥ झूंठी हो सबही तुम ग्वालिन मैं भाषत हों सांची बात ॥ लेखोकर अपने अपनों सब बेगि चुकावो अपनो दान ॥ मोय दुहाई नंदबबाकी बिनलीये दऊंगो नहिं जान ॥ गागर फोर धरणिमेंपटकूं गल तोरूं मोतिनकी माल ॥ रंगीलाल कहा फिरो दिमानी तुम मूरख सब बृजकी बाल ॥

सखी वचन राग खम्माच।

मोहन समझ गयो अब बैयां॥ हम गोरी तुम श्याम बिहारी जाय चरावो गैयां॥ कंसरायको राजकठिनहै अबनकरो लरकैयां॥ जाय कहैं जो व्रजरानीते जानि परैं जबरैयां॥ नवलकिशोरी हैं हमभोरी छुइन सको परछैयां॥ रंगीलाल व्रजराज जानदे सासलडै घर मैयां॥

श्रीलालजी वचन राग बिलावल।

काहेको इतरात किशोरी॥ कबको ठाडो मांगत तुमसों बेग चुकावो दान किशोरी॥ डारे तोर हार मोतिनके गहि गहि करबैयां झक झोरी॥ अबरा पकर कंचुकी फारी सिरसों लई उतार कमोरी॥ दही मही समाकियो हरीनें अद्भुत द्वंद मचोरी॥ रंगीलाल व्रजबाल झपटके मोहन पकर लियोरी॥

सखी बचन--राग सारंग।

अबभजके कहां जाउ बिहारी॥बोल उठी वृषभान सुता तब करत लाल काहे को रारी॥ देखो दही मही ढरकायो सुरंग चूनरी फारी॥ अब बचिके तुम कहां जाउगे मन मोहन बनवारी॥सुबलसुदामा आदि ग्वाल सब आये तहां दौर दै तारी॥ रंगीलाल मगघेरि व्रज बधू भाजि गये गिरधारी॥

सखी बचन--वार्ता।

अरी सखी चलो याकी मैया जसोधाकूं याके सब कौतुक दिखाय आवें ॥

सखी वचन राग खम्माच।

श्यामहि क्यों न बरजे नंदरानी ॥ अब या गाम कौन बिधि बसिये रारि तुमारो सुत ठानी ॥ चलत पंथ अचरा पकरत हैं गारी सुनावत हैं मन-मानी ॥ मगमें रोक दान दधि मांगत आज भये हो अनोखे दानी ॥ घूंघट पट उघार मुख झांकत बतियां बनावत है रससानी ॥ रंगीलाल ब्रजनारि उरहनों सुनि यशुमति मुसकानी ॥

जशोधा वचन राग बिहाग

मैं सब तुमरे मनकी जानी ॥ दोष लगावत मेरे सुतको आप फिरत इठलानी ॥ मेरो सुतहै भोरो भारो जाने खेल खान और पानी ॥ तुम सबरी योवनमदमाती वाहि छेडबे जाती ॥ पाप आंख-सों देखत वाको योवन भर उमडाती ॥ फिरत र-हत पाछे संग वाके मम सुतपै सिडरानी ॥ सारी फार आपने हाथन अंगियाको मसकानी ॥ दौरी फिरत उरहनेके मिस करके कुचन निसानी॥सुनि सब लोग हँसेंगे तुमको क्यों फिर हो मसतानी ॥ ज्ञानचंद यों कहकर यशुमति बारबार मुसकानी ॥

समाजी बचन दोहा ।

सुनि यसुधाके बचनको, ग्वालिन मन मुसकाय ॥
रंगीलाल निज निज भवन, गईं सबै हरषाय ॥
ये लीला घनश्यामकी, प्रेम सहित जो गाय ॥
कठिन धार भव सिंधते, बिन श्रम पारहि जाय ॥

इति ।

अथ बेणुगीत लिख्यते ।

दोहा ।

एक समय निश शरदकी, वृन्दा बिपिन बिहार ॥
मुरली धुनि कीनी ललित, केशव कृष्ण मुरार ॥
सुनि मुरलीके शब्द कों, बिकल भईं ब्रजनार ॥
बौरीसी इत उत फिरत, तनकी नहीं सम्हार ॥

सखी बचन दोहा ।

अरी घरगई मुरलि तू, एसी मति ना गाज ॥
तेरे कारण सब तजी, लोक रीति कुल लाज ॥

समाजी बचन पद ।

अंखियन की सुध भूल गई ॥ श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिया चकित नारि भई ॥ जो जैसेसो तैसेही रहिगई सुख दुख कह्यो न जाई ॥ लिखी चित्रकी सी सब ह्वैगई यक टक पल बिसराई ॥ काहू सुधि काहू सुधि नाहीं सहज मुरलिका आन

भवन गवन की सुधि न रही तन सुनत शब्द बहु कानं ॥ अँखियनते मुरली अति प्यारी वह बैरिन यह सौत ॥ सूर परस्पर कहत गोपिका जहां उपजी उद भौत ॥

ललिता वचन-दोहा।

अरी बांसकी बांसरी, बंस बिदारन हार ॥
अपनो बंस कटायके, मोहे प्राण हमार ॥

राग सोरठ।

बँसुरिया क्यों हम बैर परी ॥ रैन दिना निस बासर ब्रजमें तू क्यों रहत अरी ॥ अपनौं बंस कटाय कटाय कर मोहे प्राण हमार ॥ नंद नंदन को बस कर लियो ताहीसों जोम अपार ॥ रंगीलाल ऐसी कठोर तू बिकल करीं ब्रजनार ॥

विशाखा वचन-दोहा।

अरी घरबसी बांसरी, अति घमंड है तोय ॥
गिरधरको बस करलियो, सबसुरनसों मोय ॥

राग सारंग।

मुरलीतें फल पूरो पायो ॥ कौन जन्म को प्रगट भयो तप गिरधर सों मन भायो ॥ अधरनको रस लेत रैन दिन पूरण पुण्य कमायो ॥ मोहनके मुख लागि घर गई त्रिभुवन मोहि करायो ॥ रंगीलाल अब जानपरी मोहि अपनौं अदल जमायो ॥

चित्रा वचन-दोहा ।

क्यों बंशी इतरात तू, पियके अधरन लाग ॥
आखिर बनके बांसकी, खुले तिहारे भाग ॥

राग बिहाग ।

मुरली क्यों उतपात मचावै ॥ जानत हैं जैसीहै तैसी बंसको अंश दिखावै ॥ कहा भयो गिरधर मुखलागी आखिर बांस कहावै ॥ रैन दिना दुख देत सखिनको मन माने सुरगावै ॥ रंगीलाल मुख लगि पीतमके चामके दाम चलावै ॥

ललिता बचन-दोहा ।

अरी बावरी बांसरी, क्यों इतनी इतराय ॥
गिरधरके मुखलगतही, कहागई गरवाय ॥

राग देश ।

आज बँसुरिया बैरपरी ॥ गिरधर के मुख लख दइमारी हमरे गोंन परी ॥ नई तान सुनाय सबनको तेंकुल कान हरी ॥ याके बचन सुनत हमव्याकुल इत उत भजत फिरी ॥ रंगीलाल यह सौत प्रगट भई कर अनरीत खरी ॥

चन्द्रावलि वचन-दोहा ।

क्यों दई मारि बांसरी, तोकों कहा गरूर ॥
जेती ब्रजमें कुलबधू, ठाढ़ी तेरे हजूर ॥

राग सारंग ।

अब देखे तेरे ढंग ॥ मनमोहनको बसकर राख्यो हैगये अंग त्रिभंग ॥ ऐसो कहा जादूहै तोपै कररही नाना रंग ॥ तेरेकाज लाज हमछोडी सुनसुन तान तरंग ॥ रंगीलाल घरवार छोंडके फिरूंतिहारसंग ॥

दोहा ।

अरी बांसकी बांसरी, करै मती अनरीति ॥
हम पर जादू डारके, तज वाई कुल रीति ॥

राग पूर्वी ।

आजक्यौं मुरली बैर बढायो ॥ बोल बोल सुर मीठे हमरो सब घरकाज छुडायो ॥ तेरो शब्द सुने बिन हमको घर अंगना न सुहायो ॥ बैरिन प्राण विकल कर दीने चुकोकोंनसो दायो ॥ रंगीलाल बसकर मनमोहन सबको नांच नचायो ॥

दोहा ।

क्यों दईमारी बांसरी, तैंतप कीन्हों कौन ॥
सुनकर तेरे शब्द कूं, हम तलफत निज भौन ॥

राग बिहाग ।

अधरधर तोकों श्याम बजावत ॥ सारंग गौर नाट नटकारिके गौरी राग सुनावत ॥ आप भये रस बस तेरे ही औरन वश्य करावत ॥ ऐसो को जल थल त्रिभुवन में जो सिर नहीं धुनावत ॥ सुभग

मुकट कुंडल मणि श्रवणन देखत नारिन भावत
सूरदास प्रभु गिरधर नागर मुरली धरण कहावत

दोहा ।

मुरली हरिके मन बसी, रहत रैन दिनपास ॥
ब्रज बाला सब बस करीं, नित प्रति रहत उदास॥

राग गौरी ।

मुरली हमहि उपाधि भई ॥ नंद नंदन हम स-
बल बुलाई नौखी मिली सई ॥ कैसेरी यह दूर होय
है उपजी कहा दई ॥ देखोरी संबंध पाछिलो बर
बिष बेल बई ॥ जोरे जरै न काटे सूखे हैगई अमृत
मई ॥ सूरश्याम गरहाई याको ब्रजमें आन ठई ॥

राग गौरी ।

मुरली कबको बैर निकारो ॥ कौन जनमकी
खटक मानके बांस बंस तन धारो ॥ अपनो बंस
कटाय घरबसी मोह्यो श्याम हमारो ॥ रंगी पर-
संग श्याम के रंगमें मोहि लियो ब्रजसारो ॥

राग खम्माच ।

सुनि मुरली की टेर सखीरीमैं चौंक पडी ॥ इतसों
बाजी जानें कितसों बाजी कानन भनक गडी ॥
मुरली की धुनि सुन भई हूं बावरी चैन परत न
घडी ॥ तेरी बंशीनें प्राण लिये हैं कैसी विथाकरी ॥
बेगुन प्रीति लगी मोहनसों राह तकत हूं खडी ॥

राग भैरवी ।

वृन्दाबन में श्याम बजावत बीन ॥ होशगये सुध न रही सजनी सुध बुध लई मेरी छीन ॥ चितवत ही व्याकुल कर दीनी ऐसी है परबीन ॥ रैन दिना तलफत हूं बेगुन जैसे जल बिन मीन ॥

राग काफी ।

बांसरी बजाय मेरी सुधबिसराई ॥ बांसरी की भनक सुनत नींदन आई ॥ घरके लोग चरच गये सबेर बांसुरिया दुखदाई ॥ सुधन रही भैमेंगिरी बिजिया तन खाई ॥ कारेनें मोय डसी कैसी करूं मरूं माई ॥ ब्रजवासी बाट तकत देर क्यों लगाई॥ बे गुन छबि मोहनकी मेरे मन भाई ॥

राग काफी ।

नेंक न चितसों बिसारीरे वा सामरे की बांसरी लगत मोय प्यारीरे ॥ बंशी बटपै बंशी बजाई मोर मुकुट गिरधारीरे ॥ जबसों दृष्टि परयो मन मोहन लाज भई मोसे न्यारीरे ॥ आवो मोहन मोहि गरवा लगावो यही अरज है हमारीरे ॥ सुन्दर छबि नैननमें बसी है माधुरी मूरत कारी कारीरे ॥

इति ।

अथ पूर्णमासीलीला प्रारंभः ॥

समाजी बचन-दोहा ।

कर बिचार मोहन चले, इकले श्रीब्रजराज ॥
पूरनमासी गृह गये , प्यारी दर्शन काज ॥

चौपाई ।

करत बिचार श्याम तहँ आये । लखिछबि मुकुट मनोज लजाये ॥ पूरनमासीके समीप आये। हाथ जोड़ मृदुबचन सुनाये ॥

पूर्णमासी बचन- दोहा ।

आये कहा बिचार हिय, मोहन कहिये बात ॥
कौन बिथा चितमें उठी, जासूं सकुचत गात ॥

श्रीकृष्ण बचन--पद ।

सुनो इक बात हमारी । आज सदन सपने में मेरे कीरति कुमरि सिधारी । मिलै सोकौन उपाय लाडली जीवन प्राण हमारी ॥ खान पान नीको नाहिं लागत सोच निरन्तर भारी ॥

पुरोहितानी बचन ।

है उपाय इकसुनो रसिकवर,जो कदापि बनि आवै मेरे सुतकी बधूबनौ तुम, प्यारीके ढिंगजावै ॥

श्रीकृष्ण बचन-दादरा ।

पूरनमासी आयों मै तेरै ॥ हितकारी ब्रजबान

ता मेरी वाने नाम बतायो ॥ मैं तेरै० ॥ ढूंढत फि-
रयो नगर सबरेमें नीठ नीठ गृह पायो॥मैं तेरै०॥
माखन चोर राधिकाजूके दरशन करबे धायो ॥
मैं तेरै पूरनमासी आयो ॥

पूर्णमासी बचन-पद ।

कीजै दूरदेह श्रम अपनो बैठो जुगत बताऊंगी॥
आजपुजैगी देबीउनके मैं पूजन नाहिं जाऊंगी ॥
पहिराऊं भूषणबसन जनाने सुतकी बधूबनाऊंगी॥
नकबेसर कर कंकन बिछुआ बेंदी शीस लगाऊंगी
कंठ धुकधुकी मोहन माला कर चूरी पहिराऊंगी
तुमरो कर शिंगार अधिक सुन्दर युवती दरसाऊं
गी ॥ जब आवै बोलन को ग्वालिन वासंग तुमें
पठाऊंगी ॥ माखन चोर राधिकाजूके दरशन
सहज कराऊंगी ॥

श्रीजीवचन सखीन प्रति-गजल ।

चलो सखी पूजिये देवी कहै कीरति कुमारीहै ॥
सुकेसाआदि ललितादिक बिशाखासंगासिधारीहै ॥
पुजावो आज कुल देवी पुजै मनसा हमारी है ॥
कहो बोललावो पुरोहितानी गई एक तुर्त नारीहै ॥
कहो जाय पूर्नमासीसों चलो प्यारी समारीहै ॥
पुजावो आज कुलदेबी पुजै मनसा हमारी है ॥
मिलाओ श्यामश्यामाको यही इच्छा हमारीहै ॥

श्रीजी बचन ललिता प्रति-दोहा ।

ललिता जलदी जाइये, पून्योके गृह आज ॥
संगबोल कर लाइये, देवी पूजन काज ॥

समाजी बचन दोहा ।

प्यारीके सुनकर बचन, ललिता चली सिहाय ॥
हँसत मंद प्रफुलित बदन, जल्दी पहुंची आय ॥

ललिता बचन पूनो प्रति- राग दादरा ।

पूरन मासी मैं आई तेरे ॥ पूजन काज आज देवीके मोहि तुम पास पठाई ॥ मैंतेरे० ॥ चलिये संग देरना कीजै जल्दी आप बुलाई ॥ मैंतेरे० ॥ गावत गीत बहुत ब्रज बनिता कीरत के गृह आई॥ मैंतेरे० ॥ मेवा आदि धरी सामग्री माखन बिबिध मिठाई ॥ मैंतेरे० ॥ ८ ॥

पूरणमासी बचन ललिता प्रति--दोहा ।

ललिताके सुनकर बचन, पूनों कहत बिचार ॥
मेरो चलबो है नहीं, लेजा सुतकी नार ॥

समाजी बचन दोहा ।

लेसंग ललिता चलदई, कहत प्रियाढिग जाय ॥
उनको आमन है नहीं, दीनी बधू पठाय ॥

बधू बचन ललिता प्रति-लावनी ।

सखि चलिये जहां बृषभान दुलारी अलबेली ।
मोहि छिन छिन जुगसम जात लागि तलबेली ॥

मेरे उठी मदनकी पीर सहीनहिंजाती ॥ जबप्यारी के ढिंगजाय सितल होंछाती ॥ जबपहुंचीबाउपवन में जहां हती प्यारी॥तुमकहो जो कैसीबाम कोन-कीनारी ॥ प्यारी मंत्र साधनाकरै आप नहिं आई तातै अपसुत की बधू मोसंग खंदाई ॥ जब सबन करी परनाम बैठजा हेली ॥ मोहि छिन २ जु-ग० ॥ नामगाम और विद्या निपुन प्रकाशो ॥ पो-थी नहिं तुमेर पास पुछावो कासों ॥ प्यारी नाम सिद्धता घर उज्जैन हमारो ॥ आई सासुल मिल बेकाज दरशभयो तिहारो ॥ कोन शासतर पढी-परिक्षा दीजै ॥ तुम देवीको पुजवाय गमन तबकी-जै ॥ प्यारी मन्त्रशास्त्र सामुद्रक जोतिष पढ़िकें ॥ तुम पूछो मोते प्रश्न बताऊं बढ़के ॥ जबसुन के इतनी बात भुजागल मेली ॥ मोहि छिन छिन जुग सम जात लगी ताला० ॥ २ ॥

पुनिबधू बचन श्रीजीसे—लावनी।

कहूं वृषभान कुमर तोते बातजो पूंछीतें मोते ॥ सिद्धिता कहतेहैं ममनाम ॥ शहर उज्जैन पिता-को गाम ॥

दोहा।

मिलबे कारन सासके, आईरी मैं रात ॥
दरशन है गये आपके, बडी कुशलकी बात॥

प्रातभयो शकुन जो शुभकारी ॥ सोई तुम मि-
लगई हितकारी ॥ कंठहै पाठ सकल मेरे ॥ अम्बि-
का पुजवाऊं तेरे ॥

दोहा ।

पढी वेद जोतिष सकल, सामुद्रिककी रीति ॥
नामानों तो पूछिये, तुमको होय परतीत ॥
नीत राजनकी सब जानूं ॥ हृदयकी सबकी
पहिचानूं ॥ पूछिये तुम मोसों प्यारी बताऊं सकल
बात तिहारी ॥

दोहा ।

माखन बिन भोजन अरुचि, बिना पढे नहिं ज्ञान ॥
तिमिर दूरनहि ह्वैसकै, उदय भये बिनु भान ॥
कहूं वृषभान कुमर तोतें । बातजो पूंछोतेंमोतें ॥

श्रीजीबचनवधूप्रति–राग दादरा ।

जो मेरे मनकी जाने सिद्धिता ॥ कहदेवेदाबिचार
आपनो जो कछु तू पहिचानो सिद्धिता ॥ जोतिष
ग्रंथबडो दुनियामें याहीकूं सब मानें ॥११॥सि०॥

सिद्धिता बचन श्रीजीप्रति-राग दादरा ।

जानी बात तिहारी मैंने ॥ कहूं प्रगटकर तोते
राधे जो पढ़ ग्रन्थबिचारी ॥ रीमैंने ॥ तुमकीरति
तिहुं लोक उजागर तो समको ब्रजनारी॥रीमैंने०॥
सुनि बड़ गोपकुमारि लाडलीतो उरबसत बि-

हारी ॥ रीमैंने ॥ माखनचोर को दरश कराय दऊं तौमें विप्र कुमारी ॥ रीमैंने० ॥ १२ ॥

श्रीजी वचन सिद्धिताप्रति-राग दादरा ।

दरशन क्यों न करावै ॥ री मोकूं ॥ धन्य सिद्धिता तेरो पढनो मनकी बात बतावै ॥ री मोकूं ॥ तो समानको है या जगमें मोजिया तलफ बुझावै ॥ री० ॥ सुनरी विप्रबधू कुलकी अगरी क्यों अबदेर लगावै ॥ रीमोकूं ॥ गुनभूलंगीनाहिं तुमरो माखनचोर मिलावै ॥ रीमोकूं ॥ दरशन क्योंन करावै ॥ १३ ॥

सिद्धिता बचन श्रीजीप्राति-दादरा ।

जो तुम दरशन पाऔरी उनको ॥ सावधान है बैठो राधे चितमतिकहूं चलावै ॥ रीउनको० ॥ ध्यान धरो दृगमूंद जोरकर अस्तुति करो बुलावो ॥ री उनको० ॥ मैं तुमको पाऊं नहिंराधे कोटि जतन करावो ॥ रीउनको० ॥ माखनचोर बजावै बंशी जब हंस कंठ लगावो ॥ रीउनको जो तुमदरशनपावौ ॥

दोहा ।

ज्योतिषिकी यह रीतिहै, सुनो कुंवरीचितलाय ॥
जो बिचार मनमें करो, सोसब देय बताय ॥
सामुद्रिकके भेदयह, निसिमें कहान जांय ॥
होत प्रातही पूछिये, मैं सब देउं बताय ॥

श्रीजी बचन-दोहा।

कहिजोतिषकी रीतिअब, कहा हम कियेबिचार॥
कोन प्रश्न हमने कियो, सो तू सकल उचार॥

सिद्ध बचन-दोहा।

लेउनाम काहु पुष्पको, प्यारी कहो गुलाब॥
अहो कुमारि प्रिय वस्तुको, चाहत मिलनसिताब॥

श्रीजी बचन-दोहा।

अरी सिद्धता मंत्र करि, लागूं तेरे पांय॥
कीजै ऐसो जतन अब, प्यारे ते मिलजांय॥

सिद्धिता बचन-दोहा।

श्रीराधा ललिता सखी, मूंदो अपने नैन॥
मिले श्याम मैं नाहहूं, सत्य कहतहूं बैन॥

श्रीजी बचन-दोहा।

अरी सिद्धता यहनभल, तू हमको तजिजाय॥
हमसों तुमसों लाड़िली, ढूंढे होय मिलाप॥

सखाजी बचन-दोहा।

अपने अपने करकमल, दृगमूंदे सब बाम॥
ताजिछलबल प्यारी बहुर, बोलउठेघनश्याम॥

श्रीजी बचन-लावनी।

बोली कुंवर किशोरी हमको छोड़ सिद्धता कितकोगई॥ मनमोहनको मिलाय मोहनी मन ले अंतरध्यान भई॥ हे नटनागर रूप उजागर

अबऐसी कृपाकीजी ॥ चलोहमारे संग सामने हि-
ल मिल खोज लगाय लीजै ॥ सुनो सखी ढूंढै दो
दो मिल भानुसुता मेरे संगदीजे ॥ करत बेर क्यों
गोपकुमारी रजनी जात वृथा छीजे ॥ इत गो-
पी ढूंढत बन उत राधे हरिसंग लई ॥ मनमोहन
को मिलाय मोहनी सुनलो अन्तरध्यान भई ॥

श्रीकृष्ण बचन।

देखो प्यारी या उपबनमें फूलरही कैसी फुल
वारी ॥ गेंदा गुलाबांस गुलतुर्रा गुलाब केतकी है
न्यारी ॥ जाही जुही मालती बेला फूल बहारझुकि
रही डारी ॥ फूले कमल गुंजता मधुकर बोलत हैं
कोयल कारी ॥ या उपबनके बीचा लाडली मैंने
रची एक कुंज नई ॥ मनमोहनको मिलाय मोह
नी मनले अंतरध्यान भई ॥ २ ॥

चौक ३।

मदन किशोर लाडलीके संग कुंज महल को
जावतहैं ॥ अछन अछन पग धरत धरनिपै मंद
मंद मुसिक्यावतहैं ॥ बैठे नवल किशोर मंदिर
में कछु ऊंचे सुर गावत हैं ॥ करत प्रीतिकी रीति
परस्पर फूले अंग न समावत हैं ॥ नील कमलकी
माल श्यामनें लै प्यारी उर डारदई ॥ मनमोहन
को मिलाय मोहनी मन ले अंतरध्यान भई ॥ ६ ॥

चौक ४।

सुनो श्याम आवत ब्रज बनिता अब उनसो कहा कहा कहिये ॥ मिली सिद्धिको मिली परस्पर सदा श्यामके संग रहिये ॥ रशिक बिहार वृंदाबनकी है रजनी आनंदमई ॥ मनमोहनको मिलाय मोहनी मन ले अंतरध्यान भई ॥ ४ ॥

वार्ता।

इतनेहीमें ललिता बिशाखा आदि सब सखी उसी कुंजभवनमें आय पहुंची तब तौ श्रीठाकुराजीनें यह ध्रुपद कौ उच्चारण कियौ ॥

ध्रुपद राग सारंग।

बैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग कर मुरली अधर धार सारंग धुनि गाई है ॥ मोहन अतिही सुजान सर्बकला गुनानिधान एक तान जानबूझ चूक कैं बजाईहै ॥ प्यारी जब गह्यो बीन सर्बकला गुनप्रबीन अति नवीन वोही तान गाई है॥ बल्लभ गिरि धरनलाल रीझदीनी अंकमाल भलेजू भले दयाल सन्तन सुख दाई है ॥

इति पुरोहितानीलीला समाप्त:।

अथ वैद्यलीला लिख्यते।

समाजी बचन- ध्रुपद।

क्रीट मुकट लसत भाल कानन कुंडल बिशाल

केशरको तिलक भाल मोको अति भावैरी ॥ लो-
चन लखि लोचदार अंजन दीनो सम्हार चितवत
चंचल सुठार चितको चुरावैरी ॥ मन्द मधुर हसन
दसन काछिनी कटि बसन कसन झुक झुक गति
मन्द चलत सबको रिझावैरी ॥ श्यामसुन्दर दरश
आस ब्रजमें करिरहै निवास होवे सब पाप नाश
शीशको नवावैरी ॥

दोहा ।

इत रसियानें रस भरी, मधुर बजाई बैन ॥
उत श्रवणन प्रियके परी, ताछिन सोवे चैन ॥
कछुक बैनकी धुनिपरी, कछुक रूपको जाल ॥
प्रेम प्रवाह अथाह सों, है गई हाल बिहाल ॥

सखी सखीप्रति-दोहा ।

मौन परी बोलै नहीं, कर करवट रहि सोय ।
दृगन खोल देखै अली, मनमें संशय होय ॥
चन्द्रावलि ललितादिको, एकआलिलियाबुलाय ॥
बन मंदिर से आयके, कौतुक देखो धाय ॥ २ ॥

(बिशाखा) अरी बीर चन्द्रावलि (ललिता) हां
अरी बीर कहाहै (बिशाखा) अरी बीर तनक
मन्दर मांहि आउ (ललिता) अरीकहा भयो
(बिशाखा) अरीबीर प्यारी तो बडी अचेत परीहै
(ललिता) हैं, अच्छो बीर मैं आवत हूँ ॥

ललिता बचन प्रियाजी प्रति--राग आसावरी ।

प्यारी तुम नयनन नेक निहारो ॥ टेरत टे-
रत बेर बहुत भई मुख पट नेंक न टारो ॥ कहा
भयो सो कहो अली तुम नेक तो बचन उचारो॥
कौंन बिथा कबकैसेभई तोहि देख मम तन कुम्ह-
लायो ॥ श्याम सुन्दर सखी नजर लगी है याम-
न माँहिं बिचारो ॥

वार्ता ।

(ललिता) अजी श्रीप्रियाजी महाराज नेंक
नैंन खोलके देखोतो सही को ठाडो है और कौंन
कहांते आईहै हे प्यारी नेंक बोलो क्यों नाहिं
तुम्है ऐसी कहा भारी बिथाहै ॥

बिशाखा बचन-राग केदारा ।

अरी याहि नजर कौंन दई भारी ॥ दृगन मूंद
मुख भौंन भौंनमें पौढी ओढ पट कछुक दुखारी ॥
घरही रही द्वारनाहिं निकसी यह अचरज मेरे मन-
भारी ॥ कापर दोष धरहु बिनदेखे निज मन कर-
हुन सोच बिचारी ॥ श्याम सुन्दर सखी जो दुख
मेटे बारबार वाकी बलिहारी ॥

वार्ता ।

(बिशाखा) हांबीर ललिता सखी (बिशाखा)
अरी याहि तो नजर लगी दीखै है (ललिता) घर

ते द्वार तांई तो निकसी नाहिं काऊके साम्हने गई नाहिं जानें बीर यह कहा बिथा भई है अरी बिशाखा सखी श्रीचन्द्रावलि जी सों बूझलीजै बडी वाहि कछु मालूम होयगी तूतौ बावरी सूधी साधीहै कहा जानें ॥

समाजी बचन दोहा।

सखी बिशाखा उठिचली, चन्द्रावलिके पास
आई हों कछु बूझवे, मोहि तुह्मारी आस ॥ १ ॥

वार्ता।

(बिशाखा) अरीबीर चन्द्रावलि सखी मैं कछु बूझबे आईहूं बीर न तो प्यारी घरते बाहर गई न कछु रोग न जानें दैवकी कहा गतीहै (चन्द्रावलि) अरी बीर वैद्य कूं बुलायके दिखायदे सामरो वैद्य आयके आराम करदेगो (बिशाखा) अच्छो बीर॥

बिशाखा बचन-दोहा।

कहां जाऊं काते कहूं, कहां बैद्य को ठाम ॥
ललिता नेंक बतायदे, जहां बैद्य को गाम ॥

वार्ता।

अरी ललिता सखी श्रीचन्द्रावलिजीनें जो सामरो वैद्य बतायो वह कौनसी ठौर रहैहै मोय तो खबरनाहिं जो बुलाय लाऊं ॥

ललिता बचन-दोहा।

सखा मनसुखा एकहै, वह जानतहै ठौर ॥
वाते बूझो बैदको, कर कर विनय निहोर ॥

वार्ता।

अरी एक सखा वाको नाम मनसुखाहै, वाही ते बिनती करके बूझ लीजो वोही वा बैदको ठिकानों जाने है ॥

समाजी बचन-दोहा।

मधुर बचन सों सखिननें, लीनों सखा बुलाय ॥
प्रिया परी बेचैनहै, लावो वैद्य लिवाय ॥

सखी बचन-दोहा।

कहा नाम है वैद को, प्रगट बता तू नाम ॥
एक बैद है सामरो, बरषानें नंदगाम ॥

वार्ता।

मनसुखा-अरी सखी मैंतो एक साम्रे बैदकूं जानूं हूं जो नंद गाम में बसै है ॥

सखी बचन- वार्ता।

अरे वा साम्रे बैदकूंही नेंक बुलायला(मनसुखा) कैसो सासरे को बैल कहांते लाऊं(सखी) अरेबावरे कारेबैद(मनसुखा)कहांकारेबैल(सखी) अरे बैल नाहिं बैद(मनसुखा)कहांहै(सखी)तैनेंहीं तो बतायोहै नंदगाम बरषाने ,नंद गाम मरजाने

(सखी)अरे बावरेतू नंदगाम बरषानेकूं नाय जाने (मनसुखा)हँसके हांहांहां जानगयो।(सखी)अरेतो दारीके नेंकजलदीजा।(मनसुखा)तो कैसजाऊं हाथनते कै पांवनते धीरे कै भाजकै(सखी)भाजके (मनसुखा)अरीबीर सुनतो सही भाजकें गयो तो गामते आगे निकस जाऊंगो और जो धीरे गयो तो छः महीनामें पहुंचूंगो(सखी)अरेतो दारीके तूही कह कैसे जायगो(मनसुखा)मैं ऐसो जाऊंगो मथुराह्वैकै वृन्दाबनह्वै गोवरधन ह्वैकैभतरोड ह्वैके आटत पाटत बाटत नांघतभयो जाऊंगो (सखी)अरेतोतूकैसेभीजायगोहूकैबकैहोगो(मनसुखा)तोयतोबडी जल्दी परीहै(सखी)अरेदारीके सखी बेहाल परीहै[मनसुखा]सखी--काहेते बेहाहै गईहै (सखी) अरेनाहिं मांदीहै [मनसुखा।] मांदी कहा [सखी।] तूं नायजानें (मनसुखा)जानलीनी गोबरकी मांद तो लै अब जातूं ॥

मनसुखा बचन सांमरे प्रति--दोहा ।

सखा कही नंद लाल ते, सुनो हमारी बात ।
आयो तुमरे कारने, तुमको सखी बुलात ।

वार्ता ।

अजीश्रीठाकुरजी महाराज, तुमकोसखिननें बुलायोहै, एकसखी बेहाल परीहै ताहि देखवेको चलो॥

लालजी बचन-दोहा ।

जाहु मनसुखा गाम कूं,मैं आवत तत्काल ॥
बूंटी बट औषध विविध,अब लावतहोंहाल ॥

वार्ता ।

ठा०-अरे मनसुखा तू जा मैं दवा हालई आमतहूं॥
म०- अच्छो महाराज ॥

समाजी बचन-दोहा ।

आवत देखो मनसुखा, सखि मन करत विचार ॥
श्याम बैद आये लगत, इत उत रही निहार ॥

सखी वचन- दोहा।

कहा खबर लाये सखा, हमते कहो बुझाय ॥
मिले बैद कै ना मिले, सांची देहु बताय ॥

मनसुखा बचन--दोहा ।

लंबे चकरे चीकने, ऊंचे अधिक दिखात ॥
कारे कारे बैलजो, ठड़े लड़ी भुस खात ॥

वार्ता ।

हमने देखे तो सही कुछ तो लंबे कुछ चीकने कुछकारे बैल लड़ीमें भुस खायतो रहेहैं(सखी)अरे बावरे तैने कहा भांग पीलीनीहै(मनसुखा)अरी बावरी आमेतोहैं ॥

समाजी बचन राग-पद ।

सामरे बैद बने गिरधारी ॥ लट पट पाग अ-

लक घुंघरारी कुंडलकी छबिन्यारी ॥ नांक बुलाक दृगन में अंजन अधर ललित अरुनारी ॥ कटि पट पीत काछनी काछे मोतिन मालाडारी ॥ सांवारि सूरत माधुरि मूरत मोहिजात ब्रजनारी ॥ नाना बिध बनस्पति आदिले स्वादसुगंधनवारी ॥ कारी पीरी हरी चम्पई गोली झोली धरत सम्हारी ॥ छुम छुम छननन चाल चलत पद नूपूरकी झनकारी ॥ श्याम सुन्दर गलियन में डोलें मधुर बचन सो सखी पुकारी ॥

लावनी बे नजीर ।

कर नख सिख बदन शिंगार अनूपम भारी ॥ बनआये मदन गुपाल वैद गिरधारी ॥ बन बूंटी बिविध प्रकार बनाई गोली ॥ हैं ललित सुधा सम स्वादगुनन अनमोली ॥ इत उत टेरत ब्रजवाल कुंजकी टोली ॥ कोई लेउ सुघर सुकुमार कहेमृदु बोली ॥ है मोली गोलअमोल हरै दुखसारी ॥२॥ बन० ॥ एक सखी श्यामके पास सुनत उठधाई ॥ करते करगहि नवनारि बिविध समुझाई ॥ एकपड़ी सखीबेहाल महा दुखपाई ॥ तिनके कारन मैं तुम्हें बुलावन आई ॥ इतनी सुनिके गये प्रिया भवन बनवारी ॥ बनआये मदनगुपाल० ॥ २ ॥ कोमल करसों कर पकर कहैं यदुराई ॥ नाहिं रोग दोष हैं

कछूकहैं समझाई ॥ सब नखसिख रहे निहार जो सुंदरताई ॥ करचातुरताकी बात मधुर मुसकाई ॥ यहगई कहूंहै नजर किसी नें मारी ॥ बनआये मदन गुपाल बैद गिरधारी ॥३॥ केसर जावित्री आदि कपूर जो लीजै ॥ मेवा मिसरी गौ क्षीर नीरमें दीजै॥ दो लौंग जायफल मेल उतारो कीजै ॥ एक पलमें होय अराम सकल दुख छीजै ॥ कहैं श्यामसुन्दर सुख भयो गई बीमारी ॥ बन आये मदन गुपाल बैदगिर धारी ॥ ४ ॥

सखी बचन सखीप्रति–भजन।

आयो एक बैदहै नगरी सखीतिहारी ॥ श्याम बरन तन लट पटि पगिया तिलक छाप शुभकारी ॥ कानन कुंडल झिलमिल झलकें रतन जटित मणि की उजियारी ॥ दाडिम दशन अधर अरु नायक चिबुकन चारु निहारी ॥ मधुर मधुर कोकिल कलबाणी टेरतहैं ब्रजगोपकुमारी ॥ हीरन हार हिये बिच राजें फूलमाल उरन्यारी ॥ हाथ मुरलिया कांधे झुलिया कनक लकुटिया सोहै गिरधारी ॥ जो अबकहो तो मंदिर लाऊं आज्ञा होय तुम्हारी ॥ श्यामसुन्दर है चतुर शीरोमणि सब बैदन ते बैद है भारी ॥

वार्ता ।

विशाखा-अरीबीर ललिता वैद्यवडो ही मल्हक आयोहै वाको स्वरूपतो मोपै बरन्यों हू नांय जाय. जो तू कहै तो बुलायलाऊं ॥ ललिता-अरी बीर जल्दी बुलायला ॥

सखी बचन लाजली प्रति-राग देश ।

वैद चलो मोरे संग संग श्री प्यारीनें मोय पठा-यो ॥ बहुत दिनन ते विकलपरीहै बिरह बिथातन छायो ॥ सैंननहीतेकहै कामकी सैंनन तुम्हैंबतायो होंआईहों तुम्हैं बुलावन देर होत दुख पायो ॥ पल पल कल्प कटत जनु कैसे अबजनुदेर लगायो ॥ श्यामसुन्दर सखिश्यामासिधारे मनमेंहर्ष बढ़ायो

वार्ता ।

(सखी)अजी वैदजी महाराज-लालजी-अरी कहा कहै सखी-सखी-महाराज तुम्हैं बोलवे आई हूं महाराज श्री प्रियाजी के देखवे के ताईं आप बे-ग चलो-लालजी-अच्छो सखी चल चलें ॥

लालजी बचन-राग पद ।

केती दूरहै पौर तिहारी ॥ कौंन गली और कौंन अटारी ॥ सांची कहो नव गोप कुमारी ॥ चलत चलत कछु बेर भई है अबतक देखन परत

दुआरी ॥ श्यामसुन्दर सखि बेगबतावो मन्दर सुन्दर बने चित्रसारी ॥

वार्ता।

(लालजी) अरी सखी प्यारीको घर कहां हैं॥

दोहा।

यही यही प्रियको भवन, रतनन जडे किंवार ॥
पट खुलवावत हौं खडी, सो टेरत मधुर पुकार ॥

लालजी वचन-वार्ता।

बैद हकीमहै कोई बैद हकीम (मनसुखा) बैल-हकीम-लालजी-अरे बैदहकीम सामरे बैद हकीम (मनसुखा) साम्हरके बैलहकीमकोरबैल(समाजी) अरे आज बडे बैद हकीम-फाटि परे ॥ मनसुखा अरे आज बरषाने में हकीमनको मेह बरसो है (समाजी)अरेएकतू बैदहै(मनसुखा)हां२मैंहीबैदहूं (सखी)अरे एक सामरे बैदहू आयेहैं(मनसुखा)अ हो वहतो ऐसे वैसेहीहै(सखी) कैसेहैं,वेतो हमारे ही सिखायेभयेहैं(सखी)अरे क्यांझूंठबोलेहै(लालजी) अरेतू कोहै(मनसुखा)मैं बैद हूं(सखी)अरे तू कैसो बैद है तेरोयहांकछू काम नाहिंहै यहांतो सामरे बै दको कामहै(सखी)आओजी,(मनसुखा)आयोजी सखी)हाथ पकर के अरे चल तू क्यां धस्यो आवै है श्रीसामरे बैदजी आप आओ (लालजी) आये

सखी,सखी-महाराज सखी की नबज देखो(लाल-
जी) अरी सखी याकी नबज घट पट चट होयहै
मनसुखा-सखी याकी नबजभटभों भट्टसों है रही
है सखी-अरे कहाबकैहै,मनसुखा - तुमकहाजानों
हो लालजी-लै सखी किसमिस(मनसुखा)लै सखी
फूटी किसमत(लालाजी)लै सखी पिस्ता(मनसुखा)
लै सखी निबोरी लालजी, लै सखी छुहारो (म-
नसुखा)लै सखी फुहारो (समाजी)श्रीठाकुरजी ने
प्यारी पै उसार के पटक दीनी (मसुनखा)अपनो
सोटा उसार के मसालचीकूं दैदीयो(सखी) अरेतू
इनकी नकल करैहै(मनसुखा)जो इनने कीयो सो
हमने कीयो सखी ठाकुरजी ने तो बांसुरीते बीमा-
री उतारी है(मनसुखा) मैंनें अपने सोटाते उतार
के मशालची की मशाल पै गेरदीनी सो सब बि-
मारी जरगई(लालाजी)तेरी सखीको अब आरामह्वै
गयो अब तेरी सखीकूं हम संगलै जांयगे यह कह
जब श्रीठाकुरजीने निज स्वरूप प्रगट कियो तबतो
श्रीप्रियाजीको सबरोग दूरह्वैगयो और अति प्र
सन्नभई और प्यारेकी अनुमपछबि निरखनलगी

कंसलीला।

समाजी बचन-दोहा।

ग्वालबाल नंदलाल संग, चले अगारी धाय॥

कर चन्दनको थारले कुब्जा भेटी आय ॥

कवित्त ।

एहो बनवारी बलिहारी मेरी अर्ज सुनो लाई नाथ चन्दनमें आप अंग ताई हूं ॥ चन्दन लगा ऊं सुख पाऊं ये मनाऊं प्रभु एक दिन ग्रह पद तु मेरे धराई हूं ॥ बड़ीबाट लागी मोय आपके दर्शहू की आज मैं सनाथ नाथ बदन कराईहूं ॥ सुन्दर बचन प्रीत रीति के बसई प्रभु जान जन अपनों सोई इच्छा पुजाईहूं ॥

श्रीकृष्ण बचन दोहा

कुबिजा के सुनकर बचन, भक्त आपनी जान ॥
विहँस कह्यो घनश्यामनें, चरचो चन्दन प्रान ॥

वार्ता ।

हेसखी जो आपकी ऐसी ही इच्छा है तो भले ही आप मेरे अंगमें चन्दन लगाय देउ ॥

समाजी बचन-दोहा ।

तब कुबिजा मन हर्षके, चन्दन बदन लगाय ॥
और गोप बालक सकल, चर्चें अति सुखपाय ॥
प्रभु कटि टेढी तासु लख, दई नेक उचकाय ॥
लग झटका अटका मिट्यो, करी अप्सराताय ॥
नाथ पधारो गेह मम, कह्यो बचन मुसकाय ॥
मनसा पूरण कीजिये, सुनिये यादवराय ॥

श्रीकृष्ण बचन--दोहा।

सुनि सुन्दर मेरे बचन, कहूं तोहिं समुझाय ॥
फिर ऐहों काहू दिना, तेरे घरके मांय ॥

दूत बचन कंसप्रति--सोरठा ।

डारयो धोबी मार, कुबिजासों चन्दन लियो ॥
करी अप्सरा नारि, हाल सभी सुनि लीजिये ॥

कंस बचन—कवित्त ।

सुनों सब सभा पीछेकहूं दोष देउ प्रथमही आय ग्वाल द्वंदही मचायो है ॥ बिना बात धोबी मेरो मार उनठौर दियो और बस्त्रनको गट्ठर लुटायो है॥नन्दहूसमेत अब ब्रज कूंमैं फूकूंगो हाय हाय कियो जुलम मन डर न खायो है ॥ सुन्दर सो मैं तो जानु ब्रज अपने अपने है यह तो महा चूतिया गमार पशु आयो है ॥

कवित्त ।

मैं तो कर आदरसों सादर बुलाये यहां इन जाने जाने कहखौफ यहां नाहीं है ॥ बिनाही बिचार सो बिचारो मारो धोबी आय राखोजी हुंस्यारी कहूं भाग नहीं जाई है ॥ अबना मैं जीवतो यहां ते उन्है जान देऊं एक एक ग्वालन हू जमुना वहाई है ॥ सुन्दर सो एतो महाग्वाल बद फैल कियो ठीक थाह आज मैं तो नेठमी जनाई है ॥

दोहा ।

एक बात सुनों और सब, श्रवण लाय समझाय ॥
यहां मति आंवन दीजियो, भूल कभू दोउ भाय ॥

कवित्त ।

कहूं और समझाइ ध्यान नेंक धरो भाई लेउ बुल
वाइं भट पूरे ढुंडवायके ॥ गज मतवारो सो हमा
रो बलधारी महा नाम है कुवालिया सो द्वार देउ
धायके ॥ मुष्टक चाणूर सल तोसल सुनोरे बात र
हो मम सामने सो बलको बढाय के ॥ सुन्दर सो
खान पान कछु न सुहाय मोय राजकाज करूं ज
ब दैहो ये मराय के ॥

दोहा ।

कहो सबै समुझाय के, कीन्हे बहुत हुस्यार ॥
जियत जान पावै नहीं, देउ सबन को मार ॥

अथ धनुष भंजन ।

समाजी बचन दोहा ।

उतै श्यामसंग ग्वालले, मनमें अति हर्षाय ॥
धरयो धनुष जहां कंसको तहँही पहुंचे जाय ॥

असुरबचन दोहा ।

बोले सब योधा बचन, सुनो कृष्ण बलराम ॥
पाहिले धनुष उठायके, फिरजाऔ नृपधाम ॥

श्रीकृष्ण बचन कवित्त।

सुनोरे दैत्य हमें धनुष ते है न काम हमतो बुलाये कंस मामा ढिंग जातहैं। बोले यज्ञ काज तुम्है कहत न आई लाज बज्र धनु बालक कर क्यों कर उठात है ॥ जानी हम उर बैरा दायो कीयो चाहै नृप अन होनी बात सो तुम सुख न सुहात है ॥ सुन्दर न जान पावो आतें नये सिखलावो धनुष उठावो नहीं यमपुर लखातहै ॥

समाजी बचन-दोहा।

यह सुनके घनश्यामके, भयो कछू उर रोष ॥
उठा धनुष किये टूक दो, पुनि धाये कर जोश ॥
धनुष टूट असुरन लख्यो, पकरन लागे श्याम ॥
तारयो काके हुकमते, नैक उठावन काम ॥
बांध फेंट भ्राता दोऊ, पकर पकर भट मार ॥
फेंक फेंक मारे सकल, बही रुधिरकी धार ॥
जितने योधा धनुष ढिंग, ते सब दीने मार ॥
जै जै ध्वनि देवन करी, सुखेत बार बार ॥
शब्द घोर धुनि श्रवण सुन, कंस चौंक एकसंग ॥
इतने कही जो दूत सुख, नाथ धनुष कियोभंग ॥
सुनत कंस धरनी ढयो, रह्यो होस तन नाय ॥
कर गहि समुझावत असुर, बीजन व्यारढुराय ॥
कितनेही चुपकी साधमुख, दबाके भजेदरबार ॥

व्यर्थ मरें बिन मौत क्यों, यहां नाहिं सारबिसार ॥

मल्ह बचन-वार्ता ।

अरे चांणूर—हां? भैया मुष्टक, लै सोर धनुष तो तोर डारचो, भैया तोशल इनें छोटो मति गिनि-यो ? ये बडे बली हैं, हां दादातू सांची कहैहै अरे मुष्टक कहा कहैं यार अरे यार हम नेंक घर तांई है आमें हैं, शंडके जन्मते तो राजाको नोंन पानी खायो एक दिन तो मरनों सबकूंही है ॥ तोसल-जा सोर नोंन पानी तैने खायो होयगो हमने तो खूब घी बूरे छकेहैं और निरे लडुआ पेडा जलेबी छकी हैं नून पानी क्यों खामेंरे ॥

तोसलबचन ।

क्यों भाई कोनसे दावसे लडोगे बहुत दावहमें यादहै सुन ॥

दाव पेंच वर्णन ।

इक दस्ती इक दस्त दाव कर झोला पट्टी बाल सांकडा कीली कोला जंग पैजंग भला ॥ फिर करके निकल चला फिर बंक बांहसे दाव भला ॥ मिरदंगी और डमरू टुकनी येही दाव खिलारीका ॥ कोई दावसे कहै जिसै मैं हलूंन मानूं होय चाहै बलभारीका ॥

दोहा ।

बहुत दाव जो यादहैं, सुनिले मेरी बात ॥
एक दाव ऐसा करूं, नंद सुवन करुं घात ॥
सुरमुनि चढचढ बाहनन, कोई भू आकाश ॥
देखत प्रभुके चरतही, होय प्रसन्न प्रकाश ॥
सबके देखत कृष्णनें, दीने ससुर गिराय ॥
बचे कुचे भाजन लगे, रह्यो एकहू नाय ॥
जागी मूर्छा कंसकी, क्षण पल कल नहिं वाय ॥
हाय हाय कहो जाय कोई, नंद सुवनते जाय ॥
जो कछु लाये भेटको, पौरी जाय धराय ॥
लौटैं अपने गेहको, भयो खुशीमें पाय ॥

कवित्त ।

द्वारपै हुस्यारी करो पीलवान रहैखूब आवतही गज दोऊ भ्रात मारै धायके ॥ अथवा बकसीस दरबारते दिवाय देऊं हीरा और रत्न खरे चोखेही मँगायके ॥ नंदते कहो कि घर जाय लैकै छोरन कों भयो मैं प्रसन्न सब गोपन बुलायके ॥ सुन्दर तमाशो अब देख लियो पेटभर फेर कभू बोलूं तो आय जईयो धायके ॥

दोहा ।

दूतन कच्चो हाल सब, कह्यो नंदते जाय ॥
सुनत नंद आनंद मन, फुल्यो अंगन माय ॥

श्याम जानउर नंदकी, कहो तात कहा बात ॥
बेटा इन जो मुख कही, सो मोहूकों भात ॥
सुनी अनसुनी करि प्रभु, पहुंचे भूपदुवार ॥
बोले मीठे नैन सों, सुनो महावत यार ॥

अथ कुवलियाबध ।

श्रीकृष्ण बचन-दोहा ।

है आमें नृप पासलों, लीजै गज को टार ॥
नहीं दोष हमको कछू, तोय समेत दें मार ॥

गजपाल बचन-कवित्त ।

ग्वाल गमार जो मनई गरबायो सो नेंक दो चार र भटई जो मारे ॥ दसहू सहस्र गजई गज इकलो इन्द्रके ऐरापतिको मान मारे ॥ हूलूं हूं हाल तमाशो दिखाऊं सबरे ग्वारियन अब यह मारे ॥ सुंदर जात कहो कहां भागे बीच कचहरी भूपहि मारे ॥

चौपाई ।

सुनो भ्रात नेंक बचन हमारो ॥ गजको टारो बेग सवारो ॥ मामाजी ढिग हम नेंक जाई ॥ भेट मिटावन लामें भाई ॥ पुनि कह्यो बैन नयन तिरकाई ॥ गजते बचोतो नृप लग जाई ॥ तुमरो नाम सुनो हम भारो ॥ कंस दुहाई दोऊअन मारो ॥ तोर धनुष तुम मन गरवाये ॥ अब न बचो गज ढिग जो आये ॥

श्रीकृष्ण बचन-दोहा।

नहीं भ्रात यह मानहैं, हैगो नीच महान ॥
पकरो गज धरनी परै, नृप ढिंग करैं पयान ॥
दूत खबर दई कंस को, दरवाजे गये आय ॥
हुक्म नाथ जस सुखकरो, तस हम करिहैं धाय ॥
सुनत दूतके बैन ही, मल्हन गई निगाह ॥
भृत हुसयारी तुम करो, वे यहां आवें नाहिं ॥

पद ।

याकी रजधानी अबही जाय लैहौं ॥ टेक ॥ सुन बलि भ्रात दुष्ट यह भारो कंस पकर हन डारो ॥ देवकी बालक सकल हने इन खींच खींच कर मारो ॥ बडे सुभट सुर मुनि दुखदीने पृथवी भार उतारो ॥ याकी रजधानी अबही० ॥ मात पिता की बंद छुडाऊं जिन तन संकट भारो ॥ उग्रसेन-कों राजतिलक दऊं नाना सगो हमारो ॥ कंस नि-कंदन नाम धराऊं भक्तन कर उर धारों ॥ कंस दुष्टके भ्रात जितेहैं तिन्हैं गिन गिनके मारों ॥ याकी रजधानी अबही मैं लैहौं ॥ सुन्दर वैद्य भ-क्तहित कारन पुनि पुनि तन भुवि धारों ॥ याकी रजधानी अबही जाय लैहौं ॥

दोहा ।

कही बहुत घनश्यामने, बीरन तूलै टार ॥

मृत्यु गजई की हो नहीं, कहत जो हमई पुकार ॥
धतधतकरदीयो हूलगज, नैननिकासनिकास ॥
गही सुंड हरि आपकर, बलको कियो प्रकास ॥
पूंछ पकरि बलिरामने, सूंड गही घनश्याम ॥
लट्ठु मार ग्वालन कियो, लखते नर और बाम ॥

कवित्त।

चकई सो चारों ओर गजई घुमायो खूब फट, गई सुंड और दंतहि गिरायेहैं ॥ जय जय धुनि चारों दिश गगन धुन छायगई मारादियो भारी गज खेल करायोहै ॥ नभते बिमान बैठे सुर करें सुमनवृष्टि मेहसो झर सब फूलनको लगायो है ॥ सुन्दरसो दोऊ भ्रात एकएक गजदंत हाथन लै कंध धर आगेको बढ़ायेहैं ॥

दोहा।

देख मल्ल कांपन लगे, पेस कछू ना जाय ॥
कंसकियो मन भजनको, (पर)बैठो पुनिसरमाय॥
गजहि मार भीतर गये, बलदाऊ नंदलाल ॥
मल्हनको दीखन लगे, मानों आयो काल ॥

चौपाई।

कंस क्रोध कर बचन सुनाये ॥ ये भीतर कैसे धसि आये ॥ सुनो मल्ह तुम सबल सदाई॥मारो इनको चरण घमाई॥जीवत जान न यहांते पावें॥ भाज कहूं यह निकस न जावें ॥

समाजी बचन-दोहा ।

सुनत कंसके बचन को, मल्ह ताल फटकार ॥
कहन लगे सब मल्ह यों, सुनिये नंदकुमार ॥

मल्लबचन-दोहा ।

बोले मल्ह जो कंसके आओ करो दो हाथ ॥
सुन्यो श्रवण यह हम हतो,बडे बली दोऊ भ्रात॥

श्रीकृष्ण बचन-कवित्त ।

हमतो हैं बारे भैया तुम भुज भारे बली लरिवेकी कहा जानें सार घोस ग्वालजी ॥ मामाजी बुलाये तब यहां लग आये धाये दायेजो बिसाये रचे कपट जंजालजी ॥ जोपै नहीं मानो तोपै खुशी जी तिहारी रही कही पर सत्य हम मुख बैन घालजी ॥ सुन्दर सो पेलो दंड कूद जो अखाडे बीच कही मानों नहीं तो आयो तुम कालजी ॥

दोहा

पुनि बोले घनश्यामजी, हम नहिं जाने दंड ॥
तुम सब पेल दिखायदो, बडे बडे जो संड ॥

समाजीबचन--राग गुंगधपान ।

देखत नर और नारि कहत ऐसे मुख माई,जो हम कीने सुकृत श्यामके होउ सहाई।।जैसो तोरयो धनुष कुवलिया मत्तडिगाई ॥ तैसेही जीतो मल्ह करो बिधि तुमही सहाई।।धन्य सखी यहपु

री यहां इनजनम जो लीना ॥ जैसे जाके हृदय श्याम बलराम समाये ॥ तैसेई ताके हृदय आपने रूप लखाये ॥ दीनबंधु भगवान सकल घट बास कराई ॥ सुन्दर आदि अनादि ब्रह्म व्यापक सब ठाईं ॥

दोहा ।

कंस और जो-मल्ह भट, तिन देख्यो प्रभुरूप ॥
महा कुलिश बैराट तन, सब भूपनके भूप ॥

कवित्त ।

खंभ ठोक श्याम और बलराम दोनों भाई कूद जो अखाडेपरे मन हर्षायके ॥ मुष्टक चाणूर और तोसल सलैई मल्ह नैननते नयन तन तनते मिलायके ॥ गुथन लगे सो अब सब हूंहूं करके झट्ट-पट्ठ दीये सो मार प्रभु ढायके ॥ सुन्दर जयजय ध्वनि देव करें गगन ते भज्यो देख कंस हालप्रभु पहुंचे जायके ॥

दोहा

पकर केश घनश्यामने, दीनो कंस ढकेल ॥
ऊपर कूदे आपहू, ऐसो खेलो खेल ॥
जयकारो इकसंग भयो, गईघोर ध्वनिछाय ॥
नभते बरसे फूल सुर; आनंद उर न समाय ॥
जयजयध्वनि सुखसुरनके, अतिप्रसन्न नरनार ॥
हन्यो कंस घनश्यामने, चहुंदिशहोत पुकार ॥

ग्वाल बाल नंदजीसहित, अरु सब मधुपुरग्राम ॥
प्रफुल्लित अति मनमेंभये, धसे सुखखके धाम ॥

चौपाई।

कंसहिमार हालप्रभुआये ॥ छज्जू लाये खाटके पाये कंसहि मारविश्रामहि धाये ॥ अपने कर यमुना खिस लाये ॥

दोहा।

कंसभ्रात हैं अष्टऔर, आये कर बल भार ॥
सो चल दाऊ बीरने, क्षणमें दीने मार ॥
रोवत रानी कंसकी, नयनन भरि भरि बारि ॥
त्राहि त्राहि कर महलमें, केश फिकारफिकारि ॥

बिलाप-राग जैपुरी रांगड।

हम कही बलम नहीं मानी अरे हाय हाय ॥ सुर पुर बैठे जाय बालम बल धारी हाय हाय ॥ अब हम तुम बिन क्या करें जीया ना लगनेका हाय हाय ॥ ये तुम्हरी प्राण पियारी पिया न कुछ कह भी गये हये हये ॥ चाल चलै मस्तानी पिया यौ-बनवाली हाय हाय ॥ तुम बिन भई अनाथ न पीहर जानेकी हये हये ॥ नेंक फिर चाहन चह जावो सेजरिया की ओर हये हये ॥ कहैं सुन्दर वैद्य बिचार राम मरदाने हये हये ॥

दोहा

रानी रोवत प्रभु लखीं, दीनी सब समझाय ॥
मामीजी कोई अमर ना, या धरती के मांय ॥

चौपाई ।

उग्रसैन नृप नाम कहायो ॥ कंस मरन सुनि प्रभु पै आयो ॥ दोउ कर जोर परयो प्रभुचरना ॥ जय जय नाथ भक्त दुखहरना ॥ अब प्रभु दोष क्षमा कर दीजो ॥ दास जान हमें अपनो कीजो ॥ मारयो नीच कंस दुख कारी ॥ सरण सरणमें सरण तिहारी ॥ जब जब भार धरणि अकुलाई ॥ तब तब प्रभु औतार सुहाई ॥ वेदि नेति नेति गुण गावें ॥ शेष शारदा पार न पावें ॥

दोहा ।

त्राहि त्राहि अब शरण में, राखो नाथ कृपाल ॥
भक्तवत्सल संकटहरण, जैजै जयति दयाल ॥
दीन बचन सुन श्यामने, कर गहि लियो उठाय ॥
निज कर परस्यो शीशपै, लीनों हृदय लगाय ॥
पुनि बोले उग्रसैनजी, जोर पाणि सिरनाय ॥
अब प्रभु मथुरा पुरीजुको, करो राज हर्षाय ॥

कवित्त

बोले राज श्री मुख नानाजी हमारी सुनों कीजै आप राज अब मन हर्षायके ॥ आप यदुवंशिन

को सो राजा करेंगे नहीं बैठो आप गादीपै सोच बिसंरायके ॥ जोपै आज्ञा आपकी ना मानेजो जगत बीच ताकूं हनें ठौर हम पदही घुमाय के ॥ सुन्दर सो जय जय ध्वनि देवन गगन करी फूली सब मधुपुरी उरमें सिहायके ॥

दोहा।

उग्रसेन आनन्द मन, हर्षे महा अपार ॥
जैजै प्रभु धन भाग मम, दियो दर्स दुखटार ॥

सोरठा।

अब मैं भयो सनाथ शीश नाय पदकंजमें ॥
करो हुक्म यदुनाथ, आज्ञा हो सोई करूं ॥
बोले बचन रसाल, सुनों भक्त जन नृपति तुम ॥
करो अटल सुख राज, खुशी मौज आनंदमें ॥

दोहा।

सिंहासन कंचन शुभग, प्रभु लियो तुरत मंगाय ॥
दोऊ भ्रात नृपकर पकर, तापर दिये बिठाय ॥

चौपाई।

भांति अनेक बाजने बाजे ॥ ढोल मृदंग महा धुनि गाजे ॥ भेरि नफीरी धुनहि सुहाई ॥ चंवर करैं ठाड़े दोउ भाई ॥ दक्षिण नृप कर श्याम हैं ठाडे ॥ वामअंग बलराम सो वाडे ॥ ठाडे चंवर करैं दोऊ इ ॥ उग्र सैन धन भाग बडाई ॥

दोहा

धन्य भाग नृप उग्रके, कहत सकल नर नार ॥
दियो राज दोऊ भ्रात शुभ, अपने हाथ सुधार ॥

सोरठा ।

कह्यो श्याम सिर नाय, मनमें अति हर्षायके ॥
करों काज चित लाय, जो नृप मुख आयुष करो ॥

दोहा ।

उग्रसैन राजा कियो, हरयो अवनिको भार ॥
सुन्दर भक्तन कारने, धरयो नाथ अवतार ॥

इति श्री कंसलीला सुन्दरलाल
वैद कृत सम्पूर्णम् शुभम् ॥

अथउद्धव लीला लिख्यते

श्रीकृष्णवचन-राग सारंग ।

पहिले कर परिणाम नंद सों समाचार सब दीजो ॥ और वहां वृषभान गोपसों जाय सकल सुधि लीजो ॥ श्रीदामा आदिक सब ग्वालिन सों कर प्रेमसु भेटियो ॥ सुखसंदेश सुनाय हमारो गोपिनको दुख मेटियो ॥ मित्र एक बन बसत हमारो ताहि मिले सचु पाईयो ॥ सावधान है मेरी ओरते ताकूं शीश नवाईयो ॥ सुन्दर परम किशोर बय क्रम चंचल नयन बिशाल ॥ कर मुरली

सिर मोरपँख पीतांबर बनमाल ॥ जिन डरियो तुम सघन बनन में ब्रज देवी रखवार ॥ वृन्दाबन सो बसत निरंतर कबहुंन होतनिहार ॥ उद्धव प्रति सब कही श्यामजू अपने मनकी प्रीति ॥ सूर दास कृपा कर पठये यही सकल ब्रजरीति ॥

स्वामी बचन-राग कालिंगडा।

उद्धव मन अभिलाष बढायो ॥ यदुपति योग जान्यो जिय सांचो नयन अकाश चढायो ॥ नारिन पै मोको पठवतहै कहत सिखावन योग ॥ मनही मन अब करत प्रशंसा है मिथ्या सब भोग ॥ आयसु मान लियो सिर ऊपर प्रभु आज्ञा परमान ॥ सूरदास प्रभु पठवत गोकुल क्यों न कहो कित आन ॥

दोहा।

हरिको भेष बनायके, बैठे रथमें आय ॥
कर प्रणाम श्री कृष्णकूं, चले मनहिं हरषाय ॥
पहुंचे वृन्दाविपिनमें, मिले नंदसों धाय ॥
सखा जान निज पुत्रको, मिले बहुत हरषाय ॥
कुशल पूछ निज पुत्रकी, कीयो आदर मान ॥
अति अनंद मनमें बढो, सुतसनेह पहिचान ॥

सखीबचन-राग मलार।

सखीरी है कोई हरि कीसी उनि हारि ॥ मधु

बनते इत आवत सजनी चितो न नयन निहारि ॥
माथे मुकट मनोहर कुंडल पीत बसन रुचिकारि॥
रथ पर बैठि कहत सारथियों ब्रज तन बांह पसार॥
जानत नाहिन पहिचानतहू मनहु गये युग चार॥
सूरदास स्वामीके पिछरे जैसे मीन बिन वार ॥

दोहा-सखीबचन ।

जब उद्धवकूं देखकें, मनमें अति हर्षाय ॥
सखा कृष्णको जानकें, पूजा करी बनाय ॥

उद्धव बचन ।

उधोको उपदेश सुनों किन कानदे ॥ सुन्दर श्याम सुजान पठायो मानदे ॥ कोउ आयो उत ओरते जिते नंद सुवन सिधारे ॥ वहै वेणु धुन होय मनों आये नंद प्यारे ॥ धाईं सब गल गाजके ऊधो देखे जाय ॥ लै आईं निज भवन में हो आनंद उर न समाय ॥ अरघ आरती तिलक दूब दधि माथे दीनी ॥ कंचन कलश भराय आय परकरमा दीनी ॥ गोप भीर आंगन भई मिल बैठी सब जात ॥ जल झारी आगे धरी हो बूझत हरि कुशलात ॥ कुशलक्षेम वसुदेव कुशल देवी कुबजाऊ॥ कुशल क्षेम अक्रूर कुशल नीके बल दाऊ ॥ पूछ कुशल गोपाल की रही सकल गहिपाय॥ प्रेम मगन ऊधो भयो हो देखत ब्रजको भाय ॥

सखीवचन- राग सोरठा ।

कहो कहांते आये हो ॥ जानत हैं अनुमान मनों तुम यादव नाथ पठाये हो ॥ वैसेई वरण वसन पुनि वैसेई तन भूषण सज याये हो ॥ सर्वस ले तब संग सिधारे अब कापर पहिराये हो ॥ सुनहु मधुप एको मन सबको सोतो उहां लै छाये हो ॥ मधुवन की माननी मनोहर तहांही जाउ जहां भाये हो ॥ अब यह कौन सयानप ब्रज पर का कारण उठि धाये हो ॥ सूर जहां लो श्याम गात है जान भले कर पाये हो ॥

वार्ता ।

कहो ऊधोजी पहिले एक मथुरा निवासी आयोहो ॥ सो तो हमारे प्राण धनकूं लेगयह अब आपकैसे पधारे ॥

उद्धवबचन- वार्ता ।

अरी सखी हमतो तिहारेही हितकी कहवआयेहैं॥

सखी बचन-वार्ता ।

हे ऊद्धवजी हिततो कहा लाये होउगे कोई न कोई उपाधि हि लाये होउगे मथुरा वासीनमें हित कहां ॥

उद्धव बचन--राग नट ।

उधोके उपदेश सुनों ब्रजनागरी ॥ रूप शील

लावण्य सबै गुण आगरी॥प्रेम ध्वजारस रूपिणी उपजावन सुखपुंज ॥ सुन्दर श्याम बिलासनी नववृन्दावन कुंज ॥ सुनो ब्रजनागरी० ॥ कह्यो श्याम संदेश एकमैं तुमपै लायो॥ कहनं समय संकेत कहूं औसर नहिं पायो ॥ सोचतही मनमें रह्यो कब पाऊं यक ठाऊं ॥ कह संदेश नंदलाल को बहुर मधुपुरी जाऊं ॥ सुनो ब्रजनागरी०॥वे तुमते नहिं दूर ज्ञानकी आंखन देखो॥अखिल विश्व भरपूर ब्रह्म सबरूप विशेखो॥लोह धात पाषाणमें जल थल माहिं अकाश ॥ सचर अचर परबत सभी ज्योति ब्रह्म परकाश ॥ सुनों ब्रजनागरी ॥

दोहा।

प्रीत छोड घनश्याम सों, साधो सब तुम जोग ॥
ओं कार हरि जानिये, मिथ्या जग रस भोग ॥
जिनकों तुम अपनों कहो, वेहैं पूरणकाम ॥
जग नातो विनके नहीं, तुम भूलीं मन बाम ॥

सखीवचन-राग केदारा।

गोकुल सब गोपाल उपासी ॥ योग अंग साधनको ऊधो ते सब बसत ईशपुर काशी ॥ यद्यपि हरि हम तज अनाथ करीं तदपि रहत चरणन रस रासी ॥ अपनी शीतल तऊन छांडत यद्यपि हैं शशि राहु गिरासी ॥ कह्यो अपराध योग लिख

पठयो प्रेम भजन कर करत उदासी ॥ सूरदास ऐसीको बिरहन, मांगत मुक्ति तजे गुणराशी ॥

राग धनाश्री।

जीवन मुंह वाही को नीको ॥ दरश परश दिन रात कटत है, प्राण पियारे पीको ॥ नयनन मूंद मूंद किन देखो, बन्धयो ज्ञान पोथीको ॥ आछे सुंदर श्याम मनोहर, औरजगत सब फीको ॥ सुनों योग को कहा लै कीजे, जहां हानि है जीको ॥ खाटो दही नहीं रुचि आवै, सूरखैया घीको ॥

पद

आये आप बडे व्यौपारी॥लाद खेप गुण ज्ञान योगकी, ब्रजमें आय उतारी ॥ फाटक दैकर हाटक मांगत, मोरे निपट सुधारी ॥ धुरहीते खोटो खायो है, लिये फिरत सिरभारी ॥ इनके कहे कौन डह कावै ऐसो कौन अयानी ॥ अपनो दूध छांड को पीवै खारे कूपको पानी ॥ ऊधो जाउ सवार यहांते बोगि बार जिन लावो ॥ मुंह मांगो पैहो सूरज प्रभु साहुही आन दिखावो ॥

दोहा

जोग आप बेचो वहां, जहां कोऊ जोगी होय ॥
ब्रजवनिता सब प्रेम में, लेय जोग अब कोय ॥

राग काफी

योग ठगोरी ब्रजन विकैहै ॥ यह व्यौपार अं-

तहीं कीजे नातर तुम फिर जैहै ॥ बेचो जाय भ-
वन कुबिजा के कीमत भली जो पैहै ॥ हम बृज
बासी प्रेम उपासी फल तज जहर न खैहै ॥ रंगी
लाल लै जोग पधारो यहां न गाहक ऐहै ॥

राग नट ।

ऊधो कहां गई अकल तिहारी ॥ यह तो जोग
अमोल आपको याकी कीमत भारी ॥ याकी की-
मत हम नहिं जानें बेचो बीच बजारी ॥ कै बेचो
कुबजा सौतन को मोहे श्री गिरधारी ॥ रंगीलाल
हम प्रेम उपासी जाने जोग कहारी ॥

उद्धव बचन--राग बिहाग ।

सखी तुम योग युगति नहिं जानी ॥ निंदा क-
रत योगकी सब मिल माया माहिं भुलानी ॥
श्यामहि मीत कहत तुम अपनौ ज्ञान बिराग
निशानी ॥ वेहैं पूरण ब्रह्म सनातन जिनकी अकथ
कहानी ॥ रंगीलाल तज मोह भजो हरि मिलि
हैं मुक्ति निसानी ॥

राग सोरठ ।

सखी तुम मानों मेरी बात ताहि कहत तुम
कान्ह नन्दको ताके नहिं पितु मात ॥ अखिल
अंड ब्रह्मंड विश्व सब उरमें जाय समात ॥ लीला
गुण अवतरे आय ब्रज प्रीत करी तुम सात ॥

जोग जुगत धारे बिन मनमें फीकी हैं सब जात ॥

दोहा।

अब तुमसों हम कहतहैं, सुनों सकल ब्रजनारि ॥
बात कहूं परब्रह्मकी, आतम तत्व बिचारि ॥
वे तुम पर करि हैं कृपा, प्रभुता जान परम ॥
तजिये नातो गामको, भजिये पूरणब्रह्म ॥

सखीबचन-राग बिलावल।

एअली कहा योग को नीको ॥ तज रस रीति नंद नंदनकी सिखवत निर्गुण फीको ॥ देखत सुनत नाहिं कछु श्रवणन ज्योति ज्योति कर ध्यावत ॥ सुन्दर श्याम दयाल कृपानिध कैसे हो बिसरावत ॥ सुनि रसाल मुरली सुरकी धुनि सोइ कौतुक रस भूले ॥ अपनी भुजा ग्रीवपर मेले गो पिन के मुख फूले ॥ लोक कानि कुल को भ्रम प्रभु मिल मिलके घर बन खेली ॥ अब तुम सूर सिखावन आये योग जहर की बेली ॥

सखी बचन दोहा।

तन मन बाढी है व्यथा, श्याम दरश के हेत ॥
ऊधो काटे अंग पर, कहा लोंन घिस देत ॥
जो यह उत्तम योग है, तो इतनी सुनि लेउ ॥
जाय मधुपुरी के बिषै, कुबिजा ही कूं देउ ॥

राग मलहार।

हमरे कौन योग ब्रत साधे ॥ मृग छाला अरु

भस्म अंगमें जटा सीस पै बांधे ॥ बन बन फिरत सकल तन बस कर कंदमूल फल खांदे ॥ धूर परी ऐसे योगन पर बिनहरि पदरस साधे ॥ सूरदास माणिक को तजके राख पोटरी बांधे ॥

राग सारंग ।

अपने स्वारथ को सब कोऊ ॥ चुपकर रहो मधुप रसलंपट तुम देखे अरु कोऊ ॥ औरहु कछु संदेश कहन को कह पठवो किन सोऊ॥लीने फिरत योग युवतिन को बडे सयाने दोऊ ॥ जब किव मोहन रास खिलाई जोपे जान हतोऊ ॥ अब हमरे जिय बैठो यह पद होंनी होय सो होऊ ॥ मिट गयो मान परेखो ऊधो हिरदे हुतो सो होऊ॥ सूरदास प्रभु गोकुलनायक चित चिंता सब खोऊ॥

समाप्ती बचन दोहा ।

सुनि गोपिन के बचन को, ऊधो भूल्यो ज्ञान ॥
देख प्रेम ब्रजबधुनको, सकल बिसारयोमान ॥
ऊधो सूधो है गयो, सुनि गोपिन के बोल ॥
ज्ञान बजाई डिम डिमी, प्रेम बजायो ढोल ॥
बिदा मांग ऊधो चल्यो, मनमें अति हर्षाय ॥
देख प्रेम ब्रज बधुन को, चाले योग गमाय ॥
यह लीला अति प्रेमकी, ऊधो गोपी गीत ॥
रंगीलाल संग्रह करी हरि गोपिनकी प्रीत ॥

अथ बृन्दावन माहात्म्य।

दोहा।

श्री बृन्दावनके सरस, और न दूजौ धाम ॥
ताकी द्रुमवेली तरें, बिहरत श्यामा श्याम ॥
हेममयी अवनी सकल,रतन खचित बहुरंग ॥
चित्रित चित्रविचित्रगति,छबिकी उठततरंग ॥
बृन्दाबन झलकन झलक, फूले नैन निहार ॥
रवि शशि द्युति घरजहांलग,ते सब डारेवार ॥
बृन्दाबन द्युति पत्रकी,उपमा दीजे काहि ॥
कोट कोट बैकुंठहू,तिहिं सम कहेन जाहि ॥
लता लता सबकलपतरु,पारिजाति समफूल ॥
सहजएक रस रहतदिन,झलकत जमुनाकूल ॥
ललित कुंज है हों कबै,श्री बृन्दावन मांहिं ॥
ललितकिशोरी लाडिले,विहरेंगे तिहि छाहिं ॥
कबहों सेवा कुंज में,है हों श्याम तमाल ॥
ललिता कर गहिविरमहैं,ललित लडैतीलाल ॥
सुमनवाटिका विपिनमें,है हों कबमें फूल ॥
कोमल कर दोऊ मानते,धरि हैं बीनदुकूल ॥
काली दहके कूलकी,कबहों त्रिविध समीर ॥
युगल अंग अंग लागि हों,उडिहैं नूतन चीर ॥
मिलिहैंकब अंगक्षार होय,श्रीवन वीथिनधूर ॥

परिहैं पद पंकज युगल, मेरी जीवन मूर ॥
कबगहवरकी गलिन में, फिरिहोंहोय चकोर ॥
जुगल चन्द मुखनिरखहों, नागरनंदकिशोर ॥
कब कालिन्द्री कूलकी, हैहों तरवर डार ॥
ललित किशोरी लाडिले, झूलें झूला डार ॥
श्यामापदहढ गहसखी, मिलिहैं निश्चैश्याम ॥
ना मानें हग देखले, श्यामा पदबिच श्याम ॥
कबहों वृन्दाविपिनको, बनिहों सुन्दर कीर ॥
रंगीलाल छबि जुगलकी, निरखूं धीर समीर ॥
कुंज कुंज अति हेमसं, कोटि कोटि रतिमैंन ॥
दिनहि सम हारित रहै, श्री वृन्दाबन ऐन ॥

कवित्त

एक रज रेणुका पै चिन्तामणि वारि डारों, वारि डारों विश्व सेवा कुंज के बिहारपै ॥ ब्रज की लतान पै कोटि कल्प वारि डारों रंभा को वारि डारों गोपिनके द्वार पै ॥ ब्रजकी पनिहारिन पै रती सची वारि डारों बैकुंठहूको वारि डारों कालिन्द्री की धार पै ॥ कहैं राम रायएक राधाजूको जानत हों देवनकू वारि डारों नंदके कुमार पै ॥ क० ॥ दीन बंधु दीनानाथ व्रजनाथ रमानाथ राधानाथ मो अनाथ की सहाय कीजिये ॥ तात-भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी नातो तुमही ते प्रभु

विनय सुन लीजिये ॥ रीझिये निहाल देर कीजियें नझीनी कहूं दीन जान दास मोहि अपनाय ली-जिये ॥ कीजिये कृपा कृपाल सामरे बिहारी लाल मेट दुःख जाल बास वृन्दाबन दीजिये ॥

क० ॥ गिरकी गोधन मयूर नव कुंजन को पशु-कीजे महाराज नंद के नगरको ॥ नर कीजे तौन जौन राधे राधे नाम रटै कीजे बर कालि-न्दीकी कगर को ॥ इतने पै जो कुछ कीजिये कुमर कान्ह राखिये न फेर हठी की झगर को ॥ गोपी पद पंकज पराग कीजे महाराज तृण की-जै राबरेई गोकुल नगर को ॥

मोरहू बनाओ तो राखो वृन्दाबनमें नांच नांच कोहक कोहक आपको रिझाऊंगो॥मरकटहूं बनाओ तो राखो बृन्दाबन में कूद कूद बृक्षनतें जोर जोरकूं जताऊंगो ॥ अतिथिहू करो तो ना-थ करियो बृन्दाबन को जाय हरिभक्तनते टूक मांग खाऊंगो ॥ रंगी कूं कीजे जो कीर बृन्दाबन को राधा कृष्ण राधा कृष्ण आठो याम गाऊंगो ॥

राग चैतीगौरी ।

कोकिलव्है द्रुम कूकमचाऊं ॥ पंकजाप्रियालाल मधुपहै मधुरे मधुरे गुंज सुनाऊं ॥ कूकर बन वी-थिनमेंडोलोंबचे सीत भक्तनके खाऊं ॥ ललितकि-

शोरी आसयही है व्रजरज तज क्षण अंतन जाऊं॥

राग देश ।

अब बिलंब जिन करो लाडली कृपादृष्टि टुकहेरो ॥ यमुना पुलिन गली गहवरकी बिचरहूं सांझ सबेरो ॥ निशदिन निरखों जुगल माधुरी राशिकन ते भट भेरो ॥ ललित किशोरी तन मन अकुलित श्री बन चहत बसेरो ॥

राग यमन ।

प्यारीजी मोतनहू टुक हेरो ॥ श्री बन द्रुमन लतन के नाचे रसमय चहूँ मान गुण तेरो ॥ आन न जानों अन्य न मानों तूही कृपा पद साधन मेरो ॥ ललित माधुरी आस पुजावो अब जिन करो हाहा अब सेरो ॥

राग झंझोटी ।

जो कोऊ बृन्दाबन रस चाखैं ॥ भुवन चतुर्दश तिहूँलोक लों सपनेहू नहिं अभिलाखैं ॥ ललितकिशोरी परै कोंन में श्याम राधिका भाखै ॥ युगल रूप बिन नैनन खोलै लोभ दिखावो लाखै ॥

राग धनाश्री ।

हमारे श्री बृन्दाबन और ॥ माया काल तहां नहिं व्यापै जहां रशिक सिर मौर ॥ छूट जात है सत्य बासना मनकी दौर न दौर ॥ भगवत र-

शिक बतायो श्री गुरु अमल अलौकिक ठौर ॥

राग धनाश्री ।

ऐसे बसिये ब्रजकी वीथिन ॥ साधुनके पनवारे चुनि चुनि उदर जो भरिये वीथिन ॥ पांडेसे सब वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतन ॥ कुंज कुंज प्रति लोट लोट कर रज लागे रंग रीतन ॥ निशदिन निरख यशोदा नंदन अरु जमुना जलपावन ॥

राग बिलावल ।

कहा करूं वैकुंठ जाय ॥ जहां नहिं नंद जहां नहीं यशुदा जहां न गोपी ग्वाल न गाय ॥ जहां न जल यमुना को निर्मल और नहीं कदमन की छाय ॥ परमानंद प्रभू चतुर ग्वालिनी ब्रज तज मेरी जाय बलाय ॥

राग गौरी ।

ब्रज रज मोहिनी हम जानी ॥ मोहन कुंज मोहन श्री वृन्दावन मोहन यमुना पानी ॥ मोहिनी नारि सकल गोकलकी बोलत अमृत बानी ॥ श्री भटके प्रभू मोहन नागर मोहिनी राधारानी ॥

राग सहाने।

धन धन श्री वृन्दाबन धाम ॥ जाकी महिमा वेद बखानत सब बिध पूरण काम ॥ आस करत हैं जाकी रजकी ब्रह्मादिक सुरग्राम ॥ लाडली लाल जहां

नित विहरत रति पति छबि अभिराम ॥ रशिकन को जीवन धन कहियत मंगल आठो याम ॥ नारायण बिन कृपा युगल वर छिन न मिले बिश्राम ॥

राग सहानो ।

धनि श्री वृन्दाबन की धूर ॥ वंशी बट कालिन्द्रीके तट प्रेम सुधारसपूर ॥ कोकिल कीर कपोत हँस पिक नाचत अधिक मयूर ॥ सेवाकुंज पुंज आनंदकी लता झुकीं रसतूर ॥ रंगीलाल तहां बसत युगल बर रशिकन जीवन मूर ॥

राग गौरी ।

आज मेरे वृन्दाबन तन भायो ॥ सुरपति भवन नहीं ताके सम असवेदन मिल गायो ॥ कालिन्दी तट वंशी बट तर गोविंद रास मचायो ॥ ठौर ठौर राधे राधे रट सुन उर आनंद छायो ॥ रंगीलाल बासि श्री वृन्दाबन कलिको ताप न सायो ॥

राग बिहाग ।

भजो मन श्री वृन्दाबन चन्द ॥ ताकीं कुंज लता तर बिहरत श्री राधे नँद नंद ॥ रासाबिलास जहां हरि कीनो प्रगटो परम अनंद ॥ ऐसो शुभग ललित वंशीबट तहां बह सुता कालिंद ॥ रंगीलाल छबि श्री बनकी लखि मनमें बढ्यो अनंद ॥

राग दादरा ।

ऐसो कब रैहै मन मेरो ॥ कर कर भू गुंजन

के हरवा कुंजन मांहिं वसेरो॥ व्रज बासिनके टूक झूंठ अरु घरघर छाछ महेरो ॥ भूख लगैतब मांग खाय हों गिनौंन सांझसवेरो ॥ इतनी आसव्यास की पुजवो मेरो गामन खेरो ॥

राग परज ।

भजो मन बृन्दाबन सुख दाई ॥ अबनी कनक सुहाई अबनी कनक सुरंग चित्र छबि कालिंद्री मणि कूले ॥ लतन रहे भर पाय सखी यह कंचन केद्रुम मूले ॥ जलज थलज रहे निकस जहांतहां करण वरण छबि छाई॥ सहज रैन सुख दैन विराजत बृन्दाबन सुख दाई ॥ राजत नवल निकुंजहि लालन निरख होतसुखपुंजहि ॥ निरख होत सुखपुंजकमल दल रचीहै सुन्दर सैन ॥ वहत समीर त्रिविध गुण लीने आकर्षित मन मैन॥ डोलत केकि काक पिक बोलत जित तित मधुपनगुंजाहे॥ रत्नख चित फूलन सों फूला राजत नवल निकुंजाहिं ॥ करत निकुंज बिहार ॥ सखियन प्राण अधार ॥ राशिकन प्राण अधार राशिक बर नवल किशोर किशोरी॥हसमोर चित चोरत प्यारे को सब अंग नागरी गोरी ॥ अति बिलास नवरस उपजत बलि किंकनी झनकार ॥ अति प्रवीन रतिकोक कलनमें करत निकुंज बिहार ॥ भजो

निरख निरख बलिजाई ॥ श्रम जल कण झलकाई ॥ श्रम जल कनक रहे झलक बदन बिंबकंहुं कहुँ पीक जो सोहै ॥ हँस मोर चित चोरत प्यारे को ऐसी जिन्है मन मो है ॥ चितई चिन्ह नयनीके सजनी नयनन मुसकाई ॥ जै श्री हित ध्रुव सखी सरस रंग भीनीं निरख निरख बलिजाई ॥

राग गौरी ।

अब मन वृन्दाबन चलि रहिये ॥ जहां बिहरत नित युगल माधुरी तिनको दर्शन पैयै ॥ भूख लगै तब ब्रजबासिन के टूक मांग कै खैयै ॥ प्यास लगै यमुना जल पीकर सुधा सरस सुख लहियै ॥ रंगीलाल वंशीबट तर राधे राधे कहिये ॥

राग--बिहार ।

बृन्दाबिपिन सघन वंशीवट पुलिन रमन निधिबन कोकिला बन मोहन मन भावै ॥ सेवा कुंज सुखकी पुंज जहां राजत पिया प्यारी ललितादिक संगलिये उमंग उमँग गावै ॥ यमुना जल अति गंभीर कदमनकी जहांभीर ललित लता कुसुम भार अपने बरषावें ॥ हंस मोर कोकिला पपीहा शब्द करें पशु पक्षी दास कान्हर राधाकृष्ण गावें ॥

राग धनाश्री ।

नमो नमो वृन्दाबन चंद ॥ आदि अनन्त अनादि

एक रस पिय प्यारी विहरतस्वछंद ॥ सांत चित्त आनंदरूप घन खग मृग वेली और वृन्द॥भगवत रासिक निरंतर सेवित मधुप भये पीवत मकरंद ॥

कवित्त

नन्दके अनंदहो मुकुंद परमा नंद हरि काटो जम फंदमोय भय सों बचाइये ॥ नहिं जान ज्ञान ध्यान योग यज्ञ नहीं कियो भयो मनते हँकार प्रभु कैसे तोय धाइये ॥ सुनों कृष्ण हरि जैसीकरी सौकरी दयाल तैसे दीन जान मेरी पीर को मि-टाइये॥सुखको निधान दीजे प्रेमभक्त हूको दान अपने चरणारबिंद चित्त मयाराम को लगाइये ॥

इति।

अथ चेतावनी के पद। लि०।

दोहा।

क्या सोवै सुख नींद में, मंजिल तेरी दूर ॥
रंगीलाल उठि जागरे, चलना तुझे जरूर ॥
यह जगसरसरायके, बसेमुसाफिरआय ॥
प्रातहोत रंगीसकल, इत उतकूरमिजाय ॥
येजग सपना रैनका, भाई बंधु परिवार ॥
रंगी खुलते नैंनके, झूठा सकल विचारि ॥

राग सोरठ।

रेमन समझ ऐसी बात ॥ नदीके परवाह ज्यों

सब जगत चल्यो जात ॥ सुत मात भ्रात अरु पिता बनिता बन्यो आय संगात ॥ बसे संग सरायमें परभात को उठि जात ॥ आकाश धरती पौंन पानी चन्द्र सूरज रात ॥ काल सबको खायगा मन लाय बैठो बात ॥ नंदलाल प्रभुजी सुमररे मन उतर भौजल जात ॥

राग कालिंगडा।

माया बनी सार की सूली नारी नरक का कूआरे ॥ हाड चाम नारी को पिंजरतामें मनुआ हुआरे ॥ भाई बंधु कुटम्ब घनेरा तिनमें पचि पचि मूआरे ॥ कहत कबीर सुनों भाई साधो हार चला जग जूआरे ॥

राग भैरवी।

बार बार समझाय रह्यो में मान लैरे मन मेरी कही को ॥ दुख सुख सों बीती सो बीती याद न कर अब बाद भईको ॥ एक ब्रह्म पूरण सब जगमें छोड कपट की गांठ गहीको ॥ जानकी दास सुमिर श्री रघुवर गईसोगई अब राखरहीको ॥

राग परज।

मन पछितैहै औसर बीते ॥ दुर्लभ देह पाय पद हरि भज कर्मबचन अरहीते ॥ सहस बाहुदसवदन आदि नृप बचेन काल बलीते ॥ हम हम कर

धन धाम संवारे अंत चले उठ रीते ॥ सुत बनि-
तादि जानि स्वारथ रत ना कर नेह इनीते ॥ अं-
तहु तोय तजाहिंगे पामर तू न तजे अबहीते ॥ अब
नाथहि अनुराग जाग जड त्याग दुराशा जीते ॥
बुझन काम अगम तुलसीको बिषय भोग बहु
घीते ॥ मन पाछि तैहै औसर बीते ॥

राग परज ।

मनतू क्योंहूआवैरागी ॥ सुतदारा परिवार छां-
डके हरि पदरति नाहिं लागी ॥ घर घर टूक फिरत
है मांगत भूख प्यास नाहिं त्यागी ॥ लोगन को
वैराग दिखावत मन अंतर बहुरागी ॥ रंगीलाल
क्यों भेष लजावत हरि पद प्रीति न जागी ॥

मनतू मान कही अब मेरी ॥ झूंठ सांच बोलत
निसवासर करी पापकी ढेरी ॥ अबहू सोच त्याग
मन मूरख होत फजीती तेरी ॥ भजले राम काम
सब तजके करिये नेंक न देरी ॥ रंगीलाल अब
बिलम न कीजे मौत आय गई तेरी ॥

राग सोरठ ।

मनतू क्यों जग जाल फस्योहै॥ दारा सुत पारि-
वार देख सुख अति मन माहिं हंस्यो है ॥ पर
भ्रमजाल कालके बसमें मोह भयंकर नाग डस्यो

है ॥ रंगीलाल सब तज हरि भजिये क्यों मूरख भ्रम जाल ग्रस्यो है ॥

या जग मीत न देखो कोई ॥ सकल जगत अपने सुख लागो दुख में संग न होई ॥ दारा मीत पूत सम्बन्धी प्यारे धन सों लागे ॥ जबही निरधन देख्यो नरको संग छोडसब भागे ॥ कहा कहूं या मन बौरे कूँ इन सों नेह लगाया ॥ दीनानाथ सकल भय भंजन यश ताका बिसराया ॥ स्वान पूंछ ज्यो भई न सूधी बहुत जगत मे कीनों ॥ नानक लाज बिरद की राखो नाम तिहारो लीनों॥

मनतू मान कह्यो अब मेरो ॥ दारा सुत परिवार मोहिबस भयो कुटंब को चेरो ॥ बोलत झूंठ कुटुंब के कारण कीयो पाप घनेरो ॥ नेंक नहीं डर तोय वादिन को होय कालको फेरो ॥ धन पुत्रादि सकल घर बारे कोई न आवे नेरो ॥ रंगीलाल सब तज हरि भजिये जासों होय निबेरो ॥

मनरे प्रभुकी शरण बिचारो ॥ जिन सुमरत गनिकासी उधारी ताको यश उर धारो ॥ अटल भयो ध्रुव जाके सुमरण अरु निर्भय पद पाया ॥ दुख हरता याविध को स्वामीतें काहे बिसराया ॥ जबहीं शरण गही गज प्रभु की ग्राहते जाय छुडाया ॥ महिमा नाम कहां लग वरणों राम

कहत बंधन तिहिं टूटा ॥ अजामेल पापी जग जानें निमिष माहिं निस्तारा ॥ नानक कहत चेत चिंतामणि ते भी उस रस पारा ॥

कबित्त ।

जोर करै समता तबलौं जबलौं निज सत्य सरूप न भाषत ॥ है बिष भोगको रोग भयानक हून गयो सबरो जग जानत ॥ देखी सुनीपढ़ि के गुनिके तबहू रिपु पांच बुलायके राखत ॥ तुमको उपदेश बिरंच नहीं अब घोरके कोइन ज्ञान पिवावत॥

इति ।

अथ विनयपत्रिका लिख्यते ।

राग गौरी ।

मन मानें न मनाय के हारो ॥ है सो मैं जानौं यह मेरे यक छिनमें है जातहैन्यारो ॥ वाको मित्र सदा मैं जानौं यह है धर्म नसावन हारो ॥ जात स्वर्ग पाताल दौरके नांघ जात सब सिंधुकिनारो ॥ जो याके बसमें नर आवततातोकाम क्रोध अति प्यारो ॥ इन्द्रिनको अपने बस राखत पाप कमाय मोरासिर डारो ॥ पाय कर्म गति पाप सतावत करत न कोई सहाय हमारो ॥ जो प्रथमें मनको रिपु जानें सो कबहून लखे यम द्वारो ॥ लाखन राम भजो चित चेतो फिर सोचो-सोचेगि बिचारो ॥

राग टोडी ।

मैं तो अब सोचौं हौं जन्म गमायके ॥ जबसौं मैं आयो संसारी कीने पाप बनायके ॥ ज्ञान भक्ति मनमें नहीं आवै हारे सब समझायके ॥ धनसम्पति जगमें सुख जानों जोरौं चाहत कमायके ॥ सो कछु औरते और भईहै रोवत कर्म नसायके ॥ मोहि और सबठौर न सूझत टेरत बांह उठायके ॥ मेरी भूलचूक सबक्षमियो दीजो योग बढायके ॥ मनिज कर्म अकर्म नेम तप दीने प्रभु हर्षायके ॥ लाखन दास तुम्हारो स्वामी हैभरोस रघुवर रायके ॥

राग सोरठ ।

जय देवन के देव कृपाल ॥ सुन्दर सूरत मोहिनी मूरतएक दन्त शुभमाल ॥ चार भुजाराजत अति सुन्दर हे प्रभु दीन दयाल ॥ लंबोदरसुखपुंज हरण दुख देउ भक्ति की माल ॥ मान सिंह है दास तुम्हारो काटो भवके जाल ॥

हे प्रभु दीनबन्धु यदुराई ॥ मोअस दीन कुटिलसों कौनचूक बन आई ॥ हे प्रभु दीनदयाल सामरे आरत हरण कन्हाई ॥ यद्यपि भूल होय जो मोहन कृपा करो मो पाई ॥ मान सिंह है दास तुम्हारो चाहत तव सेवकाई ॥

राग--बिहार ।

अब नहिं देर लगाओगे तुम अब नहिं देर लगाओगे ॥ खैंचत चीर दुशासन मेरे अब कहा लोग हंसाओगे ॥ देखो बसन बिहीन सभा में तब तुम मन सुख पाओगे ॥ मैंतो दासी ब्रजपति तेरी क्यों न दया उर लाओगे ॥ जो कहुँ बिलम लगै करुणानिध फेरि आय पछिताओगे ॥ रंगी लाल को कछू न बिगरे अपनोंहिं नाम डुबाओगे॥

राग जैजैवंती ।

टेर सुनों अब मेरी प्रभु तुम गोवरधन गिरधारीहो॥द्रोपति सुता सभा कौरव में यों कह टेर पुकारी हो ॥ तुम बिन नाथ कोई नहीं मेरो मैं अब शरण तुम्हारी हो ॥ भीष्म कर्ण द्रोण नृप जेते सबहीनें लाज बिसारी हो ॥ पांचो पति अति दीन हमारे भीम गदा करते डारी हो ॥ कोई नहींसहायक मेरो देखो दृष्टि पसारी हो॥मींडत हाथ पुकारत तुमको नीर नैनसे जारी हो ॥ दुशासन कर केश गहि रह्यो देखत सब नर नारी हो ॥ अब तो जात लाज प्रभु मेरी कौरवसभा मझारी हो ॥ रंगी लालको कछू न बिगरे जायगी लाज तुम्हारीहो॥

राग विहाग ।

मोहि भरोसो भारी प्रभुतेरो मोय भरोसो भा-

री हो ॥ द्रुपद सुता कर जोर सभा में दीना नाथ पुकारी हो ॥ भीषम कर्ण द्रोण दुःशासन अति अनिरीति बिचारी हो ॥ दुर्योधन पापी यह ठानी देखन मोहि उघारी हो ॥ कैतो नाथ बेग सुधि लीजे नहिं पति जात हमारी हो ॥ रंगीलाल मोहि गिरधर नागर तेरो भरोसो भारी हो ॥

मोहि भरोसो राधा बरको ॥ रूठे राजा परजा सबही रूसै मालिक घरको ॥ इष्ट मित्र सब रूस जांय पर कबहु न छोडों हरिको ॥ रूसो नारि कुटंब सब रूसो चाहत मुरली धरको ॥ मान सिंह एक तू ना रूठे डर ना नारी नरको ॥

राग सोरठ ।

मोहि भरोसो नागर नटको ॥ वृन्दाबन की कुंज गलिन अरु कालिंद्रीके तटको ॥ यमुना जल अरु केलि भवनको बंशी वारे बट को ॥ बलदाऊ और नंद बबाको वा राधा के हटको ॥ मानसिंह यह दास तुम्हारो चाहत राधा राधा रटको ॥

दोहा ।

दीन बंधु अस नाम की, किधौं राखिये लाज ॥
किधौं दूसरे नाम को, धरिये श्री महाराज ॥
कहां लगिछवि बरणन करूं, छबिसागर छबिमूल
पाहि पाहि शरणा मत, होउ श्याम अनुकूल ॥

याचक तेरे द्वार को, सब बिध लायक राम ।
लख रुख तेरे जगतको, देहि मनोगतिकाम ॥

कवित्त ।

राम रघुवीर रणधीर रघुवंश मणि रमानाथ रघुनाथ रघुवंश महाराज ॥ वामन बिहारी बन बारी गिरधारी श्याम श्री पति मुरारी सुख कारी सुर सिरताज ॥ एहो ब्रज राज सूगरीबको निवाज सदा जब जब सुनी दीनन की दीनता की अ-वाज ॥ बारन लगाये धाये दासन बचाये सदा द्वि-जराज गज राज द्रोपती के लाज काज ॥

आरत पुकार कर पाहि पाहि पाहि राम तेरे द्वार पर अब तो पवार परो आय ॥ सुनोयदुराज जोपै तेराई कहायो जन तोपै राजा राय द्वारे पै बलाय मेरी जाय ॥ गहरनलावो धावो आवो अ-पनावो मोहि अब तो बितावो नाथ सबै भांति चित्त चाय ॥ मन बच क्रम कर्म जनित बिकार हार मेरे राम दंपति की कीजिये सहाय आय ॥

लीजिये शरण अरु दीजिये सुभक्ति भाय पाय आपनी बिताऊं झूंठो प्रभु खाय खायखाय ॥ ते-रोई कहाय जगहियरे बसाय तोहि बिनती सुनाऊं औ रिझाऊं यश गाय गाय ॥ काय बच कर्मतेति हाराइ भरोसोमोहि तेरे बिन कोंन सुनें अर्ज तेरी

धाय धाय ॥ मन बच कर्म कृतजनित बिकारहार मेरे राम दंपति की कीजिये सहाय आय ॥

जासु सुचि चिन्हनने पृथवी पुनीत भई सिद्ध भई तीरथ है जगत कामना दई ॥ जाके नपवाये पीठ राजाबलि राज लहे जाके उड धूर परे मुनि तिय तर गई ॥ पाये हैं अमर पद बंदना सुधारदेव जाके ध्यान धारे सदा शंभु पाय अघ पई ॥ सोच चरणारबिंन्द धूर पूरी मोद भई जानकी प्रसाद दई संपदा नई नई ॥

राग सोरठ ।

तुम प्रभु अवगुण जानत मेरो ॥ मैं अति पामर चोर खरो हूं लोभ मोह को चेरो ॥ कपटी कुटिल मलीन दीन हूं काम क्रोधने घेरो ॥ तव माया बस फिरत भुलानो सब संसार अंधेरो ॥ मानसिंह निज दासके ऊपर दया भाव सों हेरो॥

प्रभु मैं दूसरे को नहि जानो ॥ तू तो अकथ अनादि पुरुष है सब जग में पहिचानो ॥ कामक्रोध मद लोभ में फंसके निशदिन फिरत भुलानो ॥ मैं अति कायर कूर निपट हूं तुमरो नाम सुनानों मानसिंह आधार तुमारे ढूंडत फिरत दिमानो ॥

हे प्रभु कैसे कर मैं जानों ॥ निशि वासर तुमको खोजतहों तुमरो भेद न जानों ॥ कै गरीब की बां

हगहो अब नहीं तो छांडो बानों ॥ मानसिंह अति आस मिलनकी अब की बार तो मानों॥देव अभय वरदान दासको कूर कुटिल खल जानों ॥

हो तुम करुणा मय भगवान ॥ हों निश वासर नाम जपत हों छांड सकलघर काम ॥ क्यों नहिं बांह गहत तुम मेरी भक्ति आपनों जान ॥ को कवि गाय सकत तब लीला शारद हू नहीं जान ॥ अभय देव बरदान दासको मानसिंह तजि मान ॥

प्रभु तुम मो पापी को तारो ॥ अधम उधारन नाम तिहारो अबकी बार उबारो ॥ मैं खल पापी सब जग जान्यो नाम तिहार सहारो ॥ गणिका तारी देर करी ना ग्राहलडत गजहारो ॥ मानसिंह को दर्शन देकर भवसों पार उतारो ॥

मैं प्रभु सब बिधिसों अब हारो ॥ पूजा पाठ कछू नहिं जानू जाको करूं सहारो ॥ निश दिन छल पाखण्ड करतहूं तुमहू अब निरधारो ॥ हो कृपाल करुणा मय सागर धर मम बांह उबारो ॥ मान-सिंह प्रभु त्राहि त्राहि है कैसेउ कर अब तारो ॥

राग सारंग ।

अब मैं सोच सोच पछितानों ॥ मेरो जन्म अकारथ बीत्यो ज्ञान विवेक न जानो ॥ धन स-म्पत सुख में मन लाग्योसोऊ नां ठहरानों॥बीती

उमर मिलै अब कैसे कौन यतन अबआठों॥ लाखन उमर गई धोके मे अब जग आन ठगानों॥

राग देश।

अब कछु मोपै कहीउ न जात॥ लिख पढ थक्यो कहि सुनके मन एको न समात॥ उलटी रीत दुनियांकी देखी अमृत तज विष खात॥ निजघर सर्व संपदा त्यागत परघर फिरत हडांत॥ लाखन हरि बिगरीके साथी बेई बनावत बात॥

राग सोरठ।

हो तुम करुणा मय भगवान॥ करुणा सुनी गज फंद छुडायो धाये त्याग विमान॥ करुणा सुनी द्रौपदि नारिकी चीर बढायो आन॥ करुणा बसप्रहलाद उबारयो मार असुर को मान॥ रंगीलाल की करुणा सुनिके देउ भक्ति बरदान॥

अब प्रभु मो पापी को तारो॥ पाप करत निश वासर बीत्यो करत करत नहि हारो॥ दारा सुत परिवार मोहि फस बिरथा जनम बिगारो॥ बह्यो जात भव सिंध धारमें नाहिं बचावन हारो॥ रंगीलाल चरणन को चेरो अब मोहि पार उतारो॥

प्रभुजो मैं पापी अति भारो॥ कर कर पाप कमाई कीनी बोझ बढयो अति भारो॥ माया बस ममता में फस के फिरत हों घर घर मारो॥ ग-

णिका तार अहिल्या तारी अजामेल सो तारो ॥
जो नहिं तारोगे रंगीकूंबिगरै नाम तिहारो ॥

प्रभु मैं सब पापिन में नामी ॥ माया बिबस नारि संग फँसि के बन्यों महा अति कामी ॥ स्वर्ग पताल और या जगमें है मेरी बदनामी ॥ पापहि पाप कमायो निश दिन नेंक परी नहिं खामी ॥ रंगीलाल को आस चरणकी सुधिले अंतरयामी ॥

हे करुणामय दीन दयाल ॥ मो अस दीन अजान कुटिल पर काहे न होत कृपाल ॥ हों जानत हों तुमहिं सामरे बिहरत संग लिये ग्वाल ॥ कंस मार बैकुंठ पठायो ऐसो दुष्टभुआल ॥ मानसिंह कर जोर कहत है देउ मुक्तिकी माल ॥

हे दीननके नाथ दीना नाथ ॥ दीनोद्धार गरीब निवाजा तीन लोकके नाथ ॥ निशदिन तुमरो ध्यान धरत हों चरण कमल धरमाथ ॥ मो अति कायर कूर निपट पर छायाकर निज हाथ ॥ दास अमान बिनय अब सुनिकें काटि पापकी गाथ ॥

हे नागर नट नवल किशोर ॥ नटवर बेष कछनियां काछे चितवत राधा ओर ॥ दृग अंजन खंजन मद गंजन नाचत गति जनु मोर ॥ मृदु मुसक्यान अधर अरुणई चंचल हा चितचोर ॥ मानसिंह घनश्याम चलो अब प्रिया सांकरीखोर

हो तुम दीनन के हितकारी ॥ अजामेल सम पापीतारो और अहिल्या नारी ॥ गणिका तार प्रहलाद उबारे गजकी टेर सम्हारी ॥ भारत बीच भाईई व्याकुल है कै नाथ पुकारी ॥ घंटा तोर पक्ष तुम कीनों नेंक न करी अँवारी ॥ रंगीलाल की खबर लेउगे तब रहै साख तुम्हारी ॥

इति ।

श्रीबृंदाबन बिहारिणे नमः ।

अथ प्रभाती लिख्यते ।

राग बिलावल ।

ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियां ॥ किलक किलक उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय धाय मोद गोद लेत दशरथ की रनियां ॥ अंचल रज अंगझार विविध भांतिसों दुलार तन मन धन वार डार कहत मृदु बचानियां ॥ बिद्रुम से अरुण अधर बोलत मृदु बचन मधुर सुन्दर नाशिका बीच लटकत लटकानियां ॥ तुलसि दास अति-आनंद निरखके मुखारबिंद रघुबर की छबि समान रघुबर छबि बनियां ॥

राग भैरवी ।

मंगल रूपयशोदा नन्दन ॥ मंगल मुकट कान

मध कुंडल मंगल तिलक बिराजत चंदन ॥ मंगल भूषण सब अंग सोहत मंगल आनँद कंद ॥ मंगल लकुट कांखमें चांपे मंगल मुरलि बजावत मंद ॥ मंगल चाल मनोहर मंगल दर्श होत मिटै दुख द्वंद ॥ मंगल ब्रजपति नाम सबन को मंगल यश गावत श्रुति छंद ॥

उठो हो गोपाल लाल दुहो धौरि गैया ॥ सद्य दूध मथ पीवहु भैया ॥ भोर भयो बन तम चर बोले घर घर घोस द्वार सब खोले तुमरे सखा बुलावन आये ॥ कृष्ण कृष्ण कहि मंगल गाये ॥ गोपी रई मथनियां धोवें ॥ अपनो अपनो दही बिलोवें ॥ भूषण बसन पलटि पहिराऊं ॥ चन्दन तिलक ललाट लगाऊं ॥ चार भुजा गोवरधन धारी ॥ मुख छबिपर बलिगई महतारी ॥

जागो हो मेरे प्यारे जगत उजारे ॥ कोटिक मन मथ बारो मुसिकन पर कमल नयन अंखियन के तारे ॥ संग ग्वाल बछरा सब लैकैं यमुना तीर बन जाउ सवारे ॥ परमानंद कहत नंद रानी दूराजिन जाओ मेरे ब्रज रखवारे ॥

उठे नंद लालसुनतजननी मुख बानी ॥ आलस भरेनैन उठे शोभा की खानी ॥ गोपी जन थकित हिये चितवत सब ठाडी ॥ नैनको चकोर

चन्द बदन प्रीति बाढी ॥ माता जल झारी लिये कमल मुख पखारेउ ॥ नींरही कोपरस करत आलस बिसारेउ॥सखा द्वार ठाडे सब टेरत हैंतुमकूं॥ यमुना तट चलो श्याम चारन गोधनकूं ॥ सखन सहित जेंवहु भल भोजन कछु कीनों ॥ सूर श्याम हलधर संग सखा बोल लीनों ॥

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई ॥ उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर घटो खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे अनंद कंद किरनचन्द मन्दमन्द प्रगट्यो अकाश भानु कमलन सुखदाई॥सिंगी सब पुरितवेणु तुमबिन न छूटे धेनु उठो लालतजो सेज सुन्दर बरराई॥मुख ते पट दूर कियो यशुदाको दरसदियो माखनद धि सद मांग लियो बिबिध बिध मिठाई ॥ जेंमत दोउ राम श्याम सकलमंगल गुणनिधाम थारमें कछु जूंठ रही सो मान दास पाई ॥

जागो बंसी वारे ललना जागो मेरे प्यारे ॥ रजनी बीती भोर भयोहै घर घर खुले किंवारे । गोपी दधी मथन सुनियतहै कंगनाके झनकारे ॥ उठो। लालजी भोर भयो है सुरनर ठाडेद्वारे ॥ ग्वाल बाल सब करत कुलाहल जय जय शब्द उचारे॥ माखन रोटी हाथ में लीनी गौवनके रखवारे ॥ मी

राके प्रभु गिरधर नागर शरण आया को तारे ॥

राग—रामकली ।

मोहन जागहो बलि गई ॥ ग्वाल बाल सब द्वार ठाडे देर बनको भई ॥ पीत पटकर दूरमुखतें छांडदे अलसई ॥ अति अनंदित होतयशुमतिदेख द्युति नित नई ॥ जगे जंगम जीव पशुखग और ब्रज सबई ॥ सूरके प्रभु दरश दीजे अरुण किरणभई ॥

राग—रामकली चर्चरी ।

जयति अभीर नागरी प्राणनाथे ॥ जयतिब्रजराज भूषण यशोमति ललित देत नवनीत मिश्रीसुहाथे ॥ जयति पातपर भात दधिखात श्रीदामसंग अखिल गोधनवृन्द चरैं साथैं ॥ ठौररमणीक वृन्द बिपिन सुभग सुन्दरथल केलि गूढ गुण गाथे ॥ जयति तरणिजा तटनिकट रास मंडल रच्यो तताथे ॥ थेई ततता थेई चतुभुज दास प्रभु गिरधरन बहुर अब श्री विठ्ठल प्रगट कियो सनाथे॥

राग—रामकली ।

माखन तनक देरी माय ॥ तनक कर पर तनक रोटी मांगत चरण चलाय ॥ कनक भुवि पर तनक रेखा करन पकरयो धाय॥मेरे मनके तनक मोहन लाग्यो मोहिबलाय ॥ तनक मुखपर तनक बतियां बोलत है तुतराय ॥ यसोमतिके प्राण जी

बनधन लियो उरलिपटाय ॥ कंप्योगिर अरुशेष कांप्यो दधि हेत अति अकुलाय ॥ नंदकुमर गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥

राग-विभास ।

जागिये ब्रजराज कुमर कमल कोश फूले ॥ कुमुदिनि मुख सकुचरही भृंग लताझूले ॥ तमचर खग सोर सुनि ये बोलत बन राई ॥ रांभत गो मधुरराग बछरा हित धाई ॥ विधु मलीन रवि प्रकाश गावत ब्रजनारी ॥ सूर श्री गुपाल उठ परम मंगल कारी ॥

प्रात भयो कृष्ण राजीवलोचन ॥ संग सखा ठाडे गोमोचन ॥ विकसत कमल रटत अलसैनी ॥ उठो गुपाल गुहौं तेरी बैनी ॥ खीर खांड घृत भोजन कीजे ॥ सद्य दूध धौरी को पीजै ॥ सुत हित जान जगावै नन्दरानी ॥ परमानन्द प्रभु सब सुखदानी ॥

राग--रामकली ।

भोर भयो जागो नंद नंद ॥ संग सखा ठाडे जग वंद ॥ सुरभिन पय हित बच्छ पिवाये पक्षी यूथ दशों दिश धाये ॥ मुनि सरिता तमचर सुरहारेउ ॥ सिथिल धनुष रतिपति गहि डारेउ ॥ निशा गई रवि रथ हांचे राजी ॥ चन्द्र मलिन

चकवी रति साजी ॥ कुमुदिनि-सकुची बारिफु जले ॥ गुंजत फिरत अलीगण दूले ॥ दर्शन देउ मुदित नर नारी ॥ सूरदास प्रभुदेव मुरारी ॥

राग विभास ।

जागो कृष्ण यशोदा बोलै यह अवसर कोऊ सो वैहो ॥ गावत गुण गोपाल ग्वालिनी हरषित दही बिलोवैहो ॥ गोदोहन धुनि पूर रही ब्रजगोपी दीप संजोवै हो ॥ सुरभी हूक बछरवा जागे अनमिष मारग जोवैहो ॥ वेणु मधुर धुनि महुवर बाजत बैंत गहै गर सेलीहो ॥ अपन अपनि सब गाय दुहत हैं तुमारी गाय अकेली हो ॥ जागो कृष्ण जगत के जीवन अरुण नयन मुख सोहेहो ॥ गोविंद प्रभुजी दुहत है धौरी गोप बधू मन मोहेहो ॥

गोवरधन गिरधारीनें कहाँ रैनि निवास कियो पियाप्यारी ॥ उठि चले भोर सुरत रस भीने नन्द नंदन वृष मान दुलारी ॥ उत बिगलित कच माल मरगजी अट पट भूषण मरगजी सारी ॥ इतहि अधर मसि पाग रही धसि दुहु दिश छवि लागत अति भारी ॥ घूमत आवत रति रण जीते करनी संग गज वर गिरधारी ॥ चतुरभुज दास निरख मुख दम्पति सुख तन मन धन कीनों बलिहारी ॥

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतको परम पुनीति विमल यश गाऊं ॥ अम्बुज बदन सुभग नैना अति श्रवणनलै हिरदे बैठाऊं ॥ जबजब निकट रहत चरणन तर पुनिपुनि निरख निरख सुखपाऊं ॥ विष्णु दास प्रभु करो कृपा मोहि वल्लभनंदन दासकहाऊं॥

बिशद सुयश श्रीवल्लभ सुतको परम पुनीत विमल यश गाऊं ॥ कलिमलि हरण चित्त धर राखूं उपजे पर सुख दुःख बहाऊं ॥ भक्ती भमर भक्तरसजाने मानेमनसो तिनहुं को छाऊं ॥ छीति स्वामि गिरिधरके सुमरण अष्टमहा सिधि नवनिधि पाऊं॥

प्रातहि लीजे श्रीबल्लभ नाम श्री विठ्ठल श्री गिरिधर गोविंद श्री बालकृष्ण सुख धाम ॥ श्री गोकुल नाथ अनाथ के तारन श्री रघुनाथ परिपूरणकाम ॥ विष्णु दास सुमरौ प्रभु निस दिन तन सुन्दर घनश्याम ॥

राग ललित ।

जागहु जागहु हो गोपाल ॥ नाहिंनअति सो इय तुहै प्रात परम शुचिकाल ॥ फिरफिरजात निरख मुखछिनछिन सब गोपनके बाल ॥ विन बिकसे मानोकमल कोषते ते मधुकरकी माल ॥ जो तुम मोय पत्याउन सूरप्रभु सुन्दर श्याम तमाल ॥ तो उठिये आपुन अवलोकियत निद्रानयनविशाल ॥

प्रात समय आवत हरि राजत ॥ इन्द्र जटित कुंडल सखि श्रवणन ताकी किरण सूरतन लाजत ॥ सतई रास मेली द्वादसमें ता भूषण अवलंकृत साजत ॥ पृथ्वी दुहित तात ताके हित मुख समीप मधुरी धुनि बाजत ॥ सूरदास प्रभु सुनहु मूढहों भगतन वस अभगतते भाजत ॥

राग-देवगंधार।

आज अति राजत दम्पति भोर ॥ सुरत रंगके रसमें भींने नागरि नन्द किशोर ॥ अंशन परभुज दिये विलोकत इन्द्र बदन विव ओर ॥ करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥ छूटी लटन लालमन करष्यो ये बांके चित चोर॥ परिरंभन चुम्बन आलिंगन सुर मन्दिर कलघोर॥ पग डगमगत चलत बन बिहरत नव निकुंज घन घोर॥ हित हरिवंशलाल ललना मिल हीयो सिरवत मोर ॥

राग बिलावल।

जागोहो तुम नन्द कुमार ॥ बलिबलि जाऊं मुखारबिंदकी गोसुत मेलो खिरख मँझार ॥ आज कहा सोवत त्रिभुवनपति और बार तुम उठत सवार ॥ बारंबार जगावतमाता। कमल नयन भयो भवन उजार ॥ दधि मथिहों माखनतुहि देहों संग सखा ठाडे सिंह द्वार ॥ उठि क्योंनतुममोहिबदन दिखावहु सूरदासके प्राण अधार ॥

जागिये गोपाल लाल ग्वाल द्वार ठाडे ॥ रैनि अंधकार गयो चन्द्रमा मलीन भयो नारायण देखियत नहिं तरनि किरनि बाढे ॥ मुकुलित भये कमल जाल गुंज करत भृंग भान प्रफुलित बन पुहुप जाल कुमदिन कुह्मलानी ॥ गंधर्व गुण गान करत मान दान नेम धरत हरत सकल पाप वदत विप्र वेद बानी ॥ बोलत नंद बार बार मुख देखें तव कुमार गायन भई बडी बार वृन्दावन जाइबो ॥ जननी कहत उठो श्याम जातन रजानि जान सूरदास प्रभु कृपाल तुमको कछु खाइबो ॥

जागहु लाल ग्वाल सब टेरत ॥ कबहु पीतांबर डार बदन पर कबहु उघार जननि तन हेरत ॥ सोवतमें जागत मन मोहन बात कहत सबकी अब डेरत ॥ बारंबार जगावत माता लोचन खोल पलक पुनि गेरत ॥ पुनि कहि उठी यशोदा मैया उठहु कान्ह रवि किरण उजेरत ॥ सूरश्याम हरि चितय मात मुख पट कर ले पुनि पुनि दृग फेरत ॥

इति

श्रीराधाकृष्णायनमः ॥

अथ दधिमथन के पद लिख्यते।

राग—बिलावल।

प्रात समय दधि मथत यशोदा प्रमुदित कमल

नयन गुण गावत ॥ अतिही मधुर गति कंठ सुघर अति नंद सुवन के चितहि बढावत ॥ नील बसन तन सलिल सजल मन दामिन बिच भुज दंड चलावत॥चंद नंदनि लट लटक छबीली मनहु अमृत रस राहु चुरावत॥ गोरस मथत नाद एक उपजत किंकिण सुनि मुनि श्रवण रमावत ॥ सूर श्याम अचरा गहि ठाडे काम कसोटी कस दिखरावत ॥

नन्द जू के बार कान्ह छाड दे मथनियां ॥ बार बार कहत मात यशुमति रनियां ॥ नेंक रहो माखन देहों मेरे प्राण धनियां ॥ आर जिन करो बलि गई हों न्योछनियां ॥ सुरनर मुनि जाको ध्यावें मुनि जनियां ॥ सूरश्याम देव,सब भूलीं गोप धनियां

नेंक रहो माखन दऊं तुमको ॥ ठाडी मथत जननि दधि आतुर लवनी नंद सुवन को ॥ मैं बलि जाऊं श्याम घन सुन्दर भूख लगी तुमें भारी ॥ बात कहूं की बूझत श्यामहि फेर करत महतारी ॥ कहत बात हरि कछु न समझत झूंठहि करत हुंकारी ॥ सूरदास प्रभु के गुण तुरतहिं बिसर गई नंदरानी ॥

दधि मथत ग्वाल गरबीली ॥ रुनक झुनक कर कंकण बाजे बाहु डुलावत ढीली ॥ कृष्ण देव दधि माखन मांगत नाहिन देत हठीली ॥ भरी गुमान बिलोवन लागी अपने रंग रंगीली ॥ हँस बोल्यो

नन्दलाल लाडिले कछु एक बात कहीली ॥ परमानन्द नन्द नन्दन सुत सरबस दियोहै छबीली ॥

दधि मथन करै नन्द रानी हो ॥ बारे कन्हैया अर नहीं कीजे ॥ छांड न देऊ मथानी हो ॥ वारों मेरे मोहन कर पिरायगो कौन चित्त में ठानी हो ॥ हरि मुसक्याय जननि तन हेरत सुध सागर की आनी हो ॥ जो गुण सुर श्रुति छन्दन गाये नेति नेति मधु बानी हो ॥ परमानन्द यशोदा रानी सुत सुनेह लपटानी हो ॥

राग—ललित ।

आज सखीरी प्रात समय दधि मथन उठी अकुलाई ॥ भर भाजन मणि खम्भ निकट धर नेति लियो कर जाई॥सुनत शब्द हरि ता समीप हँस उठि आये हरिषाई ॥ मोही बाल बिनोद मोद अति नयनन निरत दिखाई ॥ भोरी मन प्रतिबिंब बिलोकत रीझी सहज सुमाई ॥ चितबन चलन हरेउ मन चंचल चितय रही चितलाई ॥ माखन पिंड लियो दोऊ कर तब ग्वालिरही मुसकाई॥ सूर दास प्रभु सबंस को सुख सकै न हृदय समाई ॥

इति ।

अथ बाललीलाके पद लिख्यते

राग--बिलावल ।

भावत हरि बाल विनोद ॥ केशव राम निरख मुख बिहँसत प्रमुदित रोहिणी मात यशोद ॥ आंगन पंक राग तन शोभित चलि नूपुर धुनि सुनि मन मोद ॥ परम सनेह बढातन मानत रमक रमक बैठत उठगोद ॥ अतिशय चपल सदा सुख दायक निशिदिन रहत केलिरस ओद ॥परमानंदप्रभु अंबुज लोचन फिर फिर चितवत ब्रजजन मोद ॥

बाल लीला गोपाल की सब काहू भावै ॥ जाके भवन में जातहैं लै गोद खिलावै ॥ श्यामसुन्दर मुख निरखके अविरल शुचि पावैं ॥ लाल बाल कहि गोपिका हँसभलो मनावै ॥ चुटकी दैदै प्रेम मगन कर ताल बजावे ॥ परमानंद प्रभु नांचहीं शिशु ताथ छिनावै ॥

बाल विनोद गोपाल के देखत मोंहि भावें ॥ प्रेम पुलिक आनंदभर यशुमति गुण गावै ॥ बलि समेत घनश्याम सामरो आंगन में धावै ॥ बदन चूम गोदालियो सुत जान खिलावै ॥ शिव बिरंच मुनिदेवता जाको पार न पावै ॥ सोपरमानन्द ग्वालिनी हँस हँस भलो मनावै ॥

हरिको बिमल यश गावत गोपांगना ॥ मणि मय आंगन नंद राय के बाल गोपाल तहां करें रिंगना ॥ गिरगिरउठत घुटुरुअन टेकत जानि पानि मेरो छगन को मंगना ॥ धूसर धूर उठाय गोदलै मात यशोदा के प्रेम को भंजना ॥ त्रिपद भूमि नापी तब न आलस भयो अब जो कठिन देहरी को अंगना ॥ परमानन्द प्रभु भक्त वत्सल हरि रुचिर हार वर कंठ सोहै बंधना ॥

मणि मय आंगन नंदके खेलत दोऊ भैया ॥ गौर श्याम जोरी बनी बल कुमर कन्हैया ॥ नूपुर कंकण किंकनी रुनझुनझुन बाजे ॥ मोहि रहीं ब्रज सुंदरि मनसा सुत लाजे ॥ संग संग हित कारण यसुमति रोहिणी मैया ॥ चुकटी दे दे नचावहीं सुत जान कन्हैया ॥ नीलपीत पट ओढनी देखत मोहि भावै ॥ बाल लीला बिनोद सों परमानंद गावै ॥

यह तन वारि डारों कमल नयन पर सांवलिया मोहि भावैरे ॥ चरण कमल के रेणु यशोदा लैलै सिरस चढावैरे ॥ लै उछंग मुख निरखन लागीं राई लोंण उतारारे ॥ कौन निरासी दृष्ट लगाई लै लै अंचर झारारे ॥ तू मेरो बालक तू मेरो ठाकुर तोहि बिश्वंभर राखारे ॥ परमानन्द स्वामी चिरजीवहु बार बार यों भाखारे ॥

बाल विनोद आंगनमें की डोलनि ॥ माणिमय भू-
मिसुभग नन्दालय बलि बलि गई तोतरी बोलन
कठुला रुचिर केहरि नख बज्र माल लई नंद अमो
लनि ॥ बदन सरोज तिलक गोरोचन लट लट-
कन मधुप गण डोलन ॥ लोन्यों कर परसत आनन
पर कछुक खात कछू लगो कपोलन ॥ कहैजन सूर
कहांलों बरणों धन्य नन्दजी बन जग तोलन ॥

शोभित कर नवनीत लियो ॥ घुटरुन चलत
रेणु तन मंडित मुख दधि लेप कियो ॥ चार क-
पोल लोल लोचन छवि गोरोचन को तिलक दियो
लट लटकन मानों मत्त मधुप गण मोदक मधुहि
पियो ॥ कठुला कंठ बज्र केहरि नख राजत रुचिर
हियो ॥ धन्य सूर एको पल यह सुख कासत
कल्प जियो ॥

बाल बिनोद देखरे जिय भावत ॥ मख प्रतिबिंब
पकरबे कारण हुलस घुटुरुवन धावत ॥ कमल न-
यन माखनके कारण कर कर सैन बतावत ॥
शब्द जोर बोल्यो चाहत हरि प्रगट बचन नाहिं
आवत ॥ अनेक ब्रह्मांड खंडकी महिमा शिशुता
माहिं दुरावत ॥ सूरदासस्वामी सुख सागर यशु
मति प्रीति बढावत ॥

नन्द धाम खेलत हरि डोलत ॥ यशु मति क-

रति रसोई भीतर आपुन किलकत बोलत ॥ टेर उठी यशुमति मोहन कों आवहु घुंटरुन धाई ॥ बैन सुनत माता पहिचानी चले घटुरुअन धाई ॥ लै उठाय अंचल अंग पोंछत धूर भरी सब देह ॥ सूर प्रभू यशुमति रज झारत कहां बिगारी देह ॥

धन यशुमति बड भागनी लिये कान्ह खिलावै ॥ तनक तनक भुज पकर के ठाडे होंन सिखावै॥लरखरात गिर परत हैं चले घुटरुवन धावें ॥ पुनि पुनि क्रम भुज टेक कें पग द्वैक चलावें ॥ अपने पायन कब चलो मोदेखत धावें ॥ सूरदास यशुमति यह बिध सों जु मनावें ॥

चलन चहत पायन गोपाल ॥ ले लगाय अंगुरिन नन्दरानी मोहिनी मूरत श्याम तमाल ॥ डग मगात गिर परत पाणिपर भुज भाजत नंद लाल॥जन श्रीधर श्री धरत अधो मुख धुकत धरणि मानहु नाभि नाल ॥ धूर धौत तन नैनन अंजन चलत अटपटी चाल ॥ चरण रुणित नूपुर धुनि मनोहर बिहरत हैं बाल मराल॥लट लटकन मानों चार चखोडा शशि शोभा शुभ भाल ॥ सुरदास एसो मुख निरखत जो जीवें जगमे बहुकाल ॥

गहे उंगरिया सुवन की नन्द चलन सिखावत ॥ अबडराय गिर परत है कर नेंक उचावत ॥

बार बार बकि श्याम सों कछु बोल बुलावत ॥ दु
हुधां द्वै दतियां भई अति छबि मुख पावत ॥ कबहूं
कबहुं कबहुं कर पकरें नन्द फिरावत ॥ कबहुं ध-
रिणि पर बैठ जात मनमें कछु आवत ॥ कबहुंगो
दले हरषके जियमें बहुभावत ॥

सिखवत चलन यशोदा मैया ॥ अरबराय कर
पाण गहाबत डगमगाय धरणीधर पैयां ॥ कबहुंक
सुन्दर बदन बिलोकत उर अनन्द भर लेत बलै-
यां ॥ कबहुक कुल देवता मनावत चिरजीवहु मेरो
लाल कन्हैया ॥ कबहू बल को टेर बुलावत यह
अंगना खेलो दोऊ भैया ॥ सूरदास स्वामी सुख
सागर अति प्रताप कलकत नन्दरैया ॥

भावत हरि के बाल बिनोद ॥ श्याम राम मुख
निरख निरख सुख प्रमुदिति रोहणी जननि य-
शोद ॥ अंगन पंक परस तन मंडित चलतकुणित
नूपुर मन मोद ॥ परमसनेह बढावति नारिन निर्वि-
कार बैठत चढ गोद ॥ आनन्द कंद सकल सुख
दायक निशदिन रहत केलिरस ओद ॥ सूरदास
प्रभु अंबुज लोचन फिरफिर चितवतजननी कोद ।

इति ।

अथ शृंगारके पद लिख्यते ॥

राग—बिलावल।

आउ गोपाल सिंगार बनाऊं ॥ अति सुगंधको करो उबटनो उष्णोदक अन्हवाऊं ॥ अंग अँगोछ गुहों तेरी बैनी फूलन रुचि रुचि भाल बनाऊं ॥ सुरंग लाल जर तारी चीरा रतन रचित सिर पेच बनाऊं ॥ बागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण बिरचाऊं ॥ पटुका सरस बेजनी रंगको हँसली हेम हमेल धराऊं ॥ गज मोतिन केहार मनोहर बनमाला ले उर पहिराऊं ॥ लैदर्पन देखो मेरे बारे निरख निरख उर नयन सिराऊं ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई अपने करले तुह्मे जिमाऊं ॥ विष्णुदासको यहै कृपा फल बाल चरित हों निशदिन गाऊं ॥

पीताम्बर को चोलना पहिरावत मैया ॥ कनक छाप तापर दियो झीनी एकतैया ॥ सूथन लाल चुनावकी जरकसीचीरा ॥ हँसली हेम जडावकी उर राजत हीरा ॥ ठाडी निरखेमाय यशोमति फूली अंग न समाय ॥ काजर लै बिंदुका दियो ब्रजजन मुसकाय ॥ नंद बबा मुरली दई इकतान बजावै ॥ जोई सुनें ताको मन हरे परमानन्द गावै ॥

आज सिंगार निरख श्याम को नीको बन्यो

श्याम मन भावत ॥ यह छबि तनहि लखायो चाहत कर गहिके नखचंद दिखावत ॥ मुख जोरें प्रतिबिंब दिखावत निरखनिरख मनमें मुसिकावत ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरधर श्री राधा अरस परस दोऊ रीझ रिझावत ॥

जब नंद लाल नयन भर देखे ॥ इकटक रही समारन तनको सुंदर मूरत पेखे ॥ श्यामबरण पीतांबर काछे और चंदन की खोर ॥ कटि किंकिणि कलराव मनोहर सकल तियन के चितके चोर ॥ कुंडल झलक परत गंडन पर आय अचानक निकसे भोर ॥ श्रीमुख कमल मंद मृदु मुसकन लेत कराषि मन नंद किशोर ॥ मुक्तमाल राजत उर ऊपर चितये सखी जबइहिं ओर ॥ परमानन्द निरख अंग शोभा ब्रज बनिता डारत तृण तोर ॥

इन नेंननसों मानीहार ॥ अनु दिनही उपरांति आन रुचिबाढी सब लोगनसोंरार ॥ तदपि निडर चालि जात चपल दोउ घूँघट बसन कपाट उघार ॥ निगम ज्ञान प्रतिहार महाबल लाज लकुट कर रहत निबार ॥ श्रीगोपाल कौतुक मन अर्पी तबतें चतुरन भई चिन्हार ॥ सूरदास लोभनके लीने सिर पर सही जगत की गार ॥

इति

अथ रागभोगके पद

भोजन भयो भावते मोहन ॥ तातोई जेंय जायगे गोहन ॥ खीर खांड खीचरी समारी ॥ मधुर महेरी गोपन प्यारी ॥ राय भोग लियो मात पसाय ॥ मूंग ढरहरी हींग लगाय ॥ सद माखन तुलसी दै छायो ॥ घृत सुवास कचौरिन नायो ॥ पापर बरी अचार परम शुचि ॥ अदरक और नीबुअन ह्वै है रुचि ॥ सूरन करि तर सरस तोरई ॥ साम सागरी झमक सोरही ॥ भरता भटा खटाई दीनी ॥ भाजी भली भांति दस कीनी ॥ साग चना भस्सा चोराई ॥ सोआ और सरसों सरसाई ॥ बथुआ भली भांति रच रांध्यो ॥ हींग लगाय लाय दधि सांध्यो ॥ पोई परवल साग फरी चुनि॥ टेंटी ढेंडस छौंक लिये पुनि ॥ कंदूरी और ककोरा कोरे ॥ कचरी चचेंडे और निसोरे ॥ बनेबनाय करेला कीने ॥ नोंन लगाय तुरत तल लीने ॥ फूले फूल सहजना पौंच ॥ मन रुचि होय नांघ के ओंछ ॥ फूल करील कली पाकर बस ॥ फरी अगस्त करी अमृत रस ॥ और पहीं अमली दई खटाई ॥ जेंमत कटु रस जात लटाई ॥ पेठा बहुत प्रकारन कीन्हे ॥ तिनतो सबै स्वाद हरि कीने ॥ खीरा राम तो-

रैयां तामें ॥ अरु बिन रुचि अंकुर रुचि जामें ॥
सुन्दर रूप रताल्हू रातो ॥ तर है लीनो अबही
तातो ॥ ककडी कचरा अरु कचनारे ॥ सरस नि-
मोनन स्वाद सँवारे ॥ कैयक भांति करो कर ली
नी ॥ दैकरीब हरदी रंग भीनी ॥ बरी बरिल और
बरा बहुत बिध ॥ खारे खाटे मीठे पय निध ॥ पा-
नीना रायतो पकोरी ॥ डमकोरी मुगछी मुठि
सोरी ॥ अमृत ईड रह रहे रस सागर ॥ बेसन सा-
लन अधिको नागर ॥ खाटी कढी बिचित्र बनाई ॥
बहुत बार जेंमत रुचि आई ॥ रोटी रुचिर कनक
बेसन कर ॥ अजबायन सेंधा मिलियो धर ॥ अब
हि अँगाकरी तुरत बनाई ॥ जे भाजि भजि ग्वालन
संग खाई ॥ भांडो भांड दुतेरो चुपरो ॥ बहु घृत
पाय आय ही अपरो ॥ पूर सपूर कचोरी कोई ॥
सदल सउज्जल सुन्दर सोई ॥ लुचई ललित लाप-
सी सोहै ॥ स्वाद सुवास सहज मन मोहै ॥ माल
पुआ माखन मथ कीने ॥ ग्राह ग्रसित रवि सामर
लीने ॥ लावन लड्डू लागत नीके ॥ सेव सुहारी
घेवर घीके ॥ गूंजा गूंदे लाग मसूरी ॥ मेवा मिले क-
पूरन पूरी ॥ खासि सम सुन्दर सजल अंदरसी ॥ ऊपर
कनी अंजन जनु बरसी ॥ बहुत जलेब जलेबी बोरी ॥
नाहिन घटत सुधा ते थोरी ॥ देखत हरषत होतहैं

सभी ॥ मनहु बुद बुदा उपजे अमी ॥ फैनी मिली भरी पय संगा ॥ मिश्री मिश्रित मई यक रंगा ॥ साजो दही अधिक सुख दाई ॥ ताऊपर पुनि मधुर मलाई ॥ खोवा खोई अवटि है राखे ॥ मुहै घुर मीठो रस चाखे ॥ बासोंधी सिखरन अति सोंधी ॥ मिलै मिर्च मेटत चक चोंधी ॥ छाछ छबीलीं धबी धुंगारी ॥ झर है उठत झार की न्यारी ॥ इतने यतन यशोदा कीने ॥ तब मोहन बालक संग लीने ॥ बैठे आय हँसत दोउ भैया ॥ प्रेम प्रमुदित परसत है मैया ॥ थार कटोरा रतन जटितके ॥ भर सागन के धरे घटित से ॥ पहिले पनवारो परसायो ॥ तब आपुन कर कौर उठायो ॥ जेंमत रुचि अधिको अधिकैया ॥ भोजनबहु बिसरत नहिं गैया । सीतल जल कपूर रस रचियो ॥ सो मोहन निज कर रुचि अचियो ॥ महर मुदित मन लाड लडावै ॥ तेसुख कहां देवकी पावै ॥ धर तिष्टी गड़आ जल लाई ॥ भरेउ चुरू खरिका लै आई ॥ पीरे पान पुराने बीरा । खात भई द्युति दांतन हीरा ॥ मृगमद कनक कपूर कर लीनों ॥ बांट बांट ग्वालन को दीनों ॥ चन्दन और अरगजा आन्यो ॥ अपने कर बलके अंग बान्यो ॥ ता पाछे आपुनहू लायो ॥ उबरेउ बहुत

सखन पुनि पायो ॥ सूरदास देखो गिरधारी ॥ बोल दई हँस झूंठन थारी ॥ यह जिवनारि सुन जो गावै ॥ सो निज भक्त अभय पद पावै ॥

राग बिलावल।

भोजन करहु कहत महतारी ॥ सामिग्री सब भई तयारी ॥ रोटी पूरी लुचई प्यारी ॥ सोमैं निज कर आप समारी कनक कचौरी मठरी गूंजा ॥ इनते सरस स्वाद नहिं दूजा ॥ करे सुहार सुहारी फैनी ॥ कर त्रिकोण अति दीये मसाले ॥ घेवर सरस इंदरसे आले ॥ मोहन भोग करयो अतिनी को ॥ तामस और स्वाद सब फीको ॥ मोमन थार बेसनी लडुआ ॥ मोती चूर मगद के लडुआ ॥ बरफी पेडा खुरचन प्यारी ॥ बासोंदी खडी कर त्यारी ॥ करी इमरती अती रस बारी ॥ सुघड जलेबी आपहि करी ॥ खुरमा पाग खांड में लीने ॥ आपरोहिणीहरी हित कीने ॥ मीठे दही रायतो सान्यो ॥ नुकती बथुआ को मन मान्यो ॥ साक अनेक किये मुनि प्यारे॥ घीया बेंगन सरस संवारे ॥ आलू जिमी कंद रुचि राध्यो ॥ मठा गेर सेंधौ पुनि साध्यो ॥ अरबी भिंडी सुआ पालक ॥ मेथी मूरी सबते आलक ॥ ककडी और करेला कीने ॥ सुन्दर छौंक मसाले दीने ॥ काशी

फल तुमको अति प्यारो । कचरा साग करायो न्यारो ॥ दार भात और कढी समारी ॥ सुन्दर सरस पकोरी डारी । बड़ी मगोरी खीर बनाई ॥ मिश्री मेवा अधिक मिलाई ॥ चीला बडे मठा में भींजै ॥ जिनें देख तुम नित प्रति रीझैं ॥ माखन मिसरी भरी कटोरी ॥ सोमें धरी तुमारे धोरी ॥ सुनत वचन आये दोऊ भैया ॥ चरण पखारत यशुमति मैया । भोजन करन बैठि दोऊ भाई ॥ थार संजोय रोहिणी लाई ॥ पुनि रुचि सों हरि भोजन कीनों ॥ अतिहर्षाय मात सुख दीनों ॥ भोजन कर पुनि अचमन कीनो ॥ जननी बीरा निज कर दीनों ॥ यह जिवनार गाय हरषाई ॥ रंगीलाल हरि भक्ति पाई ॥

इति ।

अथ फुटकर पद लिख्यते ।

ठुमरी ।

कान्हा तेरो निपट अजानरी ॥ हमको तलफत छोड सामरो कुबिजा संग भुलानरी ॥ कैसी करों जिय मानत नाहीं ये ऊधो बिन श्यामरी ॥ हमको जोग भोग कुबिजा को ऐसो अनरथ जानरी ॥ मानसिंह यह आवत जीमें ताजिदें अपने प्रानरी ॥

बसी हिय पिय की मधुर मुसकान ॥ बाला बारी

मनमें बसत है कुण्डल झलकत कान ॥ जुलफें तेरी कपोलन परसें नागिन छोंना जान ॥ दन्दा दामिन से दमकत ऊंचे उरज उठान ॥ कोटन रती रती बिन डोलत निरखत रूप अमान ॥

ठुमरी—जिलेमे ।

कुंजन सघन के बीच देखो सामरा खडा ॥ कहा हसीन तीन बलोंसे अडा खडा ॥ सज धज है निराली अरी आली में क्या कहूं ॥ ऐसी अदापै क्यों न फिदा होय दिलकडा ॥ होतीहै हूक फूक में आफत कोहै सदा ॥ हो टूक टूक दिलके अजव गजब हैं बडा ॥ ॥ पक्षी भी चूक २ मस्त हैं भोंरे ॥ हर फूंक में आता है गो खुशबू केवडा ॥ बंसी अजब अदासे हाथोमें है लिये ॥ बांकी है झांकी नाथकी इस बुत पै दिल अडा ॥

ठुमरी ।

या नागरिया की नैन कोर जिय माहिं करक गईरे ॥ रतनारे कारे कजरारे अनियारे हठियारे मतवारे नयना लखि अखियां फरकि गईरे ॥ अंजन बिन मन रंजन जीके खंजन मीन लगत दृग फीके ॥ कंजन में कज आन परे फब सब की सरकि गईरे ॥ गरबीले अति कुटिल कटीले नरमीले चित चोर रसीले कसकत हैं दिन रैनि

चोट मोरे हिये खिसक गईरे ॥ कीनों कछू जादू नैनन में मारो बान तान सैनन में परत नहीं मोय चैन मैनकी फौज अरकि गईरे ॥

ठुमरी सोरठा।

आज नागर नट अटकोरी ॥ मोहि देख अकेली डगर बीच ॥ मैं जमुना जल भरन चलीरी ॥ अचौक घेरी कुंज गलीरी ॥ लचक मचक भृकुटी नचाय मम सनमुख मटकोरी ॥ केसर रंग सीसते डारो दखिनी चीर अमोलक फारो ॥ कुचन उचिक कंचुकी मसकी सिर गागर पटकोरी ॥ नेंक नहीं मनमें सकुचावे नितनये बृजमें ढंग मचावे ॥ रंगी लाल चित चोर श्याम कुंजन में सट कोरी ॥

ठुमरी।

अलके झलके लहराय रही विष धारी कारी नागनियां ॥ ललकें हलकें मलकें मुख पर दोऊ चतुर चपल बड भागिनियां ॥ जो आन बसी तेहि जान डसी कोई नाय नसी यह पापिनियां रुख चूम चूम झुक झूम २ मन कीन हमारो तापनियां ॥

ठुमरी राग–पीलू

बजादे कान्हा तनक बंशी एक बार ॥ तेरी मुरलिया अजब सुरलिया धुनि सुनि तन मन वार ॥ मधु भरी तान तोरी बंशी की भई करेजवा

पार॥ जबसों परी श्रवण धुनि मुरली जियसों गयो करार॥ रंगीलाल मन हरे हमारे हरे बांसकी डार॥

ठुमरी।

सलोने सैयां मानों हमारी बातरे॥ हम तलफत निज भवन सेज पर तुम कहुं चैन मनातरे॥ आओ पियरवा गरवा लग जावो सीतल हो मम गातरे॥ हाहाखात तोरै पैयां परत हों क्यों मोकों तरसातरे॥ रंगीलाल चलि कुंज भवन में हँसि हँसि काटो रातरे॥

ठुमरी-सोरठ।

आज बदरवा गरजेरी॥ सुनत कडक मेरो जियरा डरपत उमड घुमड आये बदरा कारे बनमें बैरी मोर पुकारे॥ लख चपलाकी चमक मोर अति जियरा लरजेरी॥ दादुर सोर करत मतवारे ठौर ठौर झींगर झनकारे॥ करत पपीहा पीउ पीउ कोऊ नहीं बरजेरी॥ रात सखी मोहि नींद न आई॥ तडफ तडफ सारी रात गमाई॥ रंगीलाल तुम बिन मन मोहन काम न सरजेरी॥

ठुमरी-तिताला।

सामलिया लेगयो चितको चोर॥ मन्द हसन मुसक्यान दशन की मन हर लीनों मोर॥ मधु भरी तान मधुर मुरली की धसी करेजा फोर॥

रंगीलाल छबि बसी हृदय में दृग कजरारी कोर ॥

ठुमरी।

सामलिया मन हरलीनों मोर ॥ तडफ तडफ निश नींद न आवै लैगयो चितको चोर ॥ बांकी छबि मुसक्यान माधुरी मार गयो दृग कोर ॥ रंगीलाल क्यों कल पै बिन देखे नन्दकिशोर ॥

आज पिया क्या क्या मनमें बसीहै ॥ हमसों खट पट करत रैन दिन क्या कहि तबियत अंत फसी है ॥ हमसों कपट प्रीत औरन सों इन बातन में लोग हंसी है ॥ रंगीलाल छबि श्याम तुम्हारैन दिना उर मांहि बसी है ॥

दोहा।

रंगीलाल भवसिंधुमें कृष्ण नाम अधार।
निशिदिन राधाकृष्णरट जोचाहत भवपार ॥
रंगीलाल वृन्दा विपिन डारपात फलफूल।
बिहरैं श्यामाश्याम दोउ कालिन्दीके कूल ॥
वहछबि वहशोभा निरख निरख रूपकी रास।
प्यारे रंगीलाल तुम देहु दृगन आश्वास ॥

इति श्री ब्रजबिहार समाप्तम् ॥

मथुरा पुनीत जन्म भूमि नंद नंदन की मन्दिर समीप द्वारकेश को सुहायौ है ॥
यमुना के किनारे पै नयो है बजार शुभ जानत जहान ताहि रंगीलाल गायौ है ॥
ताही में वास करें श्यामलाल अग्रवाल ग्रन्थन के छापने को उद्यम सवायौ है ॥
श्यामकाशी यन्त्र विख्यात सभी मुलकन में ताही निज यन्त्रमें ग्रन्थ यह छपायो है ॥

विज्ञप्ति

श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् सुखनिधानकी बाललीला भगवद्भक्तों के लिये बड़ी आनन्ददायिनी हैं जिस समय रासधारी श्रीकृष्ण, राधा और ललितादि सखियों के वेषमें भगवान् की बाललीलाओं को करते हैं उन की वह अनुपम छटा रागरागिनियोंका गान, उनकी नृत्य और थिरकन आदिभाव दर्शकोंके चित्त पर ऐसा अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करते हैं कि, उनके प्रेमरस प्यासे नेत्र उस प्रेमामृतको पीते २ नहीं अघाते हैं। परन्तु यह सुख उन्हीं बड़भागियोंके भाग्य में है जो सांसारिक कार्यभारों को छोड़े दिनके लिये त्याग ब्रजमें मथुरा वृन्दावन गोकुल आदि स्थानों में निवास करते हैं। सब ही इस आनन्दका अनुभव नहीं कर सकते हैं यह आवश्यकता देख हमने अपने मित्र पण्डित रंगीलालजी से प्रार्थना की कि ऐसा कोई ग्रन्थ बनाओ तब उन्होंने बड़े परिश्रम से यह ग्रन्थ तयार कर इसका छापने का अधिकार हमको दिया और हमने इसकी रजिस्ट्री तारीख १४ अक्टोबर सन १८९२ ई० में ऐक्ट २५ सन १८६७ के अनुसार रजिष्टर नंबर ६०४ पर कराली।

इसपुस्तकका सज्जनोंनेऐसा आदर किया कि प्रतिवर्ष मथुरा में छपछप कर अनुमान २० सहस्र हाथों हाथ बिकगई अब बहुत से रसिकजनोंने हमसे कहा कि इसको मुंबई में छपवाओ सो उन्हीं की आज्ञानुसार हमने इसे मुंबई में छपवाया पहिले की अपेक्षा और भी कई लीला बढ़ाई वह भी हाथों हाथ बिकगई. अबकी बार इसको उससे भी उत्तम अत्यन्त शुद्धता पूर्वक मोटे चिकने कागज पर निज श्यामकाशी यन्त्रालय में छपवाया है आशा है कि सज्जन जन इसे ग्रहणकर हमारा परिश्रम सफल करेंगे.

भवदीय

श्यामलाल अग्रवाल

श्यामकाशी प्रेस

मथुरा